प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वद्गण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रम

1. **सन्धिः** – स्वर में दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूप, प्रकृति भाव तथा व्यञ्जने मोऽनुस्वारः, अनुस्वार (परसवर्ण), छत्वं, जश्त्वं, श्चुत्वं, ष्टुत्वं, चर्त्वं, तुगागमः विसर्ग सन्धिः च।
2. **शब्दरूप-प्रकरणम्** – देव, मुनि, साधु, पितृ, लता, मति, नदी, फल, अस्मद्, युष्मद्।
3. **धातुरूप-प्रकरणम्** – पठ्, गम्, नम्, चल्, खाद्, दृश्, अस्, भू, पा, हन्, घ्रा, सेव्, मुद् आदयः।
4. **समासाः** – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्विगु, द्वन्द्व, कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समासः।
5. **पर्यायाः एवम् विपर्ययाः**
6. **प्रत्ययाः** – क्त, क्तवतु, ल्यप्, क्त्वा, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्, मतुप्, णिनि, ठक्, तल्, त्व, टाप् तथा ङीप् प्रत्ययाः।
7. **अव्ययाः** – झटिति, नोचेत्, नक्तम् इत्यादयः।
8. **वाच्य-परिवर्तनम्** – कर्तृ, कर्म तथा भाव वाच्यानुसार रूपाणि।
9. **समयलेखनम्** – घटिकां दृष्ट्वा समय-लेखनम्।
10. **संख्या** – एकतः शत पर्यन्तम्, संख्यावाचिशब्दानां रूपाणि एकतः पंच पर्यन्तम्।
11. **अशुद्धिशोधनम्**
12. **पत्रलेखनम्** – (*i*) कक्षायाम् प्रथमस्थानं प्राप्तुं मित्रं प्रति वर्धापनपत्रम् (*ii*) वार्षिकोत्सवस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*iii*) शैक्षिकयात्रा हेतु धन-प्रेषणाय पितरम् प्रति (*iv*) पीडितजनानाम् सहायतार्थं गन्तुम् तत्परम् मित्रम् प्रति (*v*) स्वभगिन्याः विवाहे निमंत्रणं दातुम् मित्रं प्रति (*vi*) विद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*vii*) विद्यालयस्य क्रीडादिवसस्यवर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति (*viii*) स्वअध्ययनस्य प्रगतिम् वर्णयन् अग्रजं प्रति (*iv*) नवमीकक्षायाम् प्रवेशं प्राप्तुम् प्रधानाचार्यं प्रति (*x*) रक्तदान-शिविरे रक्तदानोपरान्तम् पितरम् प्रति।
13. **वार्त्तालापः**
14. **चित्रवर्णनम्** – मंजूषायाः सहायतया।
15. **अपठितगद्यांशाः** – 40-50 तथा 80-100 पदपरिमिताः।

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. कारक उपपदविभक्तयः च 09
2. शब्दरूप-प्रकरणम् 17
3. धातुरूप-प्रकरणम् 27
4. सन्धिः 52
5. समासाः 65
6. पर्यायाः एवम् विपर्ययाः 73
7. अव्ययाः 80
8. प्रत्ययाः 85
9. वाच्य-परिवर्तनम् 102
10. समयः 109
11. संख्या-ज्ञानम् 113
12. अशुद्धिशोधनम् 122

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

13. पत्रलेखनम् 127
14. वार्त्तालापः 133
15. चित्रवर्णनम् 137

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

16. गद्यांशाः 145
(40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः)
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-1 165
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2 169

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. **उच्चारण**

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. **लेखन**

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

खण्ड ‘क’

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

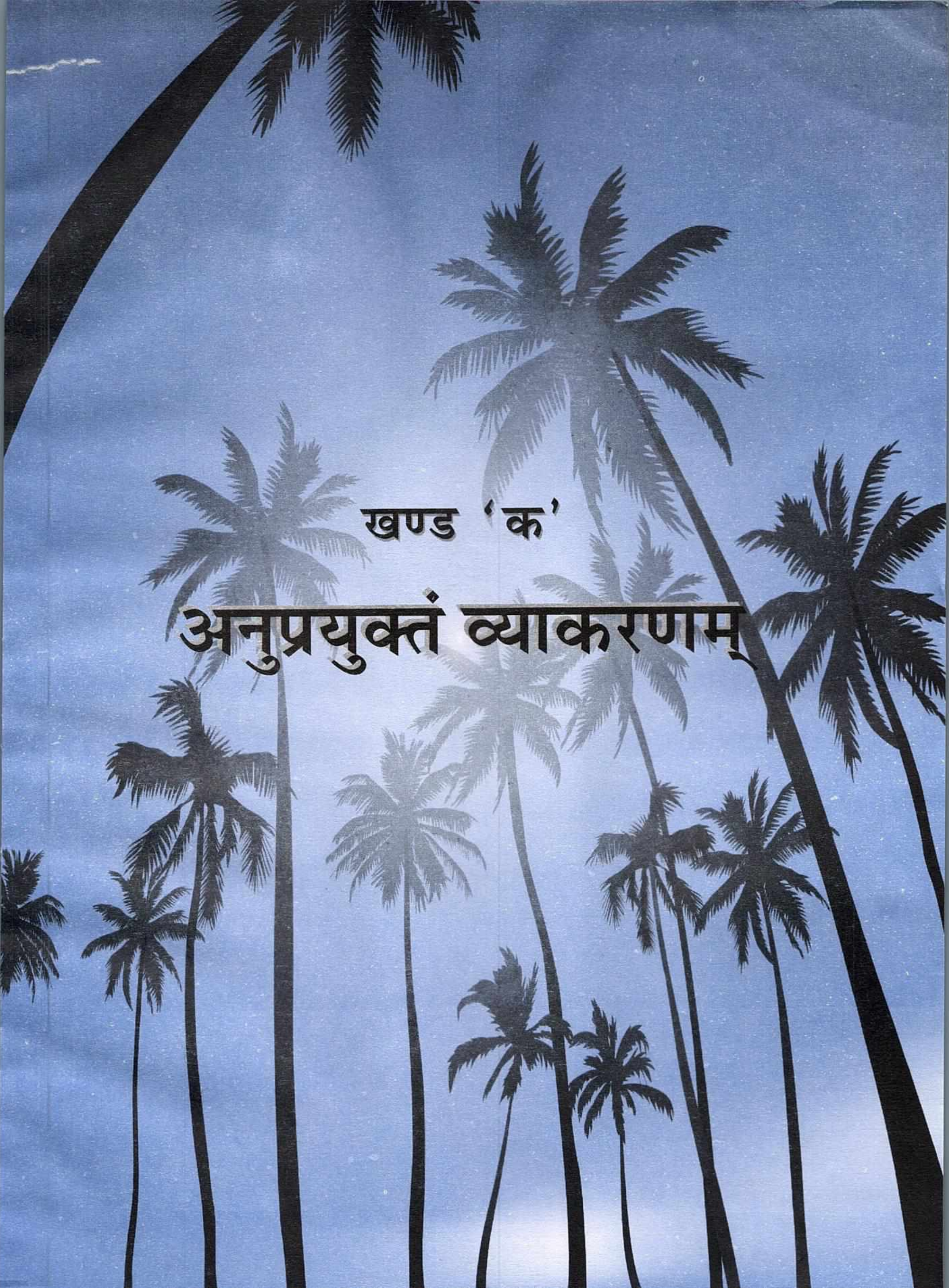

1 कारक उपपदविभक्तयः च

प्यारे बच्चो! जैसा कि पिछली कक्षाओं में हम पढ़ चुके हैं कि वाक्य में विभिन्न पद जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें कारक कहते हैं। ये आठ होते हैं–

कारक

1	2	3	4	5	6	7	8
कर्ता	कर्म	करण	सम्प्रदान	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण	संबोधन

शब्दों के साथ लगाए जाने वाले प्रत्यय ही उनकी विभक्तियाँ होती हैं। विभक्तियाँ सात होती हैं–

विभक्तयः

1	2	3	4	5	6	7
प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पंचमी	षष्ठी	सप्तमी

प्रत्येक कारक का अपना एक चिह्न होता है।

कारक	चिह्न	विभक्ति	प्रयोग
1. कर्ता	*ने (–)*	प्रथमा	मैंने किया
2. कर्म	*को (–)*	द्वितीया	उसको देखता है
3. करण	*से (के द्वारा)*	तृतीया	के द्वारा लिखा
4. सम्प्रदान	*के लिए*	चतुर्थी	के लिए देता है
5. अपादान	*से (अलग होने पर)*	पंचमी	से अलग होता है
6. सम्बन्ध	*का, के, की, रा, रे, री*	षष्ठी	तुम्हारा, मेरा
7. अधिकरण	*में, पर*	सप्तमी	मेज पर, टोकरी में
8. सम्बोधन	*हे, भो, अरे, हे*		

विभक्तियों के चिह्न तिरछे लिखे गए हैं। ये चिह्न शब्दों में लगी विभक्ति के अनुसार शब्दों के अर्थ बताते हैं। उदाहरण के लिए :

1. प्रथमा (*ने*) बालः = एक बालक ने
2. प्रथमा (*ने*) बालौ = दो बालकों ने
3. प्रथमा (*ने*) बालाः = अनेक बालकों ने
4. द्वितीया (*को*) बालम् = एक बालक को
5. द्वितीया (*को*) बालौ = दो बालकों को
6. द्वितीया (*को*) बालान् = अनेक बालकों को

इसी प्रकार सभी **पदों** के अर्थ देखिए :

रूपों के अर्थ

बाल शब्द के रूप

विभक्तियाँ	चिह्न	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ने (–)	कर्ता	बालः (एक बालक ने)	बालौ (दो बालकों ने)	बालाः (अनेक बालकों ने)
द्वितीया	को	कर्म	बालम् (एक बालक को)	बालौ (दो बालकों को)	बालान् (अनेक बालकों को)
तृतीया	से, के द्वारा	करण	बालेन (एक बालक से)	बालाभ्याम् (दो बालकों से)	बालैः (अनेक बालकों से)
चतुर्थी	के लिए	सम्प्रदान	बालाय (एक बालक के लिए)	बालाभ्याम् (दो बालकों के लिए)	बालेभ्यः (अनेक बालकों के लिए)
पंचमी	से (अलग)	अपादान	बालात् (एक बालक से)	बालाभ्याम् (दो बालकों से)	बालेभ्यः (अनेक बालकों से)
षष्ठी	का, के, की रा, रे, री	संबंध	बालस्य (एक बालक का)	बालयोः (दो बालकों का)	बालानाम् (अनेक बालकों का)
सप्तमी	में/पर	अधिकरण	बाले (एक बालक पर)	बालयोः (दो बालकों पर)	बालेषु (अनेक बालकों पर)
–	हे, भो, अरे	सम्बोधन	हे बाल! (हे एक बालक!)	हे बालौ! (हे दो बालको!)	हे बालाः! (हे अनेक बालको!)

विभक्तयः

1. कारक-विभक्तयः   2. उपपद-विभक्तयः

1. कारक-विभक्तयः–कारक विभक्तियाँ क्रियापद को ध्यान में रखकर लगाई जाती हैं; यथा–

साधना पुस्तकम् पठति।

यहाँ साधना पद पठति क्रिया का कर्ता है अतएव उसमें प्रथमा विभक्ति एवं क्रिया का फल जिस पर पड़ रहा है वह पुस्तक है, अतएव उसमें द्वितीया विभक्ति लगाई गई है।

2. उपपद-विभक्तयः–किसी विशेष पद के साथ जब सामान्य कारक विभक्ति न लगाकर अन्य विभक्ति लगाई जाती है तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं; यथा– नगरम् परितः सरणिः अस्ति।

यहाँ कारक चिह्नों के अनुसार नगर शब्द में षष्ठी विभक्ति लगनी चाहिए थी (नगर के चारों तरफ-सड़क है।) परन्तु परितः पद के योग में नगर शब्द में द्वितीया विभक्ति लगाई गई है।

अब हम इनका प्रयोग विस्तार से देखते हैं–

1. प्रथमा विभक्तिः–'कर्तरि प्रथमा'–कर्तृवाच्य में कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति लगाई जाती है; जैसे–

1. रमा पुस्तकं पठति।
2. नराः नेत्राभ्यां पश्यन्ति।
3. बालिके मञ्चे नृत्यतः।
4. त्वम् कुत्र गच्छसि?
5. सूर्यः उदेति।
6. खगाः आकाशे उड्डयन्ति।

2. द्वितीया विभक्तिः–कर्मणि द्वितीया–कर्ता के कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. भरतः शत्रुघ्नः च वनं गच्छतः।
2. छात्राः लेखं लिखन्ति।
3. चित्रकाराः चित्रं रचयन्ति।
4. कुम्भकारः कुम्भं रचयति।
5. श्रमिकः भारं वहति।
6. अध्यापिका ज्ञानं यच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति लगती है।

√गम्	= जाना	– आम्रपाली पाटलिपुत्रं गच्छति।
√नम्	= नमस्कार करना	– सः गुरुं नमति।
√नी	= ले जाना	– श्वश्रुः स्नुषां नयति।
√पच्	= पकाना	– जनकः अपि मात्रा सह भोजनं पचति।
√रक्ष्	= रक्षा करना	– सैनिकाः सीमां रक्षन्ति।
√याच्	= माँगना	– पुत्रः पितरं रुप्यकं याचति।
अधि + √शी	= लेटना	– विष्णुः बैकुण्ठम् अधिशेते।

अधि + √स्था	= ठहरना	– अद्य अतिथिः तव कक्षम् अधितिष्ठति।
√प्रच्छ्	= पूछना	– शिष्यः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
अभितः	= चारों ओर	– उद्यानम् अभितः सरणिः अस्ति।
परितः	= चारों ओर	– उद्यानम् परितः सरणिः अस्ति।
सर्वतः	= चारों ओर	– उद्यानं सर्वतः सरणिः अस्ति।
धिक्	= धिक्कार	– धिक् चौरम्।
प्रति	= ओर	– पथिकः ग्रामं प्रति गच्छति।
उभयतः	= दोनों तरफ	– मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
नाना/विना	= बिना	– परिश्रमम् विना ज्ञानम् न लभते।
समया/निकषा	= समीप	– सरोवरं निकषा/समया परिखा अस्ति।
उपसर्ग + √क्रुध्	= क्रोध करना	– जनकः पुत्रम् अभिक्रुध्यति।
उपसर्ग + √वस्	= रहना	– धनिकः भवनम् उपवसति।

3. तृतीया विभक्तिः–करणे तृतीया–कर्तृवाच्य के करणकारक में तृतीया विभक्ति लगती है; जैसे–

1. रामः रावणम् बाणेन अमारयत्।
2. अहम् द्विचक्रिकया तव गृहम् आगमिष्यामि।
3. जीवाः मुखेन वदन्ति।
4. छात्राः कलमेन लिखन्ति।
5. सः अलेन मुखं प्रक्षालयति।
6. अम्बा वायुयानेन आगच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है–

प्रकृति	= स्वभाव अर्थ में	– सः प्रकृत्या सज्जनः।
हीनः	= रहित	– धर्मेण हीनः नरः न शोभते।
विना	= बिना	– विद्यया विना योग्यता न भवति।
अलम्	= मत करो (निषेधार्थे)	– अलम् कोलाहलेन।
सह/साकम्/सार्धम्	= साथ	– मृगः मृगैः साकम्/सार्धम्/सह धावति।
सदृशः	= समान	– सः त्यागे रामेण सदृशः।
किम्	= क्या	– अनेन मूर्खेण पुत्रेण किम्।
अंग विकार में	= यथा काणः (काना),	– सः नेत्रेण काणः।
	खल्वाटः (गंजा), पङ्गुः/	सः पादेन खञ्जः अभवत्।
	खञ्जः (लंगड़ा) इत्यादि।	वृद्धः शिरसः खल्वाट्ः अस्ति।

4. चतुर्थी विभक्तिः–सम्प्रदाने चतुर्थी–कर्ता जिसके लिए कार्य करता है उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है; जैसे–

1. जनकः सुतायै पुस्तकानि आनयति।
2. नद्यः परोपकाराय वहन्ति।
3. भक्ताः देवदर्शनाय गच्छन्ति।
4. शिष्याय विद्यां ददाति।
5. सफलतायै पुस्तकानि पठति।
6. सः अध्ययनाय गच्छति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है–

√दा (यच्छ्)	=	देना	– माता पुत्राय भोजनं यच्छति।
√रुच्	=	अच्छा लगना	– मह्यम् मोदकं रोचते।
√कुप्/ √क्रुध्	=	क्रोध करना	– अध्यापकः मूर्खाय छात्राय कुप्यति/क्रुध्यति।
√स्पृह्	=	इच्छा करना	– धनिकः ज्ञानाय न स्पृह्यति।
√नमः	=	नमस्कार हो	– भगवते वासुदेवाय नमः।
√अलम्	=	पर्याप्त/काफी	– इदम् भोजनम् मह्यम् अलम्।
√स्वाहा	=	आहुति देना	– अग्नये/इन्द्राय स्वाहा।
√स्वस्ति	=	कल्याण हो	– छात्रेभ्यः स्वस्ति।
√कथ्	=	कहना	– गुरुः छात्रेभ्यः कथयति।

5. पञ्चमी विभक्तिः–अपादाने पञ्चमी–पृथक् होने के अर्थ में अपादान कारक में पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे–

1. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
2. आकाशात् पुष्पाणि वर्षन्ति।
3. मेघात् वर्षा भवति।
4. आचार्यात् वेदं पठति।
5. बीजात् अंकुरः भवति।
6. विवेकः कुपथात् निवारयति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में पंचमी विभक्ति लगती है–

विना/ऋते = बिना – ज्ञानम्/ज्ञानेन/ज्ञानात् विना न मुक्तिः।

प्र + √मद् = भूल/लापरवाही/आलस्य – देशसेवात् मा प्रमद।

तुलना के लिए तरप्/इयसुन् प्रत्यय के योग में–जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात् अपि गरीयसी।

बहिः	=	बाहर	– गृहात् बहिः उद्यानम् अस्ति।
पूर्वम्	=	पहले	– चैत्रः वैशाखात् पूर्वम् आगच्छति।
वि + √रम्	=	रुकना	– अध्ययनात् मा विरम।
√त्रै/ √रक्ष्	=	रक्षा करना	– सिद्धार्थः हंसम् अनुजात् रक्षति/त्रायते।
प्र + √भू	=	उत्पन्न होना	– गंगा हिमालयात् प्रभवति।

6. षष्ठी विभक्तिः–संबंधे षष्ठी–संबंध बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. इदम् मम् गृहम् अस्ति।
2. चन्द्रस्य प्रकाशः शीतलः भवति।
3. सज्जनानां कृपा सर्वेभ्यः भवति।
4. सूर्यस्य प्रकाशः तीव्रः अभवत्।
5. लक्ष्मणः रामस्य अनुजः आसीत्।
6. इयं कृतिः कस्याः अस्ति?

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में षष्ठी विभक्ति लगती है–

√स्मृ	=	याद करना	– बालः मातुः स्मरति।
उप + √कृ	=	उपकार करना	– राजा प्रजायाः उपकुर्वन्ति।
समः/तुल्यः	=	समान	– बले सः भीमस्य तुल्यः/समः।
उपरि	=	ऊपर	– वृक्षस्य उपरि नीडः अस्ति।
अधः	=	नीचे	– वृक्षस्य अधः श्रमिकः स्वपति।
पुरतः	=	सामने	– गृहस्य पुरतः सरणिः अस्ति।
अग्रे	=	आगे	– सैनिकस्य अग्रे सैनिकः चलति।
निर्धारण में	=	निर्धारित करने में	– कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

7. सप्तमी विभक्तिः–अधिकरणे सप्तमी–आधार में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. हरिः शय्यायां शेते।
2. शिशुः मातुः क्रोडे हसति।
3. खगाः नीडेषु वसन्ति।
4. पिकाः आम्रेषु कूजन्ति।
5. मुनिः कुटीरे यजति।
6. विद्यालयस्य परिसरे छात्रावासः अस्ति।

उपपद-विभक्तयः

निम्नलिखित पदों के योग में सप्तमी विभक्ति लगती है–

निर्धारणे–कवीनाम्/कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

काकः खगानां/खगेषु धूर्तः भवति।

कुशल	=	चतुर	– रामः पठने कुशलः।
√स्निह्	=	स्नेह करना	– माता पुत्रे स्निह्यति।
चतुर	=	चालाक/होशियार	– चन्द्रगुप्तः न्याये चतुरः।
प्रवीणः	=	कुशल	– सोमः वीणावादने प्रवीणः।
दक्षः	=	कुशल	– सः धनुर्विद्यायाम् दक्षः।
विश्वस्	=	विश्वास करना	– आचार्या छात्रे विश्वसति।
भावे	=	समाप्त होने वाले कार्य तथा उसके कर्ता में–रामे वनं गते दशरथः पञ्चत्वं गतः।	

8. सम्बोधन कारक–बुलाने के लिए हे! अरे! इत्यादि चिह्नों का प्रयोग होता है। संबोधन कारक में कुछ अंतर के साथ प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

1. हे राधे! त्वम् किम् करोषि?
2. अरे सैनिकाः! किम् यूयम् देशम् रक्षथ?
3. हे लते! कूपस्य अग्रे एव घटः अस्ति।
4. अयि बालिकाः! यूयम् कथं न खेलथ?
5. भो बालकाः! यूयम् तत्र मा गच्छत।
6. हे पुत्र! अत्र आगच्छ।

ध्यातव्यम्

- संज्ञा या सर्वनाम आदि शब्दों का संबंध क्रिया के साथ प्रकट करने के लिए कारक के विभक्ति चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
- कुछ विद्वानों के अनुसार 'संबंध' और 'संबोधन' कारक नहीं कहलाते क्योंकि इनका साक्षात् संबंध क्रिया से नहीं होता।
- उपपद विभक्तियों में सामान्य कारक नियमों के बदले विशेष पदों के साथ दूसरी ही विभक्तियाँ लगती हैं।
- ये उपपद प्राय: अव्यय ही होते हैं।
- रूप चलने के बाद शब्द 'पद' बन जाते हैं।
- संस्कृत भाषा में पदों का ही प्रयोग होता है, शब्दों का नहीं।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. विना के योग में द्वितीया, तृतीया एवं पंचमी विभक्तियों में से किसी भी विभक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।
2. निर्धारण में षष्ठी एवं सप्तमी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है।

प्रायोगिकाभ्यास:

I. कोष्ठकगतशब्दानाम् उचितरूपै: रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उचित रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) 1. .... पुस्तकम् पठन्ति। (छात्र)

2. .... प्रति मा गच्छ। (कूप)

3. .... अभित: मयूरा: नृत्यन्ति। (कृष्ण)

4. कक्षायाम् .... अलम्। (कोलाहल)

5. स: .... अन्ध: अस्ति। (नेत्र)

6. स: .... खल्वाट: अस्ति। (शिरस्)

(ख) 1. .... नमः। (गणेश)

2. इदम् दुग्धम् .... अलम्। (बाल)

3. सा .... कुप्यति। (याचक)

4. किम् .... कंकणम् रोचते? (युष्मद्)

5. .... स्वाहा। (अग्नि)

6. .... बहिः अतिथिः आगच्छति। (गृह)

II. मञ्जूषातः उचितं पदं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

पतनात्	छात्रेषु	पुष्पैः	गायने	मह्यम्	सर्पात्	इन्द्राय	विद्यालयस्य
मातरम्	सोमवासरात्	ज्ञानात्	क्रोधेन	नृपस्य	वानरात्	दुष्टान्	

1. .... ऋते न मुक्तिः।
2. बालः .... बिभेति।
3. सः बालम् .... रक्षति।
4. अयम् .... प्रासादः अस्ति।
5. बालः .... स्मरति।
6. .... विजयः श्रेष्ठतमः।
7. धिक् ....।
8. .... पूर्वम् रविवासरः भवति।
9. .... पठनम् रोचते।
10. .... पुरतः एव मम गृहम् अस्ति।
11. .... हीनः पादपः न शोभते।
12. अलम् ....।
13. मम माता .... अति प्रवीणा।
14. .... स्वाहाः।
15. शिशुः .... बिभेति।

2 शब्दरूप-प्रकरणम्

सभी सार्थक शब्द जो धातु, प्रत्यय व उपसर्ग न हों प्रातिपदिक होते हैं। इन्हें पद बनाने के लिए इनमें सुप् प्रत्यय लगाए जाते हैं। प्रातिपदिक शब्द निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं :

प्रातिपदिक शब्द

1. अजन्त = अच् (स्वर) है जिसके अन्त में या स्वरान्त उदाहरण—राम, मुनि, कवि, साधु तथा नदी इत्यादि।

2. हलन्त या व्यञ्जनान्त जिसके अन्त में व्यञ्जन हों उदाहरण—सखिन्, राजन्, आत्मन् तथा मन्त्रिन् इत्यादि।

1. देव = देवता (अकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
संबोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवाः!

अन्य अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–राम, बालक, बाल, खग, नर, छात्र, मेघ, चटक, मीन, अज, अश्व, काक, पिक, गज, सिंह, मयूर, रजक, अवकर, अध्यापक, ईश्वर, नृप, मास, महाराज, कलम तथा जय इत्यादि।

2. मुनि (इकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्

तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि:
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
पंचमी	मुने:	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
षष्ठी	मुने:	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्यो:	मुनिषु
संबोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनय:!

अन्य इकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–निधि (खजाना), कवि, गिरि (पहाड़), अग्नि (आग), कपि (बंदर), यति (संन्यासी), भूपति (राजा), हरि, रवि, आधि, व्याधि, रश्मि तथा अधिपति इत्यादि।

3. साधु = सज्जन (उकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	साधु:	साधू	साधव:
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभि:
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्य:
पंचमी	साधो:	साधुभ्याम्	साधुभ्य:
षष्ठी	साधो:	साध्वो:	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वो:	साधुषु
संबोधन	हे साधो!	हे साधू!	हे साधव:!

अन्य उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–गुरु, भानु, रिपु, प्रभु, शिशु, ऋतु, पशु, वायु, विधु, रज्जु, तनु, हनु, सिन्धु, इन्दु, तरु तथा शम्भु इत्यादि।

4. पितृ = पिता (ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितर:
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पंचमी	पितु:	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रो:	पितृषु
सम्बोधन	हे पित:!	हे पितरौ!	हे पितर:!

अन्य ऋकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–कर्तृ, भ्रातृ, सवितृ, धातृ, दातृ, जातृ तथा श्रोतृ इत्यादि।

5. लता = टहनी (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
संबोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

अन्य आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–रमा, बाला, बालिका, शिखा, कक्षा, अध्यापिका, कृपा, शाखा, वर्षा, वरदा तथा आशा इत्यादि।

6. मति = बुद्धि (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

अन्य इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–रात्रि, श्रुति (वैदिक ज्ञान), शक्ति (बल), भक्ति, शान्ति, कृति (रचना), बुद्धि, रुचि, प्रकृति, कटि (कमर), आकृति, स्मृति, कीर्ति, कृषि, प्रीति, नीति, सृष्टि, दृष्टि, वृष्टि, गति, वृत्ति (आजीविका) तथा धृति इत्यादि।

7. नदी = सरिता (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

अन्य ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–जननी (माता), लक्ष्मी, रजनी, महिषी भैंस (मादा), विदुषी, भगिनी (बहन), पत्नी, राज्ञी (रानी), पृथ्वी, पौत्री (पोती), पुत्री, देवी, श्रीमती, कुमारी, मृगी, मयूरी, नारी तथा गौरी इत्यादि।

8. मातृ = माता (ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

अन्य ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–यातृ (देवरानी) तथा दुहितृ (पुत्री) इत्यादि।

9. फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलते हैं; जैसे–पुस्तक, मित्र, पुष्प, ज्ञान, धन, नेत्र, नयन, उद्यान, नवनीत, चक्र, गृह, सत्य, हिम, स्वर्ग, पाप, पुण्य, गीत, नगर, गगन, भूषण, कमल, पत्र, चित्र, जल, भारत, वन, द्रव्य तथा भवन इत्यादि।

10. वारि = जल (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि!/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

इसी तरह दधि (दही) तथा अस्थि (हड्डी) के रूप भी चलेंगे।

11. मधु = शहद (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो !/हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

मधु के ही समान अन्य उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; जैसे–दारु (लकड़ी), श्मश्रु (दाढ़ी), अश्रु (आँसू), वस्तु (चीज़), जानु (घुटना) तथा वसु (धन) इत्यादि।

सर्वनाम शब्द

12. अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

13. युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

14. इदम् = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:	एषु

इदम् = यह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमा:
द्वितीया	इमम्	इमे	इमा:
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	आभ्य:
पंचमी	अस्या:	आभ्याम्	आभ्य:
षष्ठी	अस्या:	अनयो:	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयो:	आसु

इदम् = यह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:	एषु

15. तत् = वह (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स:	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तै:
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

तत् = वह (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं ।)

16. किम् = कौन (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = क्या (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् = क्या (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(तृतीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिग के समान हैं।)

17. यत् = जो (पुंल्लिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् = जो (स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् = जो (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिग के समान होंगे)

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं होते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

ध्यातव्यम्

- अंतिम अक्षर समान हो तो लिंगानुसार रूप प्राय: एक जैसे ही चलते हैं।
- अकारान्त नपुंसकलिंग के रूप प्राय: अकारान्त पुंल्लिग के समान ही चलते हैं। केवल प्रथमा, द्वितीया तथा संबोधन के रूप अलग होते हैं।
- तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी विभक्ति के द्विवचन के पद एक जैसे ही होते हैं। इसी तरह षष्ठी व सप्तमी विभक्ति के द्विवचन तथा अधिकतर प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन भी एक जैसे ही होते हैं।
- यदि 'एक बालक का' यह वाक्य संस्कृत में बदलना हो तो 'का' के लिए षष्ठी विभक्ति के एकवचन का प्रयोग करेंगे जो 'बालकस्य' है। इसी तरह विभक्तियों के चिह्नों के अनुसार विभिन्न पदों के अर्थों को भी समझ सकते हैं।
- शब्द रूपों में केवल संधि के कारण ही कोई परिवर्तन हो सकता है, अन्यथा नहीं।
- रूपों को पहले विभक्ति के अनुसार, फिर वचनों के अनुसार भी याद करें।
- 'ऋ' 'र्' तथा 'ष्' के बाद यदि 'न' आ जाए तो उसे 'ण्' हो जाता है। पदान्त 'न्' को 'ण्' नहीं होता; यथा– रामान्, पितॄन्, रक्षन्, महर्षीन् इत्यादि।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं होते हैं।
2. तत्, एतत्, यत्, किम् आदि सर्वनाम शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
3. युष्मद् तथा अस्मद् के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

प्रायोगिकाभ्यास:

I. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. देव – सप्तमी विभक्ति: ....
2. अध्यापक – चतुर्थी विभक्ति: ....
3. कवि – तृतीया विभक्ति: ....

4. तरु – षष्ठी विभक्तिः ....

5. कर्तृ – प्रथमा विभक्तिः ....

6. अस्मद् – षष्ठी विभक्तिः ....

7. युष्मद् – पंचमी विभक्तिः ....

8. तत् – पुंल्लिङ्ग, षष्ठी विभक्तिः ....

9. इदम् – स्त्रीलिङ्ग, चतुर्थी विभक्तिः ....

10. एतत् – नपुंसकलिङ्ग, द्वितीया विभक्तिः ....

II. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. गज शब्द – षष्ठी विभक्ति, बहुवचने ....
2. गुरु शब्द – तृतीया विभक्ति, बहुवचने ....
3. मति शब्द – पञ्चमी विभक्ति, द्विवचने ....
4. नदी शब्द – सप्तमी विभक्ति, बहुवचने ....
5. पितृ शब्द – चतुर्थी विभक्ति, बहुवचने ....
6. मातृ शब्द – षष्ठी विभक्ति, द्विवचने ....
7. लता शब्द – संबोधन, एकवचने ....
8. गुरु शब्द – संबोधन, एकवचने ....
9. शाखा शब्द – द्वितीया विभक्ति, द्विवचने ....
10. कन्या शब्द – पञ्चमी विभक्ति, बहुवचने ....

III. रिक्तस्थानानि पूरयत।

(रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. रमायाम्	रमयोः	....	6. मातुः	....	मातृणाम्
2. हे	हे लते!	हे लताः!	7. नद्या	नदीभ्याम्	....
3. पत्रेण	....	पत्रैः	8.	साधुभ्याम्	साधुभिः
4.	रमाभ्याम्	रमाभिः	9. जनकस्य	जनकयोः	....
5. कृपया	कृपाभ्याम्	....	10. हरिम्	हरी	....

3 धातुरूप-प्रकरणम्

जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया का मूल रूप ही धातु होता है। प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु में प्रत्यय लगकर ही बनता है। धातुओं में तिङ् प्रत्यय लगाकर क्रियापद बनाए जाते हैं। ये निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं :

(1) परस्मैपद (2) आत्मनेपद।

कुछ धातुओं के रूप दोनों पदों में चलते हैं। ऐसी धातुएँ उभयपदी कहलाती हैं।

संस्कृत की सभी धातुओं को दस गणों में बाँटा गया है। प्रत्येक गण की धातुओं के रूप प्राय: एक तरह से ही चलते हैं। कुछ प्रमुख धातुओं के रूप इस प्रकार हैं–

1. परस्मैपद

1. √पठ् (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठ:	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:
मध्यम पुरुष	पठे:	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

दस गण	
1	भ्वादिगण = √भू इत्यादि
2	अदादिगण = √अद् आदि
3	जुहोत्यादिगण = √हु आदि
4	दिवादिगण = √दिव् आदि
5	स्वादिगण = √सु आदि
6	तुदादिगण = √तुद् आदि
7	रुधादिगण = √रुध् आदि
8	तनादिगण = √तन् आदि
9	क्रयादिगण = √क्री आदि
10	चुरादिगण = √चुर् आदि

2. √गम् / गच्छ् (जाना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		लट् लकार	
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
		लङ् लकार	
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
		लृट् लकार	
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः
		लोट् लकार	
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम
		विधिलिङ् लकार	
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

3. √नम् (नमस्कार करना या झुकना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		लट् लकार	
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः
		लङ् लकार	
प्रथम पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम पुरुष	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम पुरुष	अनमम्	अनमाव	अनमाम
		लृट् लकार	
प्रथम पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम पुरुष	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम पुरुष	नम	नमतम्	नमत
उत्तम पुरुष	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम पुरुष	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम पुरुष	नमेयम्	नमेव	नमेम

4. चल् (चलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचलत्	अचलताम्	अचलन्
मध्यम पुरुष	अचलः	अचलतम्	अचलत
उत्तम पुरुष	अचलम्	अचलाव	अचलाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चलतु	चलताम्	चलन्तु
मध्यम पुरुष	चल	चलतम्	चलत
उत्तम पुरुष	चलानि	चलाव	चलाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चलेत्	चलेताम्	चलेयुः
मध्यम पुरुष	चलेः	चलेतम्	चलेत
उत्तम पुरुष	चलेयम्	चलेव	चलेम

5. √खाद् (खाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यम पुरुष	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तम पुरुष	खादेयम्	खादेव	खादेम

6. √दृश् / पश्य (देखना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

7. √जि (जीतना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जयति	जयतः	जयन्ति
मध्यम पुरुष	जयसि	जयथः	जयथ
उत्तम पुरुष	जयामि	जयावः	जयामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
मध्यम पुरुष	अजयः	अजयतम्	अजयत
उत्तम पुरुष	अजयम्	अजयाव	अजयाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उत्तम पुरुष	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	जयतु	जयताम्	जयन्तु
मध्यम पुरुष	जय	जयतम्	जयत
उत्तम पुरुष	जयानि	जयाव	जयाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
मध्यम पुरुष	जयेः	जयेतम्	जयेत
उत्तम पुरुष	जयेयम्	जयेव	जयेम

8. √अस् (होना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

9. √भू (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

10. √पा / पिब् (पीना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

11. √हन् (मारना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हन्सि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहनः	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

12. √घ्रा / जिघ्र् (सूँघना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यम पुरुष	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तम पुरुष	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
मध्यम पुरुष	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उत्तम पुरुष	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
मध्यम पुरुष	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उत्तम पुरुष	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
मध्यम पुरुष	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उत्तम पुरुष	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
मध्यम पुरुष	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उत्तम पुरुष	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

13. √पत् (गिरना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पततः	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथः	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पतावः	पतामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपतः	अपततम्	अपतत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पततु	पतताम्	पतन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः
मध्यम पुरुष	पतेः	पतेतम्	पतेत
उत्तम पुरुष	पतेयम्	पतेव	पतेम

14. √स्मृ (याद करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उत्तम पुरुष	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
मध्यम पुरुष	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उत्तम पुरुष	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरिष्यति	स्मरिष्यत:	स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथ:	स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	स्मरिष्यामि	स्मरिष्याव:	स्मरिष्याम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उत्तम पुरुष	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयु:
मध्यम पुरुष	स्मरे:	स्मरेतम्	स्मरेत
उत्तम पुरुष	स्मरेयम्	स्मरेयाव	स्मरेयाम

15. √हस् (हँसना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हसति	हसत:	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथ:	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसाव:	हसाम:

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहस:	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथ:	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्याव:	हसिष्याम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयु:
मध्यम पुरुष	हसे:	हसेतम्	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	हसेम

16. √रक्ष् (रक्षा करना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रक्षति	रक्षत:	रक्षन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षसि	रक्षथ:	रक्षथ
उत्तम पुरुष	रक्षामि	रक्षाव:	रक्षाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

प्रथम पुरुष	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
मध्यम पुरुष	अरक्ष:	अरक्षतम्	अरक्षत
उत्तम पुरुष	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पुरुष	रक्षिष्यति	रक्षिष्यत:	रक्षिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथ:	रक्षिष्यथ
उत्तम पुरुष	रक्षिष्यामि	रक्षिष्याव:	रक्षिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

प्रथम पुरुष	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
मध्यम पुरुष	रक्ष	रक्षतम्	रक्षत
उत्तम पुरुष	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

प्रथम पुरुष	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयु:
मध्यम पुरुष	रक्षे:	रक्षेतम्	रक्षेत
उत्तम पुरुष	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

17. √पच् (पकाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचत:	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथ:	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचाव:	पचाम:

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपच:	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

18. √स्था / तिष्ठ् (ठहरना/रुकना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

19. √क्रुध् (गुस्सा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उत्तम पुरुष	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
मध्यम पुरुष	अक्रुध्यः	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उत्तम पुरुष	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
मध्यम पुरुष	क्रुध्य	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उत्तम पुरुष	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
मध्यम पुरुष	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उत्तम पुरुष	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम

20. √श्रु (सुनना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
मध्यम पुरुष	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उत्तम पुरुष	अशृण्वम्	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उत्तम पुरुष	शृण्वानि	शृण्वाव	शृण्वाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
मध्यम पुरुष	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उत्तम पुरुष	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

21. √वद् (बोलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
मध्यम पुरुष	वदेः	वदेतम्	वदेत
उत्तम पुरुष	वदेयम्	वदेव	वदेम

22. √इष् / इच्छ् (इच्छा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

23. √आप् (पाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

24. √लिख् (लिखना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

25. √प्रच्छ् (पूछना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

26. √कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
मध्यम पुरुष	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

2. आत्मनेपद

1. √कृ (करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथा:	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथा:	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

2. √सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथा:	असेवेथाम्	असेध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथा:	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

3. √मुद् (प्रसन्न होना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
मध्यम पुरुष	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उत्तम पुरुष	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
मध्यम पुरुष	अमोदथा:	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उत्तम पुरुष	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
मध्यम पुरुष	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
मध्यम पुरुष	मोदेथा:	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उत्तम पुरुष	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

4. √चुर् (चुराना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उत्तम पुरुष	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
मध्यम पुरुष	अचोरयथा:	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
मध्यम पुरुष	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
मध्यम पुरुष	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उत्तम पुरुष	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

5. √लभ् (प्राप्त करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

6. √वृत् (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथा:	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथा:	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

7. √याच् (माँगना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
मध्यम पुरुष	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उत्तम पुरुष	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
मध्यम पुरुष	अयाचथा:	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उत्तम पुरुष	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
मध्यम पुरुष	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उत्तम पुरुष	याचै	याचावहै	याचामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
मध्यम पुरुष	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उत्तम पुरुष	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

8. √हृ (हरना)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हरते	हरेते	हरन्ते
मध्यम पुरुष	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उत्तम पुरुष	हरे	हरावहे	हरामहे

लङ् लकार

प्रथम पुरुष	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
मध्यम पुरुष	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उत्तम पुरुष	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

लोट् लकार

प्रथम पुरुष	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
मध्यम पुरुष	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उत्तम पुरुष	हरै	हरावहै	हरामहै

विधिलिङ् लकार

प्रथम पुरुष	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
मध्यम पुरुष	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उत्तम पुरुष	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

ध्यातव्यम्

- एक धातु के अनेकार्थ हो सकते हैं; यथा–√नम् इत्यादि।
- एक ही अर्थ के लिए भी अनेक धातु हो सकते हैं; यथा–खेलना के लिए √क्रीड्, √खेल् इत्यादि।
- कुछ धातुओं में प्रत्यय के साथ जुड़ने से पहले 'इ' का आगम हो जाता है।
- लट् लकार में एकवचन के तीनों धातु रूपों में ह्रस्व स्वर 'इ' की मात्रा लगती है।
- धातुओं के रूप **दस** लकारों में चलते हैं, जिनमें से प्रमुख **पाँच** ही पाठ्यक्रम में होते हैं।
- सभी धातु रूपों का प्रयोग तीनों लिंगों में समान रूप से किया जाता है।
- प्रथम पुरुष के साथ अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष के साथ श्रोता तथा उत्तम पुरुष के साथ वक्ता का प्रयोग किया जाता है।
- एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन, द्विवचन के कर्ता के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के कर्ता के साथ बहुवचन के क्रियापद का ही प्रयोग किया जा सकता है।
- संस्कृत के सभी शब्द किसी-न-किसी धातु से ही बने हैं। अतएव प्रत्येक शब्द में भी कोई न कोई मूल धातु होती है; यथा–संस्कृत शब्द में 'कृ' धातु है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
2. मूल धातु में प्रत्यय जुड़ने पर ही क्रिया रूप बनते हैं।
3. संस्कृत की सभी धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है।
4. प्रत्येक गण के सभी रूपों में विशेष समानता होती है।
5. धातुओं के रूप दो पदों में चलते हैं–परस्मैपद और आत्मनेपद। कुछ धातुएँ उभयपदी भी होती हैं।
6. लट् लकार का प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है।
7. लृट् लकार का प्रयोग भविष्यत् काल के लिए तथा लङ् लकार का प्रयोग भूतकाल के लिए किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. यथानिर्देशं लकारपरिवर्तनं कुरुत।

(निर्देशानुसार लकार–परिवर्तन कर धातुओं के रूप लिखिए।)

1. कुरु (लृट्लकारे) ....
2. नमेत् (लृट्लकारे) ....
3. द्रक्ष्यथ (लोट्लकारे) ....
4. पचति (विधिलिङ्लकारे) ....
5. पठिष्यामः (लङ्लकारे) ....
6. स्मरामि (लोट्लकारे) ....
7. पश्यति (लृट्लकारे) ....
8. अगच्छम् (लट्लकारे) ....
9. गास्यामः (लोट्लकारे) ....
10. पचसि (लृट्लकारे) ....

II. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत।

(निर्देशानुसार रूप लिखिए।)

1. √चल्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, द्विवचन ....
2. √नम्, लृट्लकारे, उत्तम पुरुष, बहुवचन ....
3. √खाद्, लट्लकारे, मध्यम पुरुष, एकवचन ....
4. √पठ्, लङ्लकारे, उत्तम पुरुष, बहुवचन ....
5. √पा, विधिलिङ्लकारे, मध्यम पुरुष, द्विवचन ....
6. √अस्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, एकवचन ....
7. √दृश्, लट्लकारे, उत्तम पुरुष, द्विवचन ....
8. √अस्, लोट्लकारे, प्रथम पुरुष, बहुवचन ....
9. √भू, विधिलिङ्लकारे, मध्यम पुरुष, एकवचन ....
10. √धाव्, लृट्लकारे, प्रथम पुरुष, द्विवचन ....
11. √गम्, लोटलकारे, उत्तम पुरुष, एकवचन ....
12. √क्रीड्, लङ्लकारे, प्रथम पुरुष, बहुवचन ....

III. समुचितधातुरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयन्तु।

(उचित धातु रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1.	करोतु	(*i*)	कुर्वन्तु	2.	(*iv*)	स्याताम्	स्युः
	(*ii*)	कुरुतम्	कुरुत		स्याः	स्यातम्	(*v*) ....
	करवाणि	(*iii*)	करवाम		स्याम्	(*vi*)	स्याम
3.	(*vii*)	सेवेते	सेवन्ते	4.	(*x*)	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
	सेवसे	सेवेथे	(*viii*)		लप्स्यसे	(*xi*)	लप्स्यध्वे
	(*ix*)	सेवावहे	सेवामहे		लप्स्ये	लप्स्यावहे	(*xii*) ....
5.	खादेत्	(*xiii*)	खादेयुः	6.	अजयत्	अजयताम्	(*xiv*) ....
	(*xiv*)	खादेतम्	खादेत		(*xvii*)	अजयतम्	अजयत्
	खादेयम्	खादेव	(*xv*)		अजयम्	(*xviii*)	अजयाम

4 सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर यदि उनमें कोई परिवर्तन हो जाए तो उसे संधि कहते हैं। संधि करना या न करना वक्ता या लेखक की विवक्षा (इच्छा) पर निर्भर करता है। संधि तीन प्रकार की होती है:

सन्धिः
- (क) स्वर सन्धिः
- (ख) व्यञ्जन सन्धिः
- (ग) विसर्ग सन्धिः

स्वर सन्धिः

स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर नया स्वर बने तो उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि आठ प्रकार की होती है।

स्वर संधिः

दीर्घ	गुण	वृद्धि	यण्	अयादि	पूर्वरूप	पररूप	प्रकृतिभाव

1. दीर्घ सन्धिः–यदि पूर्व पद का अंतिम वर्ण अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तथा उत्तर पद का पहला वर्ण भी उसी जाति का हो तो दोनों के स्थान पर उसी स्वर का दीर्घ हो जाता है। इसे हम निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं–

अ + अ = आ	आ + आ = आ	अ + आ = आ	आ + अ = आ
सूर्य + अस्तः = सूर्यास्तः	महा + आशयः = महाशयः	हिम + आलयः = हिमालयः	कदा + अपि = कदापि

ठीक इसी तरह–

इ + इ = ई	ई + ई = ई	इ + ई = ई	ई + इ = ई
हरि + इच्छा = हरीच्छा	रजनी + ईशः = रजनीशः	मुनि + ईशः = मुनीशः	शची + इन्द्रः = शचीन्द्रः

उ + उ = ऊ ; ऊ + ऊ = ऊ ; उ + ऊ = ऊ ; ऊ + उ = ऊ

भानु + उदयः = भानूदयः ; भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम् ; लघु + ऊर्मिः = लघूर्मि ; वधू + उक्तिः = वधूक्तिः

ऋ के बाद सजातीय ऋ आने पर विकल्प (इच्छा) से ॠ होता है तथा ऋ के बाद लृ आने पर भी विकल्प से ऋ होता है।

ऋ + ऋ = ॠ ; ऋ + लृ = ॠ ; ऋ + लृ = ऋ ; ऋ + लृ = लृ

पितृ + ऋणम् = पितॄणम् ; होतृ + लृकारः = होतॄकारः ; होतृ + लृकारः = होत्लृकारः ; होतृ + लृकारः = होतृलृकारः

अपवाद–कुछ स्थानों पर संधि का नियम लागू होने पर भी संधि नहीं होने का विधान होता है। वे उस संधि के अपवाद होते हैं; यथा–सार + अङ्गः = सारङ्गः इत्यादि।

2. गुण सन्धिः–यदि पूर्व पद के अंत में अ, आ हो तथा उत्तर पद के पहले अक्षर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ हों तो उन्हें क्रम से ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है।

अ + इ = ए ; अ + ई = ए ; आ + इ = ए ; आ + ई = ए

गज + इन्द्रः = गजेन्द्रः ; धन + ईशः = धनेशः ; राधा + इच्छा = राधेच्छा ; महा + ईश्वरः = महेश्वरः

अ + उ = ओ ; आ + ऊ = ओ ; अ + ऊ = ओ ; आ + उ = ओ

भाग्य + उदयः = भाग्योदयः ; दया + ऊर्मिः = दयोर्मि ; सुयोधन + ऊर्मिः = सुयोधनोर्मिः ; गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्

अ + ऋ = अर् ; आ + ऋ = अर् ; अ + लृ = अल् ; आ + लृ = अल्

देव + ऋषिः = देवर्षिः ; राजा + ऋषिः = राजर्षिः ; मम + लृकारः = ममलृकारः ; रमा + लृकारः = रमल्कारः

3. वृद्धि सन्धिः—यदि पूर्व पद के अंत में **अ** या **आ** तथा उत्तर पद का पूर्व वर्ण **ए** या **ऐ** हो तो उन के स्थान पर **ऐ** तथा ओ, औ के स्थान पर **औ** हो जाता है। साथ ही उत्तर पद का पहला वर्ण **ऋ** हो तो **आर्** हो जाता है।

नोट—आर् होने का कारण गुण सन्धि नहीं है, यह गुण सन्धि का अपवाद है।

➲ अ + ए → ऐ | आ + ऐ → ऐ | अ + ऐ → ऐ | आ + ए → ऐ

सह + एव = सहैव | कृष्णा + ऐक्यम् = कृष्णैक्यम् | तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम् | प्रार्थना + एषा = प्रार्थनैषा

➲ अ + ओ → औ | अ + औ → औ | आ + औ → औ | आ + ओ → औ

जल + ओघः = जलौघः | रूप + औदार्यम् = रूपौदार्यम् | विद्या + औत्सुक्यम् = विद्यौत्सुक्यम् | एषा + ओषधिः = एषौषधिः

अ + ऋ → आर्

प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति

4. यण् सन्धिः—यदि पूर्व पद का अन्तिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ अथवा ऌ हो तथा उत्तर पद का प्रथमाक्षर कोई भी भिन्न (विजातीय) स्वर हो तो इ, इ को य्, उ, ऊ को व्, ऋ, ॠ को र् तथा ऌ को ल् हो जाता है।

➲ इ + भिन्न स्वर → य् | ई + भिन्न स्वर → य् | उ + भिन्न स्वर → व् | ऊ + भिन्न स्वर → व्

रवि + अपि = रव्यपि | देवी + उवाच = देव्युवाच | साधु + इति = साध्विति | वधू + आज्ञा = वध्वाज्ञा

➲ ऋ + भिन्न स्वर → र् | ऌ + भिन्न स्वर → ल्

भ्रात + आदेशः = भ्रात्र् + आदेशः = भ्रात्रादेशः

ऌ + आकृतिः = ल् + आकृति = लाकृतिः

5. **अयादि सन्धिः**–ए, ऐ, ओ, औ यदि पूर्व पद के अन्त में हों तथा उत्तर पद का प्रथम अक्षर कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है।

➲ ए + अ = अय्
चे + अनम्
= चयनम

ऐ + अ = आय्
गै + अकः
= गायकः

ओ + अ = अव्
भो + अनम्
= भवनम्

औ + उ = आव्
भौ + उकः
= भावुकः

6. **पूर्वरूप सन्धिः**–यदि पूर्व पद का अंतिम अक्षर ए या ओ हो और उत्तर पद का प्रथम अक्षर अ (केवल ह्रस्व) हो तो **अयादि सन्धि** न होकर पूर्वरूप सन्धि का नियम लागू होगा तथा अ पूर्व पद ए या ओ में बिना परिवर्तन मिल जाएगा तथा पहचान के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है।

➲ ओ + अ
को + अपि
= कोऽपि

ए + अ
धर्मे + अस्मिन्
= धर्मेऽस्मिन्

7. **पररूप सन्धिः**–पहले पद के अंत में यदि अकारान्त उपसर्ग हो तथा बाद में ए, ओ से शुरू होने वाली धातु हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ ही हो जाता है।

➲ अ + ए = ए
प्र + एषणम्
= प्रेषणम्

अ + ओ = ओ
उप + ओषति
= उपोषति

8. **प्रकृति भाव/प्रगृह्य संज्ञा**–संधि के नियम लागू होने पर भी जब संधि न करके उसे उसी रूप में रखने का विधान हो तो उसे प्रकृति भाव कहते हैं।

➲ एक स्वर वाले अव्ययों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

इ + इन्द्रः
= इ इन्द्रः

उ + उमेशः
= उ उमेशः

➲ द्विवचन के अंत में ई, ऊ तथा ए हों तो उनकी सभी स्थानों पर (शब्दों तथा धातुओं के आने पर भी) प्रगृह्य संज्ञा होती है।

शाखे + एते
= शाखे एते

हरी + एतौ
= हरी एतौ

विष्णू + इमौ
= विष्णू इमौ

सेवेते + इमौ
= सेवेते इमौ

कवी + एतौ
= कवी एतौ

गिरी + इमौ
= गिरी इमौ

➲ संबोधन के ओ की तथा दूर से पुकारने पर जब अंतिम स्वर प्लुत हो जाता है तो उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। इसमें दोनों रूप मान्य होते हैं।

शम्भो + आयाहि (ओ की विकल्प से)	कृष्ण ३ + अत्र
= शम्भो आयाहि/शम्भ आयाहि	= कृष्ण ३ अत्र

➲ अदस् (यह) शब्द के रूपों के अमी तथा अमू पदों की प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृति भाव रह जाता है।

अमू + आगच्छतः	अमी + ईशाः
= अमू आगच्छतः	= अमी ईशाः

व्यञ्जन सन्धिः

व्यंजन के साथ व्यंजन अथवा स्वर का मेल होने पर परिवर्तन व्यंजन में हो तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

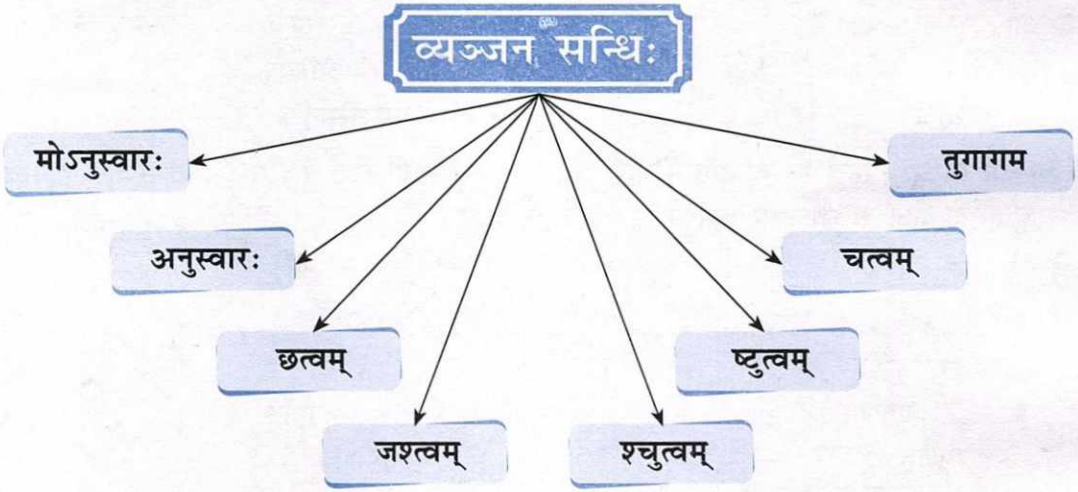

1. मोऽनुस्वारः—पद के अंत में हलन्त म् के बाद किसी भी व्यंजन के आगे आने पर म् को अनुस्वार हो जाता है; जैसे—

देवम्	+	यच्छति	=	देवं यच्छति	ग्रामम्	+	गच्छति	= ग्रामं गच्छति

ध्यान रखें कि वाक्य के यदि अकेले पद या अंतिम पद के अंत में म् हो तब अंतिम मकार को अनुस्वार नहीं हो सकता; जैसे—लतां। यह अशुद्ध है इसके बाद व्यंजन पद आना जरूरी है जो यहाँ नहीं है।

2. अनुस्वारः (परसवर्णः)—अपदान्त अनुस्वार के बाद किसी वर्ग का कोई भी व्यंजन आए तो अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है; जैसे—

गम्	+	गा	=	गङ्गा	अम्	+	काः	=	अङ्काः
शाम्	+	तः	=	शान्तः	कम्	+	टकः	=	कण्टकः
अम्	+	गः	=	अङ्गः	सिम्	+	धुः	=	सिन्धुः
सम्	+	धिः	=	सन्धिः	सम्	+	धानम्	=	सन्धानम्
दम्	+	डः	=	दण्डः	शम्	+	काः	=	शङ्काः

3. **छत्वम् (श्चुत्व सन्धि का प्रकार) (*i*) तवर्ग को चवर्ग, श् को छ्**–किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा या चौथा वर्ण पद के अंत में हो तथा फिर श् के बाद कोई स्वर या य्, र्, व्, ह् वर्ण हो तो श् को छ् तथा तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

एतत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + श्रुत्वा
\+ श् + र् उत्वा (श् के बाद र् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से (मर्जी से)
= च् छ्
= एत च् छ् + र् उत्वा
= एतच्छ्रुत्वा
= एतच्श्रुत्वा (भी विकल्प से परिवर्तन है, चाहें तो करें न चाहें तो न करें। दोनों रूप बनेंगे।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + श्रृणोति
श् + ऋणोति (श् के बाद स्वर है) अतः
↓ विकल्प से
= च् छ्
= त च् + छ् + ऋणोति
= तच्छृणोति
= तच्शृणोति (भी विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + शिवम्
श् + इवम् (श् के बाद स्वर है) अतः
↓ विकल्प से
= च् छ्
= त च + छि + इवम्
= तच्छिवम्
= तच्शिवम् (यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + शरेण
श् + अरेण + एणा (श् के बाद स्वर एवं र् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से
= त च् + छ् + रेण
= तच्छरेण
= तच्शरेण(यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

तत् (वर्ग का प्रथमाक्षर है) + श्लोकेन
\+ श् + लोकेन (श् के बाद ल् वर्ण है) अतः
↓ विकल्प से
= त च् छ् + लोकेन
= तच्छ्लोकेन
= तच्श्लोकेन (यदि श् को छ् न करें तो विकल्प से हो सकता है।)

(*ii*) यदि पदान्त ह्रस्व स्वर के बाद छ् वर्ण हो तो उससे पहले च् वर्ण जोड़ दिया जाता है; जैसे–

वि	+	छेदम्	=	विच्छेदम्	शिव	+	छाया	=	शिवच्छाया
स्निग्ध	+	छाया	=	स्निग्धच्छाया	गज	+	छाया	=	गजच्छाया
यस्य	+	छाया	=	यस्यच्छाया	अनु	+	छेदः	=	अनुच्छेदः
स्व	+	छन्दम्	=	स्वच्छन्दम्	शिव	+	छत्रम्	=	शिवच्छत्रम्
तरु	+	छाया	=	तरुच्छाया्	एक	+	छत्रम्	=	एकच्छत्रम्

4. जश्त्वम्–पद के अंत में यदि किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा वर्ण या श्, स्, ष्, ह् हो तथा उसके आगे कोई भी अन्य वर्ण आए तो पद के अन्तिमाक्षर को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण होता है।

क्, ख्, ग्, घ् → ग्
ट्, ठ्, ड्, ढ् → ड्
प्, फ्, ब्, भ् → ब्
च्, छ्, ज्, झ् → ज्
त्, थ्, द्, ध् → द्

यद्यपि नियम वर्गों के चारों अक्षरों को तृतीयाक्षर करता है फिर भी भाषा में केवल प्रथम अक्षर के तृतीयाक्षर में बदलने के उदाहरण ही मिलते हैं; जैसे–

वा**क्** + अर्थौ	स**त्** + आचारः	ष**ट्** + आननः	सु**प्** + अन्तः
↓	↓	↓	↓
ग्	**द्**	**ड्**	**ब्**
= वाग् + अर्थौ	= सद् + आचारः	= षड् + आननः	= सुब् + अन्तः
= वागर्थौ	= सदाचारः	= षडाननः	= सुबन्तः

5. श्चुत्वम्–यदि स तथा तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के साथ श् या च्, छ्, ज्, झ्, ञ् में से कोई भी वर्ण आ रहा हो तो क्रमशः तवर्ग को चवर्ग तथा स् को श् हो जाता है।

स् → श्
थ् → छ्
ध् → झ्
त् → च्
द् → ज्
न् → ञ्

उदाहरण–

स**त्** + चित्	उ**द्** + ज्वलः	मन**स्** + शान्तिः	क**स्** + चित्
↓	↓	↓	↓
च्	**ज्**	**श्**	**श्**
= सच् + चित्	= उज् + ज्वलः	= मनश् + शान्तिः	= कश् + चित्
= सच्चित्	= उज्ज्वलः	= मनश्शान्तिः	= कश्चित्

6. ष्टुत्वम्–यदि पदान्त स् तथा त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद उत्तर पद का पूर्व पद ष् या ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो क्रमशः स् को ष् तथा तवर्ग (त्, थ्, द् ध्, न्) को टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) हो जाते हैं;

जैसे
स् ⟶ ष्
त्, थ्, द्, ध्, न् → ट्, ठ्, ड्, ढ्, न्

तत् + डमरुः	षष् + थः	तत् + ढौकते	कृष् + तः
↓	↓	↓	↓
ड्	ठः	ड्	टः
= तड् + डमरुः	= षष् + ठः	= तड् + ढौकते	= कृष् + टः
= तड्डमरुः	= षष्ठः	= तड्ढौकते	= कृष्टः

7. **चत्व सन्धिः**–किसी भी वर्ग के तीसरे या चौथे वर्ण से परे यदि किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा अथवा श्, ष्, स् में से कोई वर्ण आ जाए तो तीसरे और चौथे वर्ण को अपने वर्ग का ही पहला वर्ण हो जाता है।

विपद् + सु	छेद् + ता	शरद् + सु	ककुभ् + सु
↓	↓	↓	↓
त्	त्	त्	प्
= विपत् + सु	= छेत् + ता	= शरत् + सु	= ककुप् + सु
= विपत्सु	= छेत्ता	= शरत्सु	= ककुप्सु

8. **तुगागम**–इसे जानने से पहले आगम और आदेश को समझना आवयश्क है।

आगम–मित्र की तरह किसी वर्ण को हटाए बिना वर्ण का आ जाना आगम कहलाता है; यथा–वि + छेदम् = विच्छेदम् में च् बिना किसी वर्ण को हटाए मित्रवत् आया है।

मित्रवत् आगम = 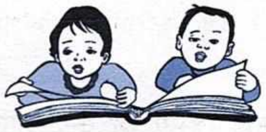 + 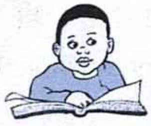 =

आदेश–शत्रु की तरह किसी वर्ण को हटाकर यदि कोई वर्ण आए तो वहाँ आदेश होता है; यथा–नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः में अ + ई दोनों के स्थान पर ए का आना आदेश है।

शत्रुवत् आदेश = 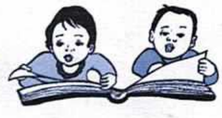 + 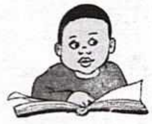 = = आदेश

तुगागम में पद के अंत में आने वाले न् के बाद यदि श् आ जाए तो दोनों के बीच में विकल्प से तुक् (त्) आ जाता है। विकल्प अर्थात् तुक का आना जरूरी नहीं यह आ भी सकता है और नहीं भी।

1. सन् + शम्भुः

= सन् + त् + शम्भुः (तुक् का आगम)

↓ ↓ ↓

ञ् + च् + छ् (श् को छ् तथा श्चुत्व संधि का नियम भी लगेगा)

= सञ्च्छम्भुः (तुक् का आगम विकल्प से है इसलिए यदि 'त्' न हो तो दूसरा रूप होगा)

= सञ्छम्भुः

2. तिष्ठन् + शेते

= तिष्ठन् + त् + शेते (तुगागम्)

= तिष्ठन् + त् + शेते

↓ ↓ ↓

ञ् + च् + छ् (श् को छ् और श्चुत्व संधि होने पर)

= तिष्ठञ्च्छेते

= तिष्ठञ्छेते (विकल्प से होने के कारण)

3. गच्छन् + शेते

= गच्छन् + त् + शेते (तुगागम)

↓ ↓ ↓

ञ् + च् + छ्

= गच्छञ्च्छेते

= गच्छञ्छेते (विकल्प होने के कारण)

विसर्ग सन्धिः

विसर्ग सन्धि– विसर्ग से परे स्वर (अच्) या व्यंजन आने पर विसर्ग के स्थान पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे– रामः + अगच्छत् = रामोऽगच्छत्।

विशेष– विसर्ग को संस्कृत में विसर्जनीय भी कहते हैं। इन्हें हल्का या आधा 'ह्' समझना चाहिए। इसका उच्चारण आधे 'ह्' के समान ही होता है।

1. **विसर्ग को स्–** यदि वर्गों के प्रथम वर्ण में से कोई विसर्ग के बाद आए, तो विसर्ग को स् हो जाता है; जैसे–

नमः + ते = नमस्ते

नमः + करोति = नमस्करोति

मनः + तस्य = मनस्तस्य

इतः + ततः = इतस्ततः

2. **विकल्प से श् ष् स्–** यदि विसर्ग के बाद श् ष् स् में से कोई वर्ण आए, तो विसर्ग के स्थान पर क्रम से श् ष् स् विकल्प से (हो भी सकते हैं, नहीं भी) हो जाते हैं; जैसे–

रामः + शेते = रामश्शेते, रामः शेते

देवः + शेते = देवश्शेते, देवः शेते

अग्निः + षष्ठः = अग्निष्षष्ठः, अग्निः षष्ठः

3. (क) **विसर्ग को नित्य उ–** (गुण संधि के नियम के अनुसार 'उ' को 'ओ' हो जाता है।)
यदि विसर्ग ह्रस्व अकार अ के बाद आया हो और विसर्ग के बाद भी अ हो, तो विसर्ग को र्

और 'र्' को उ हो जाता है। फिर गुण संधि के नियम से 'उ' को ओ हो जाता है; जैसे–

देवः + अगच्छत् = (वः + अ)

देव उ + अगच्छत् = देवो अगच्छत्

इसके पश्चात् स्वर संधि के अंतर्गत पूर्वरूप हो जाता है। अतः देवोऽगच्छत् हो जाता है।

मानवः + अयम् = मानवो अयम् = मानवोऽयम्

रामः + अवदत् = रामो अवदत् = रामोऽवदत्

अतः + अहम् = अतो अहम् = अतोऽहम्

(ख) **विसर्ग को नित्य उ–** यदि ह्रस्व 'अ' से परे विसर्ग हों और उसके परे हश् (ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द) हों, तो विसर्ग को र् और 'र्' को उ फिर 'उ' को ओ हो जाता है, पूर्वरूप नहीं बनता; जैसे–

स्मरामः + वयम् = स्मरामोवयम्

मनः + रमा = मनोरमा

मनः + रथः = मनोरथः

पयः + दः = पयोदः

यशः + दा = यशोदा

4. **विसर्ग का लोप–** विसर्ग से पूर्व यदि आ हो और आगे कोई स्वर या वर्गीय 3, 4, 5, य र ल व ह हों, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे–

जनाः + अवदन् = जना अवदन्

नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति

अश्वाः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति

5. **विसर्ग को र्–** अ के विसर्ग के अतिरिक्त अन्य स्वरों के विसर्ग के बाद कोई हश् वर्ण या स्वर हो, तो विसर्ग को र् हो जाता है; जैसे–

मुनिः + अवदत् = मुनिरवदत्

अग्निः + अत्र = अग्निरत्र

वह्निः + ज्वलति = वह्निर्ज्वलति

अरिः + नयति = अरिर्नयति

6. **विसर्ग को श् ष् स्–** विसर्ग के बाद च् छ्, ट् ठ् और त् थ् होने पर उनका क्रमशः श्, ष् और स् हो जाता है; जैसे–

हरिः + चञ्चलः = हरिश्चञ्चलः

नीताः + टीका = नीताष्टीका

कृष्णः + टीकते = कृष्णष्टीकते

मानवः + तरति = मानवस्तरति

7. **विसर्ग का लोप और पूर्व स्वर को दीर्घ**– यदि विसर्ग अथवा र् के बाद र हो, तो विसर्ग अथवा र् का लोप और पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है; जैसे–

पुनः + रमते पुनर् + रमते	= पुनारमते		हरिः + रम्यः हरिर् + रम्यः	= हरीरम्यः

ध्यातव्यम्

- जिन वर्णों में संधि का नियम लागू हो परिवर्तन उन्हीं वर्णों में होता है। अन्य वर्ण अपरिवर्तित रूप में यथावत् रहते हैं।
- शुद्ध व्यंजनों का स्वरों के साथ बिना किसी परिवर्तन के मिलना संयोग कहलाता है।
- संधि करने के बाद दोनों पद मिलकर एक पद बन जाते हैं।
- संधि करते समय जब भी स्वर को व्यंजन से अलग करें तो व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगा लें तथा स्वर जोड़ने पर हल् चिह्न हटा लें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संधि के मुख्य तीन भेद हैं–स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग।
2. जब परिवर्तन स्वरों के कारण हो तो स्वर संधि, व्यंजनों तथा विसर्गों के कारण हो तो क्रमशः व्यंजन तथा विसर्ग संधि कहलाती है।
3. सजातीय स्वर पास आने पर दोनों के स्थान पर उसी जाति का एक दीर्घ स्वर हो जाता है।
4. जहाँ संधि का नियम विकल्प से लागू हो वहाँ संधि किए बिना तथा संधि युक्त दोनों पद मान्य होते हैं।
5. परसवर्ण संधि में अनुस्वार पदान्त नहीं होना चाहिए तथा इसमें आगे आने वाले व्यंजन का ही पंचमाक्षर अपदान्त अनुस्वार को होगा।
6. वाक्य के अंतिम पद के अंत में अनुस्वार लगाना अशुद्ध है।
7. छत्व सन्धि में 'श्' को 'छ्' विकल्प से होता है।
8. तृतीयाक्षर नियम में पूर्व पद के अन्तिमाक्षर को ही उसी वर्ग का तृतीय वर्ण होता है।
9. मित्रवत् आना आगम कहलाता है तथा शत्रुवत् किसी को हटाकर आना आदेश कहलाता है।
10. विसर्ग का न दिखना ही उसका लोप माना जाएगा।
11. विसर्गों का र्, स्, श्, ष् और उ में परिवर्तन होता है।
12. पदों में संधि करना या न करना वक्ता/लेखक की इच्छा पर निर्भर करता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रञ्जितपदेषु सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रंगीन पदों में संधि अथवा संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. **सोऽपि** अत्र एव आगच्छति। ....+.......... (सो + अपि/सः + अपि)
2. **यदि + अपि** सः बालः विकलाङ्गः तथापि परम ज्ञानवृद्धः अस्ति। .... (यद्यापि/यद्यपि)
3. सा **गायिका** रमेशनगरे वसति। ....+.......... (गै + इका/गाय + इका)
4. भक्तः **देवालयम्** गच्छति। ....+.......... (देवा + लयम्/ देव + आलयम्)
5. वसन्ते मन्दः-मन्दः **पवनः** वहति। ....+.......... (पौ + अनः/पो + अनः)
6. **हिमालयः** भारतस्य उत्तरस्याम् स्थितः अस्ति। ....+.......... (हिमा + लयः/हिम + आलयः)
7. **मातृ + आज्ञाम्** मत्वा रामः सुखी अभवत्। .... (मातृज्ञाम्/मात्राज्ञाम्)
8. नगरे जनाः **महोत्सवे** नृत्यन्ति। ....+.......... (महो + उत्सवे/महा + उत्सवे)
9. **विद्या + अर्थिनः** ध्यानेन पठन्ति। .... (विद्यार्थीनः/विद्यार्थिनः)
10. अहम् अपि **वधू + उत्सवे** गास्यामि। .... (वध्वुत्सवे/वधूत्सवे)

II. सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(संधि अथवा संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. गण + ईशः = ...
2. चन्द्रोदय = ...+..........
3. देव + ऋषि = ...
4. चलाचले = ...+..........
5. हर्षोल्लासः = ...+..........
6. वसन्त + उत्सवे = ...
7. अप्येवम् = ...+..........
8. सिंहः + गर्जति = ...
9. एषः + अतीव = ...
10. बालः + उत्तिष्ठति = ...
11. यशोगानम् = ...+..........
12. मनः + हरः = ...
13. स्व + छन्दः = ...
14. सन्धिच्छेदः = ...
15. अतः + एव = ...

III. सन्धिम् कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत।

(संधि करके संधि का नाम भी लिखिए।)

1. अनु + छेदः = ...
2. सीता + छाया = ...
3. तत् + श्लोकेन = ...

4. तत् + श्रुत्वा = ...
3. अम् + का: = ...
6. रामस् + च = ...
7. अच् + अन्त: = ...
8. सत् + चरित्रम् = ...
9. अप् + ज: = ...
10. षट् + आनन: = ...
11. अच् + आदि: = ...

IV. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) प्रेम् + खणम्	(*i*) परिच्छेद:
(ख) यस्यच्छाया	(*ii*) लक्ष्मीच्छाया
(ग) मत् + शिर:	(*iii*) दिवङ्गत:
(घ) कण्ठ:	(*iv*) लीला + छत्रम्
(ङ) स्व + छ:	(*v*) कम् + ठ:
(च) परि + छेद:	(*vi*) स्वच्छ:
(छ) लक्ष्मी + छाया	(*vii*) यस्य + छाया
(ज) लीलाच्छत्रम्	(*viii*) मच्छिर:
(झ) दिवम् + गत:	(*ix*) प्रेङ्खणम्

V. रञ्जितेषु पदेषु सन्धिच्छेदम् कुरुत।

(रंगीन पदों में संधि-विच्छेद कीजिए।)

1. ग्रीष्मकाले **तरुच्छाया** तु जीवनम् एव। .... + ...
2. एकम् **अनुच्छेदम्** लिखत। .... + ...
3. श्री रामस्य राज्यम् **एकच्छत्रम्** आसीत्। .... + ...
4. यत्र **तरुच्छाया** तत्र पथिका:। .... + ...
5. **तच्चित्रम्** पश्य। .... + ...
6. स: **मच्छत्रु:** न अस्ति। .... + ...
7. **तच्छ्रुत्वा** स: अहसत्। .... + ...

5 समासा:

जब अनेक पद मिलकर एक पद बनाएँ तथा उनमें विभक्ति चिह्न आदि का लोप कर दिया जाए तो वहाँ समास होता है। इस प्रकार, संक्षिप्त करने की क्रिया को समास कहते हैं।

समास हो जाने पर वह एक पद समस्तपद कहलाता है। समस्तपद के शब्दों को अलग-अलग करके पुन: विभक्ति आदि लगा देना विग्रह कहलाता है। क्रियापदों में समास नहीं होता है। समास में समस्तपद के वर्णों में यदि नियम लागू होता हो तो संधि नित्य होती है। इसी तरह उपसर्ग व धातु में भी संधि होनी जरूरी होती है।

समास के भेद

समास मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष (विभक्ति, द्विगु, कर्मधारय, नञ्) समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुव्रीहि समास।

कुछ लोग द्विगु तथा कर्मधारय को अलग मानकर छ: भेद लिखते हैं।

1. अव्ययीभाव समास:

इसमें पूर्व पद अव्यय होता है तथा उत्तर पद संज्ञा पूर्व पद की प्रधानता होती है। समस्तपद बनने के बाद वह अव्यय बन जाता है तथा यह नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।

अव्ययीभाव समास विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है जिनमें से छात्रों के लिए उपयोगी कुछ प्रमुख अर्थ निम्नलिखित हैं–

1. समीप के अर्थ में 'उप' अव्यय का प्रयोग–समीप के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होगा।

वनस्य समीपम् इति उपवनम्
वृक्षस्य समीपम् इति उपवृक्षम्
वध्वा: समीपम् इति उपवधु
गुरो: समीपम् इति उपगुरु
गो: समीपम् इति उपगु
नगरस्य समीपम् इति उपनगरम्
हरे: समीपम् इति उपहरि
कृष्णस्य समीपं उपकृष्णम्

2. अभाव के अर्थ में 'निर्', 'निष्' अव्यय का प्रयोग (षष्ठी विभक्ति)

भयस्य अभाव: इति निर्भयम्
जनानाम् अभाव: इति निर्जनम्
विघ्नानाम् अभाव: इति निर्विघ्नम्
बाधानाम् अभाव: इति निर्बाधम्
फलस्य अभाव: इति निष्फलम्
दोषाणाम् अभाव: इति निर्दोषम्
मक्षिकाणाम् अभाव: इति निर्मक्षिकम्
कण्टकानाम् अभाव: इति निष्कण्टकम्

3. (क) पश्चात् के अर्थ में 'अनु' अव्यय का प्रयोग (षष्ठी विभक्ति)

रथस्य पश्चात् इति अनुरथम्
वृक्षस्य पश्चात् इति अनुवृक्षम्
लोकस्य पश्चात् इति अनुलोकम्
यमुनायाः पश्चात् इति अनुयमुनम्
शम्भोः पश्चात् इति अनुशम्भु
पुत्रस्य पश्चात् इति अनुपुत्रम्

(ख) योग्यता के अर्थ में 'अनु' अव्यय का प्रयोग (षष्ठी विभक्ति)

रूपस्य योग्यम् इति अनुरूपम्
पितुः योग्यम् इति अनुपितृ
व्रतस्य योग्यम् इति अनुव्रतम्
गुणानां योग्यम् इति अनुगुणम्

4. अनतिक्रमण (अनतिक्रम्य) के अर्थ में 'यथा' अव्यय का प्रयोग (द्वितीया विभक्ति)

समयम् अनतिक्रम्य इति यथासमयम्
बलम् अनतिक्रम्य इति यथाबलम्
शक्तिम् अनतिक्रम्य इति यथाशक्ति
मतिम् अनतिक्रम्य इति यथामति
धनम् अनतिक्रम्य इति यथाधनम्
विधिम् अनतिक्रम्य इति यथाविधि

5. पद की द्विरुक्ति (दोहराने) के अर्थ में 'प्रति' अव्यय का प्रयोग

एकम् एकम् इति प्रत्येकम्
दिने दिने इति प्रतिदिनम्
वर्षे वर्षे इति प्रतिवर्षम्
अर्थम् अर्थम् इति प्रत्यर्थम्
क्षणे क्षणे इति प्रतिक्षणम्
गृहं गृहम् इति प्रतिगृहम्

6. सहितम् सह / साकम् / सार्धम् के अर्थ में 'स' अव्यय का प्रयोग (तृतीया विभक्ति)

गर्वेण सहितम् / सह इति सगर्वम्
बलेन सहितम् / सह इति सबलम्
चित्रेण सहितम् / साकम् इति सचित्रम्
परिवारेण सहितम् / सह इति सपरिवारम्
हृदयेण सहितम् / सार्धम् इति सहृदयम्
कुशलेन सहितम्/सह इति सकुशलम्

2. तत्पुरुष समासः

विभक्तितत्पुरुषः–इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है। इसके द्वितीया से सप्तमी विभक्ति तक छः भेद हो जाते हैं।

1. द्वितीया तत्पुरुष–

गृहम् गतः इति गृहगतः
ग्रामम् गतः इति ग्रामगतः
शालाम् प्राप्तः इति शालाप्राप्तः
कृष्णम् श्रितः इति कृष्णाश्रितः
दुःखम् अतीतः इति दुःखातीतः
सुखम् आपन्नः इति सुखापन्नः

2. तृतीया तत्पुरुष–

धनेन हीनः इति धनहीनः
तेन कृतम् इति तत्कृतम्
हरिणा त्रातः इति हरित्रातः
खड्गेन छिन्नः इति खड्गछिन्नः
पादेन ऊनम् इति पादोनम्
मासेन पूर्वः इति मासपूर्वः

3. चतुर्थी तत्पुरुष–

पाठाय शाला इति पाठशाला
भूताय बलिः इति भूतबलिः
द्विजाय अयम् इति द्विजार्थः / द्विजार्थम्
बालाय अयम् इति बालार्थः / बालार्थम्
पाकाय शाला इति पाकशाला
भिक्षायै अटनम् इति भिक्षाटनम्

4. पंचमी तत्पुरुष–

भयात् भीतः इति भयभीतः

पदात् च्युतः इति पदच्युतः

वृक्षात् पतितः इति वृक्षपतितः

स्वर्गात् पतितः इति स्वर्गपतितः

व्याघ्रात् भीतः इति व्याघ्रभीतः

चौरात् भीतः इति चौरभीतः

5. षष्ठी तत्पुरुष–

देवस्य आलयः इति देवालयः

मातुः वचनम् इति मातृवचनम्

राष्ट्रस्य पतिः इति राष्ट्रपतिः

तस्य उपरि इति तदुपरि

रमायाः पतिः इति रमापतिः

मातुः आज्ञा इति मातुराज्ञा

राज्ञः पुरुषः इति राजपुरुषः

तस्य पुरुषः इति तत्पुरुषः

6. सप्तमी तत्पुरुष–

कार्ये कुशलः इति कार्यकुशलः

मध्ये अन्तरः इति मध्यान्तरः

आतपे शुष्कः इति आतपशुष्कः

वेदेपण्डितः इति वेदपण्डितः

जले मग्नः इति जलमग्नः

अध्ययने रतः इति अध्ययनरतः

7. नञ् तत्पुरुष–निषेध अर्थ में होनेवाले समास को नञ् समास कहते हैं।

न सन्देहः इति असन्देहः

न अन्तः इति अनन्तः

न एकः इति अनेकः

न सत्यम् इति असत्यम्

न आदिः इति अनादिः

न हिंसा इति अहिंसा

8. उपपद तत्पुरुष–जब समास में पूर्वपद के साथ धातु से बना कोई शब्दांश आए और क्रियापद को शब्द बनाया जाए तब उपपद तत्पुरुष होता है।

उपपद = पूर्वपद

जलं ददाति इति जलदः

द्वाभ्याम् पिबति इति द्विपः

निशां करोति इति निशाकरः

भयं करोति इति भयंकरः

पङ्के जायते इति पङ्कजः

कुम्भं करोति इति कुम्भकारः

सुखं करोति इति सुखकरः

9. कर्मधारय समास–जब पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो तो कर्मधारय (तत्पुरुष) समास होता है। यहाँ दोनों पद प्रधान होते हैं।

महान् पुरुष/महान् च असौ पुरुषः इति महापुरुषः

उन्नतः पर्वतः/उन्नतः च असौ पर्वतः इति उन्नतपर्वतः

नीलम् कमलम्/नीलम् च तत् कमलम् इति नीलकमलम्

चतुरः बालः/चतुरः च असौ बालः इति चतुरबालः

श्रेष्ठा बाला/श्रेष्ठा च इयम् बाला इति श्रेष्ठबाला

उत्तमाः जनाः/उत्तमाश्च ते जनाः इति उत्तमजनाः

उपर्युक्त सभी समस्तपदों में प्रथमपद विशेषण है; यथा–महा, उन्नत, नील आदि तथा उत्तरपद विशेष्य है; यथा–पुरुषः, पर्वतः, कमलम् आदि।

तुलनावाची उदाहरण / उपमान-उपमेय

जहाँ **उपमान** तथा **उपमेय विशेषण-विशेष्य** का स्थान ले लेते हैं, वहाँ **तुलना** के लिए **इव** (के समान) लगता है; जैसे–

दुग्धम् इव धवलम्	=	दुग्धधवलम्	घन: इव श्याम:	=	घनश्याम:
पुरुष: सिंह: इव	=	पुरुषसिंह:	मृगी इव चपला	=	मृगीचपला
चरणम् कमलम् इव	=	चरणकमलम्	मुखम् पद्मम् इव	=	मुखपद्मम्

द्विगु समास–यह समास कर्मधारय का एक भेद है। जहाँ पूर्वपद संख्यावाची हो वहाँ **द्विगु (तत्पुरुष)** समास होता है।

त्रयाणां लोकानाम् समाहार: = **त्रिलोकी**
शतस्य अब्दानाम् समाहार: = **शताब्दी**
सप्तानाम् अह्नाम् समाहार: = **सप्ताह:**
चतुर्णाम् युगानाम् समाहार: = **चतुर्युगम्**
त्रयाणाम् फलानाम् समाहार: = **त्रिफला / त्रिफलम्**
नवानां रात्रीणां समाहार: = **नवरात्रम् / नवरात्रि**

3. द्वन्द्व समास:

इस समास में समाहार (समूह) अर्थ में समास होता है तथा दोनों या सभी पद प्रधान होते हैं। यह समास **च** के अर्थ में होता है। इसके विग्रह में प्रत्येक पद के साथ च का प्रयोग होता है।

1. **इतरेतर द्वन्द्व**–द्वन्द्व के इस भेद में व्यक्तिवाचक समस्तपद का लिंग तथा वचन अंतिम शब्द के अनुसार होता है पर कहीं-कहीं ऐसा नहीं भी होता।

राम: च लक्ष्मण: च	=	रामलक्ष्मणौ	सीता च राम: च	=	सीतारामौ
कन्दं च मूलं च फलं च	=	कन्दमूलफलानि	धर्म: च अर्थ: च काम: मोक्ष: च	=	धमार्थकाममोक्षा:
माता च पिता च	=	मातापितरौ	पत्रं च पुष्पम् च फलानि च	=	पत्रपुष्पफलानि
नकुल: च सहदेव: च	=	नकुलसहदेवौ	पशवा: च खगा: च	=	पशुखगा:

2. **समाहार द्वन्द्व**–इसमें दोनों पद जातिवाचक प्रधान न होकर सामुदायिक (सामूहिक) अर्थ प्रधान होता है। यह हमेशा नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।

पाणी च पादौ च एषां समाहार:	=	पाणीपादम्	शीतं च उष्णं च अनयो: समाहार:	=	शीतोष्णम्
सर्प: च नकुल: च तयो: समाहार:	=	सर्पनकुलम्	सुखं च दु:खं च एतयो: समाहार:	=	सुखदु:खम्
चर: च अचर: च एतयो: समाहार:	=	चराचरम्	दन्ता: च औष्ठौ च तेषां समाहार:	=	दन्तोष्ठम्

3. **एकशेष द्वन्द्व**–इसमें जोड़े के दोनों पदों में से एक शेष रहता है।

माता च पिता च – पितरौ	अजा च अजश्च – अजौ
भ्राता च भगिनी च – भ्रातरौ	नर: च नारी च – नरौ

4. बहुव्रीहि समासः

इसमें दोनों पदों में से कोई भी प्रधान नहीं होता, अपितु कोई अन्य तीसरा पद प्रधान होता है, जिसकी तरफ दोनों पद संकेत करते हैं।

पीतम् अम्बरम् यस्य सः	=	पीताम्बरः	नीलम् अम्बरम् यस्य सः	=	नीलाम्बरः
नीलः कण्ठः यस्य सः	=	नीलकण्ठः	महान् आत्मा यस्य सः	=	महात्मा
भीमः पराक्रमः यस्य सः	=	भीमपराक्रमः	नष्टा शक्तिः यस्य सः	=	नष्टशक्तिः
दुष्टा प्रजा यस्य सः	=	दुष्टप्रजा	शुष्कं कण्ठं यस्य सः	=	शुष्ककण्ठः

ध्यातव्यम्

- समास होने पर सभी पदों में संधि होकर एक ही समस्तपद बन जाता है।
- समस्तपद का विग्रह करते समय उपपद विभक्ति के नियमों का भी ध्यान करना चाहिए।
- क्रियापदों में समास नहीं किया जाता है।
- अव्ययीभाव समास में अव्यय के अर्थ को ध्यान में रखकर ही विग्रह करना चाहिए।
- समास शब्दों तथा वाक्यों के संक्षिप्तीकरण के लिए किया जाता है तथा समास करना या न करना कर्ता की विवक्षा पर निर्भर होता है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. समास के मुख्यतः चार भेद होते हैं। कुछ विद्वान् द्विगु तथा कर्मधारय को अलग मानते हैं। उनके अनुसार समास के छह भेद होते हैं।
2. अव्ययीभाव समास में पूर्वपद अव्यय होता है तथा समस्तपद नपुंसकलिंग एकवचन में होता है।
3. तत्पुरुष समास में द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति के आधार पर समास के छह भेद होते हैं।
4. समास में पूर्वपद के साथ धातु से बना पद हो जो क्रियापद का शब्द रूप हो तो उपपद तत्पुरुष समास होता है।
5. जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि द्वि, त्रि इत्यादि संख्यापद जहाँ पूर्वपद के रूप में हों वहाँ कर्मधारय समास का भेद द्विगु समास कहलाता है।
6. जहाँ विशेषण-विशेष्य तथा उपमान-उपमेय में समास हो वहाँ कर्मधारय समास होता है।
7. द्वन्द्व समास में नाम की ही तरह; जैसे-द्वन्द्व युद्ध दो समान रूप से शक्तिशालियों में होता है, उसी तरह इसमें भी दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।
8. बहुव्रीहि में तीसरा (अन्य) पद प्रधान होता है जो दोनों पदों में स्पष्टतः लक्षित नहीं होता।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा गद्यांशयोः रञ्जितपदेषु विग्रहम् कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर के रंगीन पदों में विग्रह कीजिए।)

(क) एकस्मिन् नगरे एकः (1) **महात्मा** (महत् आत्मा/महान् चासौ आत्मा) आगच्छत्। सः वने (2) **कन्दमूलफलानि** (कन्दमूलफलम् च/कन्दम् च मूलं च फलं च) खादति स्म। एकः (3) **बहुफलः** (बहवः फलानि यस्मिन् सः/बहूनि फलानि यस्मिन् सः) वृक्षः तत्र आसीत्। सः फलानि त्रोटयित्वा अखादत्। तदा एकः (4) **सुबुद्धिः** (शोभना बुद्धि यस्याः सा/शोभना बुद्धिः यस्य सः) तत्र आगच्छत् तम् च अकथयत् यत् (5) **महावीरः** (महानतः चासौ वीरः/महान् चासौ वीरः) मालाकारः अत्र एव आगच्छति। सः तुभ्यं क्रोत्स्यति अतः गच्छ इतः।

(ख) एकदा मूलशंकरः पित्रा सह (1) **शिवालयम्** (शिवालस्य अयम्/शिवस्य आलयम्) अगच्छत् तस्य पिता (2) **नीलकण्ठस्य** (नीलः कण्ठः यस्य सः/नीलः कण्ठः यस्य सः, तस्य) उपासकः आसीत्। रात्रौ सः अपश्यत् एकः मूषकः (3) **शिवप्रतिमायाः** (शिवे प्रतिमायाः/शिवस्य प्रतिमायाः) उपरि आगत्य सर्वम् नैवेद्यम् अभक्षयत्। सः (4) **धर्मबुद्धिः** (धर्मात् बुद्धिः यस्याः सः/धर्मे बुद्धिः यस्य सः) बालः अचिन्तयत् यत् (5) अयम् **जगदीशः** (जगतस्य ईशः/जगतः ईशः) आत्मानं रक्षितुम् अपि असमर्थः अस्ति।

II. रञ्जितपदेषु समासं विग्रहं वा कृत्वा लिखत।

(रंगीन पदों में समास अथवा विग्रह करके लिखिए।)

1. **देशसेवा** अस्माकं परमं कर्त्तव्यम् अस्ति। ....
2. मुनयः **कन्दमूलफलानि** खादन्ति। ....
3. **चतुराननस्य** नाम कमलासनः अपि अस्ति। ....
4. **रामः च रमा च** पाठं स्मरतः। ....
5. **विमलोदका** गंगा हिमालयात् निस्सरति। ....
6. सः वीरः **शास्त्रपारङ्गतः** अपि अस्ति। ....
7. **दश आननानि यस्य सः** एकः राक्षसः आसीत्। ....
8. विद्यालयस्य **पुस्तकालयः** अति विशालः अस्ति। ....
9. **निर्गतं भयं यस्मात् सः** वानरः वृक्षात् अवतरत्। ....
10. शिक्षकः **धर्मविदः** अपि अस्ति। ....
11. एषः विशालः **ग्रन्थालयः** मम अस्ति। ....
12. **देवदत्तसिद्धार्थयोः** मध्ये विवादः जातः। ....
13. **मदोन्मत्तः** गजः शनैः शनैः चलति। ....

14. पितरौ सदा वन्दनीयौ भवतः। ....

15. सन्दीपः विमलमतिः अस्ति। ....

16. मयूरः भारतस्य राष्ट्रपक्षी अस्ति। ....

17. श्वेतम् अम्बरं यस्य सः वने अवसत्। ....

18. विमूढ़धी एव अपक्वम् फलं खादति। ....

19. शुष्ककण्ठः बालः जलम् पिबति। ....

20. एषः सर्पः तु भयंकरः अस्ति। ....

21. विद्यालये छात्राः पठन्ति। ....

III. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रञ्जितपदेषु समासं विग्रहं वा कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रंगीन पदों में समास अथवा विग्रह कीजिए।)

1. पीतं दुग्धं येन सः बालः सुखेन स्वपति। ....
   (पीतदुग्धम्/पीतदुग्धः)
2. उलूकः शुभाननः एव भवति। ....
   (शुभः आननः यस्य सः/शुभम् आननम् यस्य सः)
3. अस्य दर्शनम् प्रतिदिनम् प्रातः काले कर्त्तव्यम्। ....
   (दिनः दिनः इति/दिने दिने इति)
4. चक्रपाणिः त्राहि माम्। ....
   (चक्रम् पाणम् यस्य सः/चक्रं पाणौ यस्य सः)
5. निर्भयः बालः सिंहेन सह क्रीडति। ....
   (निर्गतः भयः यस्मात् सः/निर्गतम् भयम् यस्मात् सः)
6. अर्जुनस्य सारथिः पीतानि अम्बराणि यस्य सः आसीत्। ....
   (पीताम्बरम्/पीताम्बरः)
7. माता च पिता च पूजायोग्यौ भवतः। ....
   (पितरः/पितरौ)
8. गंगायाः समीपम् ऋषयः तपन्ति। ....
   (उपगंगः/उपगंगम्)
9. तडागे रक्तानि कमलानि विकसन्ति। ....
   (रक्तकमलानी/रक्तकमलानि)
10. वृक्षारूढाः वानराः कूर्दन्ति। ....
    (वृक्षस्य आरुढा/वृक्षम् आरूढाः)

IV. रञ्जितपदानां समासं विग्रहं वा उचितरूपेण कृत्वा समासानां नामानि लिखत।

(रंगीन पदों में उचित रूप से समास अथवा विग्रह कर समासों का नाम लिखिए।)

1. पक्वानि आम्राणि **वृक्षात् पतितानि** सन्ति। ....
2. **पार्वतीपरमेश्वरौ** शब्दार्थौ इव सम्पृक्तौ स्तः। ....
3. **चपलाः वानराः** इतस्ततः धावन्ति। ....
4. **वीराः पुरुषाः** यस्मिन् सः ग्रामः धन्यः। ....
5. शरीरमाद्यं खलु **धर्मस्य साधनम्**। ....
6. **कृष्णमेघाः** वर्षन्ति। ....
7. यूयम् **यथाशक्ति** परिश्रमं कुरुत। ....
8. तत् स्थानं तु **निर्जनम्** अस्ति। ....
9. **पञ्चनदम्** यत्र तत्र गन्तुमिच्छन्ति। ....
10. रामः **अनुमृगम्** धावति। ....

V. समस्तपदैः सह विग्रहान् मेलयत।

(समस्त पदों के साथ विग्रहों का मिलान कीजिए।)

समासः	विग्रहः
(क) प्रतिदिनम्	(*i*) वृक्षस्य मूलम्
(ख) सम्पूर्णघटः	(*ii*) नीलम् कमलम्
(ग) विद्याहीनः	(*iii*) कार्येषु निपुणः
(घ) पीताम्बरः	(*iv*) दिने दिने
(ङ) नीलकमलम्	(*v*) पीतानि अम्बाराणि यस्य सः
(च) कार्यनिपुणः	(*vi*) सम्पूर्णः घटः
(छ) वृक्षमूलम्	(*vii*) विद्यया हीनः

6 पर्यायाः एवम् विपर्ययाः

पर्यायाः

पर्याय पद 'परि' उपसर्ग के साथ 'इ' धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से बना है। इसका अर्थ है– परावर्तन या समान अर्थ। आप तो जानते ही हैं कि विश्व में एकमात्र संस्कृत ही ऐसी भाषा है जहाँ एक अर्थ वाले अनेक पद/शब्द होते हैं। उदाहरणस्वरूप जल को ही ले लीजिए। अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच इत्यादि भाषाओं में इसके निश्चित रूप से दस–बीस पर्याय शब्द होने भी बहुत बड़ी बात है, पर संस्कृत भाषा में 'जल' शब्द के लिए ही सौ से भी अधिक पर्याय पद हैं। आइए, कुछ पर्यायवाची शब्दों को जानें–

1. अश्ववाहकः = अश्ववारः
2. पदार्थः = द्रव्यम्
3. विश्रुतिः = विख्यातः
4. सुरदुन्दुभिः = वृन्दा
5. सुरः = देवः
6. सूक्ष्मः = अणुः
7. कलत्रम् = पत्नी
8. कालिन्दी = यमुना
9. चन्द्रिका = ज्योत्स्ना, कौमुदी
10. कुञ्जरः = गजः
11. श्यालः = श्यालकः (पत्नी का भाई)
12. शेमुषी = बुद्धिः
13. सुषुप्ता = सुप्ता
14. वारम्वारम् = मुहुर्मुहुः
15. सर्वः = सकलः
16. तीक्ष्णः = प्रखरः
17. प्रकर्षम् = उन्नतिः
18. नित्यः = शाश्वतः, ध्रुवः
19. क्षरः = नश्वरः, विनाशी
20. विद्युत् = तडित्, चपला
21. आतपः = सूर्यप्रकाशः (धूप)
22. तरंगः = ऊर्मिः, वीचिः (लहर)
23. स्थलम् = स्थानम्
24. सोमवासरः = चन्द्रवासरः, इन्दुवासरः
25. गुरुवारः = भृगुवारः, वृहस्पतिवारः
26. दिनांकदर्शकः= दिनांकी (कैलेण्डर)
27. गृंजनम् = गाजरम्, गर्जरम्
28. पुंडरीकम् = श्वेतकमलम्
29. पेरुकः = अमृतफलः (अमरूद का पेड़)
30. गुहा = कन्दरः (गुफा)
31. आर्जवम् = सरलता
32. धैर्यः = धृतिः
33. उद्धतः = धृष्टः
34. नृत्यम् = नर्तनम्, लास्यम्, ताड्यम्
35. स्युतकः = गोहः, स्यूतः (जेब)
36. विदेशः = अन्यदेशः, परदेशः
37. विद्या = शिक्षा, ज्ञानम्
38. परलोकः = अन्यलोकः
39. धर्मः = कर्त्तव्यः, करणीयः
40. मौनम् = तूष्णीम्

41. अजीर्णम् = अपाचनम्
42. समम् = सदृशम्
43. तप: = तपस्या
44. सिंह: = मृगपति:, मृगेन्द्र:
45. धनिक: = श्रेष्ठ:
46. उत्तम: = श्रेष्ठ:
47. अति = अतीव
48. सगुण: = गुणवान्
49. सगुणा = गुणवती
50. नीरस: = शुष्क:
51. आभरणम् = आभूषणम्
52. क्रूर: = दयाहीन:
53. लक्ष्मी = इन्दिरा
54. तत्पर: = सज्ज:
55. प्राप्य = आप्त्वा, लब्ध्वा
56. दृष्ट्वा = वीक्ष्य, प्रेक्ष्य
57. निरीक्ष्य = परीक्ष्य
58. तप्त: = दु:खी
59. एव = हि, खलु, निश्चितरूपेण, नूनम्
60. लोक: = संसार:
61. भिक्षुक: = याचक:, अर्थी
62. रोटिका = करपट्टिका
63. अचिरम् = शीघ्रम्, त्वरितं
64. शुभकामना = शुभेच्छा, शुभाशंसा
65. त्रुटि: = दोष:
66. रत: = लीन:
67. पूर्ण: = पूरित:
68. उदयति = उदेति
69. तम: = अन्धकार:
70. ज्योति: = प्रकाश:
71. विद्यालय: = विद्यायतनम्
72. कल्याणम् = मङ्गलम्, भद्रम्
73. विहाय = त्यक्त्वा
74. दोष: = विकार:
75. सायम् काल: = सन्ध्या काल:
76. प्रात: = प्रभातम्
77. उलूक: = दिवाभीत:, कौशिक:, घूक:
78. दुर्बल: = अशक्त:, शक्तिहीन:, बलहीन:
79. द्रविणम् = धनम्, अर्थ:, वित्तम्
80. निरामय: = निरोगी
81. नौका = तरिणी
82. बाल: = बालक:
83. पुष्पमंजरी = पुष्पगुच्छ:
84. मूढ: = मूर्ख:, अज्ञानी
85. प्रतिज्ञा = दृढ़ निश्चय:
86. दरिद्र: = निर्धन:, धनहीन:
87. तिथि: = तारिका
88. सहसा = अविचार्य
89. सह = साकम्, सार्धम्
90. बाढम् = आम्
91. मति: = प्रज्ञा
92. सभा = गोष्ठी
93. व्यसनम् = कार्यम्, व्यापार:
94. शैत्य: = शिशिर:
95. वज्र: = कुलिश:
96. खल: = दुर्जन:, दुष्ट:
97. साधु: = सज्जन:
98. आगन्तुक: = अतिथि:
99. अम्बा = जननी
100. पिता = जनक:

विपर्ययाः

विपर्यय पद 'वि' उपसर्ग' तथा 'परि' उपसर्ग के साथ 'इ' धातु में 'अच्' प्रत्यय लग कर बना है। इसका अर्थ है–वैपरीत्य अथवा व्यतिक्रम। विपरीत अर्थ वाले पदों को विपर्ययपद कहते हैं। इसके लिए पदों में विपरीत भाव होना आवश्यक है। पर्यायों के समान विपर्यय भी अनेक होते हैं। कुछ उदाहरण देख लीजिए–

1. इच्छा	=	अनिच्छा	18. नक्तम्	=	दिनम्	35. अग्रत:	=	पृष्ठत:
2. व्यवस्था	=	अव्यवस्था	19. दिनकर:	=	निशाकर:	36. वामत:	=	दक्षिणत:
3. मानव:	=	दानव:	20. श्वेत:	=	कृष्ण:	37. छाया	=	आतप:
4. द्युलोक:	=	भूलोक:	21. क्रोधी	=	विनोदप्रिय:	38. निर्गत:	=	आगत:
5. सुराष्ट्रम्	=	कुराष्ट्रम्	22. क्रोध:	=	विनोद:	39. शोक:	=	अशोक:
6. प्रयाता/गता	=	आगता	23. विकास:	=	ह्रास:	40. दृश्यम्	=	अदृश्यम्
7. स्वकीया	=	परकीया	24. गणयित्वा	=	अगणयित्वा	41. विस्मृत्य	=	स्मृत्वा
8. मामक:	=	त्वदीय:	25. कोलाहल:	=	शान्ति:	42. साध्यम्	=	असाध्यम्
9. सरल:	=	वक्र:	26. कीर्ति:	=	अपकीर्ति:	43. सूर्योदय:	=	सूर्यास्त:
10. रक्षक:	=	भक्षक:	27. सिद्धि:	=	असिद्धि:	44. प्राचीना	=	नवीना
11. मतम्	=	अमतम्	28. नय	=	आनय	45. चेतन:	=	अचेतन:
12. गत्वा	=	आगत्य	29. समीपे	=	दूरे	46. कृतज्ञ:	=	कृतघ्न:
13. मूढ:	=	चतुर:	30. पवित्रम्	=	अपवित्रम्	47. परुषा	=	कोमला
14. सहितम्	=	रहितम्	31. सम्मानम्	=	तिरस्कारम्	48. वृद्धा	=	युवती
15. उद्योगी	=	अलस:	32. न्यून:	=	पर्याप्त:	49. विवेक:	=	अविवेक:
16. लाभ:	=	अलाभ:	33. विलम्बात्	=	शीघ्रत:	50. सर्वदा	=	यदा-कदा
17. जय:	=	पराजय:	34. दूरत:	=	समीपत:	51. सज्जन:	=	दुर्जन

ध्यातव्यम्

- पर्याय अथवा विपर्यय लिखते समय वचन का हमेशा ध्यान रखें कि दोनों पदों का वचन एक हो।
- पर्याय अथवा विपर्यय पदों में समान विभक्ति होनी चाहिए। यदि 'नृपस्य' पद है तो पर्याय 'राज्ञ:' होना चाहिए।
- यदि संख्या निर्दिष्ट न हो तो केवल एक ही पर्याय अथवा विपर्यय लिखना पर्याप्त है।
- पर्यायों के लिंग अलग-अलग हो सकते हैं; जैसे–विद्या का पर्याय 'शिक्षा' स्त्रीलिंग पर 'ज्ञानम्' नपुंसकलिंग है।
- कभी-कभी विपर्यय पदों का लिंग भिन्न-भिन्न हो जाता है।
- बिना पद बनाए पर्याय या विपर्यय का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- एक जैसे लगने वाले पदों के अर्थों पर विशेष रूप से ध्यान दें।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोप्रदत्तान् चित्रान् दृष्ट्वा तेषाम् द्वौ पर्यायौ लिखत। सहायतया मञ्जूषा दत्ता अस्ति।

(नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। सहायता के लिए मंजूषा दी गई है।)

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

7. ....

8. ....

9. ....

10. ....

11. ....

12. 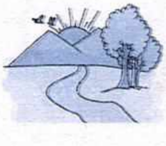 ....

13. ....

14. ....

15. ....

16. ....

17. ....

18. ....

19. ....

20. 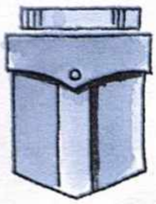 ....

दिनाङ्कदर्शक:, दिनांकी, आभूषणम्, आभरणम्, इन्दिरा, लक्ष्मी, अशक्त:, शक्तिहीन:, प्रात:, प्रभातम्, अतिथि:, आगन्तुक:, बाल:, बालक:, याचक:, अर्थी, नौका, तरिणी, वित्तम्, अर्थ:, मृगेन्द्र:, मृगपति:, पुष्पमंजरी, पुष्पगुच्छ:, सायंकाल:, सन्ध्याकाल:, दोष:, विकार:, उलूक:, दिवाभीत:, विद्यायतनम्, पाठशाला, नर्तनम्, लास्यम्, विद्युत्, तड़ित्, गृञ्जनम्, गर्जरम्, गोह:, स्यूत:

II. विपर्ययानां समुचितं मेलनं कुरुत।

(विलोम शब्दों का उचित मिलान कीजिए।)

(क) न्यून:	(*i*) कृतघ्न:
(ख) मानव:	(*ii*) सूर्यास्त:
(ग) द्युलोक:	(*iii*) अविवेक:
(घ) सरल:	(*iv*) नवीना
(ङ) रक्षक:	(*v*) अदृश्यम्
(च) दृश्यम्	(*vi*) भक्षक:
(छ) प्राचीना	(*vii*) भूलोक:
(ज) सूर्योदय:	(*viii*) दानव:
(झ) विवेक:	(*ix*) वक्र:
(ञ) कृतज्ञ:	(*x*) पर्याप्त:

III. अधोलिखितपदानाम् पर्यायाः वर्गप्रहेलिकायाः चित्वा लिखत।

(निम्नलिखित शब्दों के पर्याय वर्ग-पहेली से चुनकर लिखिए।)

क्रू	रः	स	ज्जः	[1] अ
प्तः	[10] रो	टि	का	चि
[6,7,8] त	मः	त्त	[9] उ	र
पः	[4] प्रा	[2] मौ	न	म्
[3] र	तः	भी	वा	[5] दि

1. शीघ्रम्
2. तूष्णीम्
3. लीनः
4. प्रभातम्
5. उलूकः
6. अन्धकारः
7. तपस्या
8. दुःखी
9. श्रेष्ठः
10. करपट्टिका

1. .... 2. .... 3. ....

4. .... 5. .... 6. ....

7. .... 8. .... 9. ....

10. ....

IV. अधोलिखितानां पर्यायानां समुचितं मेलनं कुरुत।

(निम्नलिखित पर्यायों का उचित मिलान कीजिए।)

(क) कुञ्जरः	(*i*) ऊर्मिः
(ख) सूक्ष्मः	(*ii*) शाश्वतः
(ग) अश्ववाहकः	(*iii*) प्रखरः
(घ) शेमुषी	(*iv*) अश्ववारः
(ङ) क्षरः	(*v*) सुप्ता
(च) नित्यः	(*vi*) धृति
(छ) तीक्ष्णः	(*vii*) गजः
(ज) सुषुप्ता	(*viii*) अणुः
(झ) धैर्यः	(*ix*) नश्वरः
(ञ) तरंगः	(*x*) बुद्धिः

V. अधोलिखितपदानाम् विपर्ययाः वर्गप्रहेलिकायाः चित्वा लिखत।

(निम्नलिखित शब्दों के विलोम वर्ग-पहेली से चुनकर लिखिए।)

[10] स	ज्ज	नः	[4] आ	द्धा
[3] प	र्या	प्तः	ग	[9] वृ
[5] स	मी	प	तः	म्
नः	त	[8] चे	[6] श्वे	न
[7] न्यू	रः	क	न	[2,1] दि

1. नक्तम्
2. निशाकरः
3. न्यूनः
4. निर्गतः
5. दूरतः
6. कृष्णः
7. पर्याप्तः
8. अचेतनः
9. युवती
10. दुर्जन

1. .... 2. .... 3. ....

4. .... 5. .... 6. ....

7. .... 8. .... 9. ....

10. ....

7 अव्ययाः

अव्यय नित्यपद होते हैं। लिंग, विभक्ति तथा वचन के कारण इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता अर्थात् तीनों लिंगों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में ये पद सदा अपरिवर्तित या एक ही रूप में रहते हैं।

आइए, प्रमुख अव्ययों के अर्थ एवं उनके प्रयोग को जानें–

अव्यय	अर्थ	वाक्य
1. अपि	भी	रामेण सह सीता अपि गच्छति।
2. इति	ऐसा (इतना)	सः अकथयत्–'आगच्छामि' इति।
3. इव	के समान	सुरांगना इव भासते सा।
4. उच्चैः	जोर से, ऊँचा	सः उच्चैः वदति।
5. एव	ही	सः एव चौरः अस्ति।
6. कदा	कब	त्वम् गृहम् कदा गमिष्यसि?
7. कुतः	कहाँ से	त्वम् कुतः आगच्छसि?
8. खलु	निश्चय ही	सा खलु साम्राज्ञी एव।
9. नूनम्	अवश्य ही	सः नूनम् आगमिष्यति।
10. पुरा	पहले/प्राचीन काल में	पुरा एका नगरी आसीत् 'द्वारका'।
11. मा	मत	पुष्पाणि मा त्रोटय।
12. इतस्ततः	यहाँ–वहाँ	कुक्कुरः भोजनाय इतस्ततः भ्रमति।
13. विना	बिना	विद्यां विना जीवनम् वृथा भवति।
14. सहसा	अचानक/बिना सोचे	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15. श्वः	आनेवाला कल	श्वः अहम् विद्यालयम् न गमिष्यामि।
16. ह्यः	बीता हुआ कल	ह्यः अवकाशः आसीत्।
17. अधुना	अब	अधुना रमा एकम् गीतम् गास्यति।
18. बहिः	बाहर	गृहात् बहिः आगच्छ।
19. वृथा	व्यर्थ	दिवसे दीपकः वृथा। समयः वृथा मा यापय।
20. कदापि	कभी भी	सः कदापि असत्यम् न वदति।
21. शनैः	धीरे	गजः शनैः चलति।
22. किमर्थम्	क्यों/किसलिए	त्वम् किमर्थम् असत्यम् वदसि?

23.	यत्-तत्	जो, वह	यत् सत्यम् तत् एव शोभनम्।
24.	अत्र-तत्र	यहाँ-वहाँ	अत्र सर्वे पठन्ति परं तत्र सर्वे क्रीडन्ति।
25.	यत्र-तत्र	जहाँ-वहाँ	यत्र धूमः तत्र अग्निः।
26.	यथा-तथा	जैसे-वैसे	यथा पिता तथा पुत्र।
27.	यदा-कदा	कभी-कभी	अहम् यदा-कदा एव तत्र गच्छामि।
28.	यावत्-तावत्	जब तक-तब तक	यावत् सः आगच्छति तावत् त्वम् अत्र एव तिष्ठ।
29.	चित्/चन	अनिश्चयवाचक शब्द	कश्चित् पुरुषः अत्र तिष्ठति। केचन अत्र धावन्ति। कथञ्चन अपि विरोधः न कुर्यात्।
30.	यदा-तदा	जब-तब	यदा त्वम् खादसि तदा अहम् अपि खादामि।
31.	मन्दम्-मन्दम्	धीरे-धीरे	पवनः मन्दम्-मन्दम् वहति।
32.	मुहुर्मुहुः	बार-बार	शिशुः मुहुर्मुहुः हसति।
33.	यतः-ततः	जहाँ से-वहाँ से	यतः त्वम् आगच्छः ततः अहम् अपि आगच्छम्।
34.	मृषा	झूठ	त्वम् मृषा मा वद।
35.	दिवा	दिन में	दिवा सूर्यः भासते।
36.	नक्तम्	रात को	नक्तम् दधि मा खादत।
37.	इदानीम्	इस समय	इदानीम् त्वम् इतः गच्छ।
38.	आम्	हाँ	आम्, अहम् तत्र अगच्छम्।
39.	अन्यत्र	कहीं और (दूसरी जगह)	धनम् अन्यत्र रक्ष।
40.	अत्र	यहाँ	अत्र हरिताः वृक्षाः सन्ति।
41.	अधस्तात्	नीचे	वृक्षात् अधस्तात् आगच्छ।
42.	अन्तः	अंदर	गृहस्य अन्तः उपविश।
43.	इह	यहाँ	ईश्वरः इहैव अस्ति।
44.	कुत्र	कहाँ	त्वम् कुत्र गमिष्यसि?
45.	परितः	चारों तरफ	दुर्गम् परितः परिखा अस्ति।
46.	सर्वत्र	सब जगह	ईश्वरः सर्वत्र विराजते।
47.	झटिति	झटपट	झटिति अत्र आगच्छ।
48.	नोचेत्	नहीं तो	यथासमयं विद्यालयं गच्छ, नोचेत् दण्डं प्राप्स्यसि।
49.	च	और	रामः सीता च सिंहासने तिष्ठतः।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. अव्ययों के प्रयोग में लिंग, विभक्ति तथा वचन के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। वे हमेशा समान रूप में प्रयुक्त होते हैं।
2. **श्वः** का प्रयोग **भविष्यत् काल** के लिए, **अद्य** का **वर्तमानकाल** के लिए तथा **ह्यः** का **भूतकाल** के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषाप्रदत्तैः अव्ययपदैः अधोलिखितेषु अनुच्छेदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत।

(निम्नलिखित अनुच्छेदों में मंजूषा में दिए गए अव्यय पदों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) ते जनाः (1)................... धन्याः ये (2)................... निरुत्साहिताः न भवन्ति। ते (3)................... धन्याः, ये (4)................... न वदन्ति। ते (5)................... गच्छन्ति तत्र-तत्र साफल्यम् प्राप्नुवन्ति।

कदापि, एव, वृथा, अपि, यत्र-यत्र

(ख) सज्जनाः (1)................... चिन्तयन्ति यत् कार्यं (2)................... तु जीवनम् (3)................... व्यर्थम्। तेषाम् अस्मिन् एव कथने विश्वासः भवति यत् कार्यं तु (4)................... करणीयम् श्वः (5)...................।

न, विना, सदैव, एव, अधुना

(ग) भो छात्राः कोलाहलम् (1)................... कुरु। (2)................... सत्यम् वद। कदापि (3)................... मा वद। समयं (4)................... मा यापय। सदा आचार्यम् प्रणम्य (5)................... कक्षायाम् पठ।

एव, मृषा, मा, सदैव, वृथा

(घ) (1)................... एकः नृपः आसीत्। तस्य एकः सचिवः (2)................... कथयति स्म-ईश्वरः (3)................... करोति (4)................... शोभनम् करोति। संकटेऽपि सः (5)................... विचलितः न भवति।

कदापि, तत्, पुरा, यत्, सदैव

(ङ) हितम् मनोहारि (1)................... दुर्लभं वचः।
(2)................... नार्यः तु पूज्यन्ते रमन्ते (3)................... देवता।
विद्यावान (4)................... पूज्यते।
सत्यम् (5)................... मृगेन्द्रता।

एव, सर्वत्र, च, तत्र, यत्र

(च) अहम् (1)……………… तव गृहे न आगमिष्यामि। मम संस्कृतस्य परीक्षा (2)……………… भविष्यति। तव संस्कृतपरीक्षा (3)……………… भविष्यति? मम अम्बा प्रतीक्षां करोति। अतः अहम् (4)……………… चलामि। गृहम् गत्वा (5)……………… पाठम् स्मरामि।

श्वः, कदा, अद्य, च, शीघ्रम्

(छ) एतत् उपवनम् मनोहरम् अस्ति। यः पुष्पाणि त्रोट्यति (1)……………… सः मालाकारः एव। जनाः तु (2)……………… चलन्ति परम् एका वृद्धा (3)……………… चलति। सः मालाकारः अत्र (4)……………… आगच्छति। अहम् (5)……………… तेन सह पुष्पाणि त्रोट्यामि।

शीघ्रम्, अपि, नूनम्, शनैः-शनैः, एव

(ज) (1)……………… बुधवासरः आसीत्। (2)……………… बृहस्पतिवासरः अस्ति। (3)……………… शुक्रवासरः भविष्यति। शुक्रवासरे (4)……………… वयम् स्वमातुलस्य गृहे गमिष्यामः। मम पितामहः पितामही चापि (5)……………… एव स्तः।

अद्य, ह्यः, तत्र, एव, श्वः

(झ) जलं (1)……………… कस्य जीवनम्?

(2)……………… तव गृहे कः आगतः?

(3)……………… कर्म……………… फलम्।

कच्छपः (4)……………… गच्छति परम् मृगः (5)……………… धावति।

शनैः, तीव्रम्, यथा-तथा, ह्यः, विना

(ञ) सभायाम् (1)……………… न हसितव्यम्। (2)……………… शोभनम् व्यवहारम् (3)……………… करणीयम् (4)……………… मुख्यातिथिः आगच्छेत् (5)……………… तस्य स्वागतम् करतलध्वनेः करणीयम्।

यत्, तत्, यदा, तदा, उच्चैः

(ट) (1)……………… एकः नरेशः अभवत्।

विद्यां विना जीवनम् (2)……………… ।

(3)……………… जीवनम् अस्ति (4)……………… धर्मं चर।

(5)……………… तस्य शिरसि एकम् फलम् अपतत्।

वृथा, यावत्, तावत्, सहसा, पुरा

II. अधोप्रदत्त-वर्गप्रहेलिकातः निर्दिष्ट सङ्केतानुसारम् दश अव्ययान् चित्वा लिखत।

(नीचे दी गई वर्ग-पहेली से संकेतानुसार दस अव्यय चुनकर लिखिए।)

(क)

[1] ए	व	त्र	न्य	[8] अ
[3] आ	[2] इ	[7] त	[5] नू	ब
म्	त	क	[4] न	[10] नो
[6] कि	म	र्थ	म्	चे
[9] अ	ध	स्	ता	त्

सङ्केताः

1. वामतः दक्षिणम् प्रति
2. निम्नतः उपरि
3. उपरितः अधः
4. दक्षिणतः वामम् प्रति
5. उपरितः अधः
6. वामतः दक्षिणम् प्रति
7. निम्नतः उपरि
8. दक्षिणतः वामम् प्रति
9. वामतः दक्षिणम् प्रति
10. उपरितः अधः

1. .... 2. .... 3. ....
4. .... 5. .... 6. ....
7. .... 8. .... 9. ....
10. ....

(ख)

[5] वृ	[7] ए	[8, 9] क	दा	पि
था	षः	म	स	[10] अ
न्तः	स	ल	प्र	स
[1, 2, 3] अ	धु	ना	था	ि
त्र	[6] कु	[4] वि	म्	य

सङ्केताः

1. उपरितः अधः
2. वामतः दक्षिणम् प्रति
3. निम्नतः उपरि
4. निम्नतः उपरि
5. उपरितः अधः
6. दक्षिणतः वामं प्रति
7. वामतः दक्षिणं प्रति
8. वामतः दक्षिणं प्रति
9. वामतः दक्षिणं प्रति
10. निम्नतः उपरि

1. .... 2. .... 3. ....
4. .... 5. .... 6. ....
7. .... 8. .... 9. ....
10. ....

8 प्रत्ययाः

प्रत्यय ऐसे शब्द हैं जिनका स्वयं का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता, परंतु ये किसी भी शब्द या धातु के पीछे जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं; यथा–√गम् + तव्यत् = गन्तव्य।

ये प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–

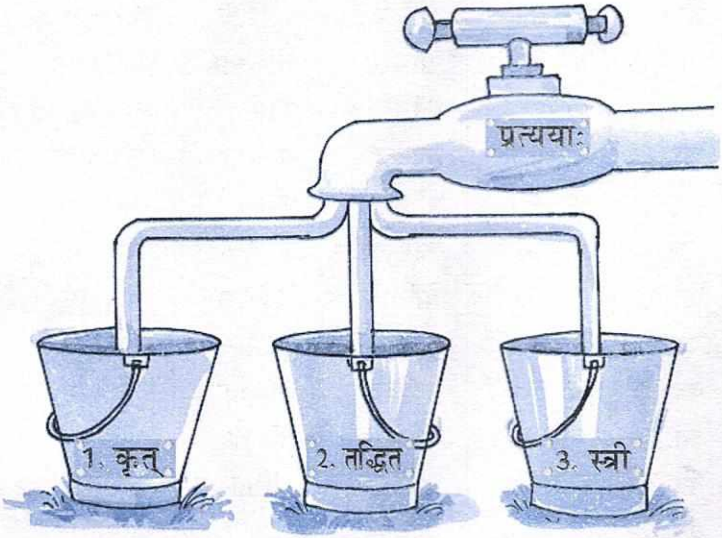

1. कृत् प्रत्ययाः

√कृ इत्यादि धातुओं के साथ जुड़कर उनसे संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाने के लिए जो प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय के धातु के साथ जुड़ने के बाद बनने वाला शब्द कृदन्त कहलाता है। कुछ प्रमुख कृत् प्रत्यय हैं–

1. **क्त प्रत्ययः–भूतकाल** के अर्थ को बताने के लिए **कर्मवाच्य** तथा **भाववाच्य** में क्त प्रत्यय का प्रयोग होता है। **क्त प्रत्यय** लगने के बाद **क्तान्त शब्द** बनता है। उसका **त** शेष रहता है। तीनों लिंगों में क्तान्त शब्दों के रूप चलते हैं। **पुंल्लिग** में **देव** के समान, **स्त्रीलिंग** में **लता** के समान तथा **नपुंसकलिंग** में **फल** के समान।

   क्त प्रत्यय से **अकर्मक** धातु की (**भाववाच्य** हेतु) क्रिया **प्रथमा विभक्ति, नपुंसकलिंग एकवचन** की होती है तथा **क्त प्रत्यय** का प्रयोग केवल **कर्मवाच्य** तथा **भाववाच्य** में होने के कारण इसका **कर्ता तृतीया विभक्ति** वाला होता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्र० सं०	धातु	+	क्त	=	मूल शब्द	पुंल्लिंग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
1.	√पठ्	+	क्त	=	पठित	पठितः	पठिता	पठितम्	पढ़ा हुआ
2.	√खाद्	+	क्त	=	खादित	खादितः	खादिता	खादितम्	खाया हुआ
3.	√क्रीड्	+	क्त	=	क्रीडित	क्रीडितः	क्रीडिता	क्रीडितम्	खेला हुआ
4.	√खण्ड्	+	क्त	=	खण्डित	खण्डितः	खण्डिता	खण्डितम्	टूटा हुआ
5.	√कथ्	+	क्त	=	कथित	कथितः	कथिता	कथितम्	कहा गया
6.	√याच्	+	क्त	=	याचित	याचितः	याचिता	याचितम्	माँगा गया
7.	√पत्	+	क्त	=	पतित	पतितः	पतिता	पतितम्	गिरा हुआ
8.	√कम्प्	+	क्त	=	कम्पित	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्	काँपा हुआ
9.	√चिन्त्	+	क्त	=	चिन्तित	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्	सोचा हुआ
10.	√कुप्	+	क्त	=	कुपित	कुपितः	कुपिता	कुपितम्	क्रोधित हुआ
11.	√लिख्	+	क्त	=	लिखित	लिखितः	लिखिता	लिखितम्	लिखा हुआ
12.	√चल्	+	क्त	=	चलित	चलितः	चलिता	चलितम्	चला हुआ
13.	√चुर्	+	क्त	=	चोरित	चोरितः	चोरिता	चोरितम्	चुराया हुआ
14.	√धाव्	+	क्त	=	धावित	धावितः	धाविता	धावितम्	भागा हुआ
15.	√पाल्	+	क्त	=	पालित	पालितः	पालिता	पालितम्	पाला हुआ
16.	√भूष्	+	क्त	=	भूषित	भूषितः	भूषिता	भूषितम्	सजा हुआ
17.	√रक्ष्	+	क्त	=	रक्षित	रक्षितः	रक्षिता	रक्षितम्	रक्षा किया हुआ
18.	√पूज्	+	क्त	=	पूजित	पूजितः	पूजिता	पूजितम्	पूजा हुआ
19.	√मिल्	+	क्त	=	मिलित	मिलितः	मिलिता	मिलितम्	मिला हुआ
20.	√स्था	+	क्त	=	स्थित	स्थितः	स्थिता	स्थितम्	ठहरा हुआ
21.	√रच्	+	क्त	=	रचित	रचितः	रचिता	रचितम्	बना हुआ
22.	√हस्	+	क्त	=	हसित	हसितः	हसिता	हसितम्	हँस चुका
23.	√भाष्	+	क्त	=	भाषित	भाषितः	भाषिता	भाषितम्	कहा हुआ
24.	√सेव्	+	क्त	=	सेवित	सेवितः	सेविता	सेवितम्	सेवा किया गया
25.	√निन्द्	+	क्त	=	निन्दित	निन्दितः	निन्दिता	निन्दितम्	निन्दा किया हुआ
26.	√गम्	+	क्त	=	गत	गतः	गता	गतम्	गया हुआ
27.	√कृ	+	क्त	=	कृत	कृतः	कृता	कृतम्	किया हुआ

क्र० सं०	धातु	+	क्त	=	मूल शब्द	पुंल्लिंग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
28.	√कृष्	+	क्त	=	कृष्ट	कृष्टः	कृष्टा	कृष्टम्	खींचा हुआ
29.	√अस्	+	क्त	=	भूत	भूतः	भूता	भूतम्	हो चुका
30.	√गै	+	क्त	=	गीत	गीतः	गीता	गीतम्	गाया हुआ
31.	√छिद्	+	क्त	=	छिन्न	छिन्नः	छिन्ना	छिन्नम्	काटा हुआ
32.	√भिद्	+	क्त	=	भिन्न	भिन्नः	भिन्ना	भिन्नम्	तोड़ा हुआ
33.	√जि	+	क्त	=	जित	जितः	जिता	जितम्	जीता हुआ
34.	√आप्	+	क्त	=	आप्त	आप्तः	आप्ता	आप्तम्	पाया हुआ
35.	√नम्	+	क्त	=	नत	नतः	नता	नतम्	झुका हुआ (नमस्कार किया हुआ)
36.	√मृ	+	क्त	=	मृत	मृतः	मृता	मृतम्	मरा हुआ
37.	√लभ्	+	क्त	=	लब्ध	लब्धः	लब्धा	लब्धम्	पाया गया
38.	√शुष्	+	क्त	=	शुष्क	शुष्कः	शुष्का	शुष्कम्	सूखा हुआ
39.	√हन्	+	क्त	=	हत	हतः	हता	हतम्	मारा गया
40.	√वच्	+	क्त	=	उक्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्	कहा गया
41.	√सह्	+	क्त	=	सोढ	सोढः	सोढा	सोढम्	सहा हुआ
42.	√स्वप्	+	क्त	=	सुप्त	सुप्तः	सुप्ता	सुप्तम्	सोया हुआ
43.	√श्रु	+	क्त	=	श्रुत	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्	सुना हुआ
44.	√युध्	+	क्त	=	युद्ध	युद्धः	युद्धा	युद्धम्	लड़ा गया
45.	√वृध्	+	क्त	=	वृद्ध	वृद्धः	वृद्धा	वृद्धम्	बढ़ा हुआ
46.	√स्मृ	+	क्त	=	स्मृत	स्मृतः	स्मृता	स्मृतम्	याद किया हुआ
47.	√दह्	+	क्त	=	दग्ध	दग्धः	दग्धा	दग्धम्	जला हुआ
48.	√प्रच्छ्	+	क्त	=	पृष्ट	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्	पूछा गया
49.	√भू	+	क्त	=	भूत	भूतः	भूता	भूतम्	हो चुका

2. **क्तवतु प्रत्ययः–कर्तृवाच्य** में **भूतकाल** का बोध कराने के लिए क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसमें तवत् शेष रहता है। क्तवतु से **शब्द** बनता है तथा उसके रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। **पुंल्लिग** में **बलवत्, स्त्रीलिंग** में ङीप् प्रत्यय लगकर **नदी** की तरह तथा **नपुंसकलिंग** में जगत् की तरह। कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होने के कारण इसके साथ कर्ता में प्रथमा विभक्ति लगेगी।

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्र० सं०	धातु + क्त = मूल शब्द	पुंल्लिग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
1.	√पठ् + क्तवतु = पठितवत्	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्	पढ़ चुका
2.	√क्रीड् + क्तवतु = क्रीडितवत्	क्रीडितवान्	क्रीडितवती	क्रीडितवत्	खेल चुका
3.	√खाद् + क्तवतु = खादितवत्	खादितवान्	खादितवती	खादितवत्	खा चुका
4.	√धाव् + क्तवतु = धावितवत्	धावितवान्	धावितवती	धावितवत्	दौड़ चुका
5.	√चुर् + क्तवतु = चोरितवत्	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्	चुरा चुका
6.	√अर्ज् + क्तवतु = अर्जितवत्	अर्जितवान्	अर्जितवती	अर्जितवत्	कमा चुका या संग्रह कर चुका
7.	√चल् + क्तवतु = चलितवत्	चलितवान्	चलितवती	चलितवत्	चल चुका
8.	√कथ् + क्तवतु = कथितवत्	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्	कह चुका
9.	√पत् + क्तवतु = पतितवत्	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्	गिर चुका
10.	√हस् + क्तवतु = हसितवत्	हसितवान्	हसितवती	हसितवत्	हँस चुका
11.	√शिक्ष् + क्तवतु = शिक्षितवत्	शिक्षितवान्	शिक्षितवती	शिक्षितवत्	सीख चुका
12.	√रक्ष् + क्तवतु = रक्षितवत्	रक्षितवान्	रक्षितवती	रक्षितवत्	रक्षा कर चुका
13.	√गम् + क्तवतु = गतवत्	गतवान्	गतवती	गतवत्	जा चुका

3. (क) **क्त्वा प्रत्ययाः–क्त्वा प्रत्यय** का प्रयोग **करके** अर्थ के लिए किया जाता है। इसका **त्वा** शेष रहता है। धातु के साथ क्त्वा प्रत्यय के जुड़ जाने पर पद बनता है, शब्द नहीं। इसलिए इनके रूप नहीं चलते।

कुछ प्रमुख उदाहरण हैं–

	धातु	+	क्त्वा	=	पद	–	अर्थ
1.	√पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	–	पढ़कर
2.	√लिख्	+	क्त्वा	=	लिखित्वा	–	लिखकर
3.	√हस्	+	क्त्वा	=	हसित्वा	–	हँसकर
4.	√धाव्	+	क्त्वा	=	धावित्वा	–	दौड़कर
5.	√भ्रम्	+	क्त्वा	=	भ्रमित्वा	–	घूमकर
6.	√दण्ड्	+	क्त्वा	=	दण्डयित्वा	–	दंड देकर
7.	√चुर्	+	क्त्वा	=	चोरयित्वा	–	चोरी करके
8.	√पत्	+	क्त्वा	=	पतित्वा	–	गिरकर
9.	√तुल्	+	क्त्वा	=	तोलयित्वा	–	तोलकर

	धातु	+	क्त्वा	=	पद	–	अर्थ
10.	√ताड्	+	क्त्वा	=	ताडयित्वा	–	पीटकर
11.	√पूज्	+	क्त्वा	=	पूजयित्वा	–	पूजकर
12.	√मिल्	+	क्त्वा	=	मिलित्वा	–	मिलकर
13.	√खाद्	+	क्त्वा	=	खादित्वा	–	खाकर
14.	√सह्	+	क्त्वा	=	सोढ्वा	–	सहकर
15.	√वद्	+	क्त्वा	=	उदित्वा	–	बोलकर
16.	√वस्	+	क्त्वा	=	उषित्वा	–	रहकर
17.	√विद्	+	क्त्वा	=	विदित्वा	–	जानकर
18.	√सेव्	+	क्त्वा	=	सेवित्वा	–	सेवा करके
19.	√याच्	+	क्त्वा	=	याचित्वा	–	माँगकर
20.	√कूर्द्	+	क्त्वा	=	कूर्दित्वा	–	कूदकर
21.	√क्रीड्	+	क्त्वा	=	क्रीडित्वा	–	खेलकर
22.	√कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा	–	करके
23.	√श्रु	+	क्त्वा	=	श्रुत्वा	–	सुनकर
24.	√वच्	+	क्त्वा	=	उक्त्वा	–	कहकर
25.	√स्मृ	+	क्त्वा	=	स्मृत्वा	–	याद करके
26.	√हृ	+	क्त्वा	=	हृत्वा	–	(चुराकर) हरकर
27.	√लभ्	+	क्त्वा	=	लब्ध्वा	–	पाकर
28.	√क्षिप्	+	क्त्वा	=	क्षिप्त्वा	–	फेंककर
29.	√वृध्	+	क्त्वा	=	वर्धित्वा	–	बढ़कर
30.	√भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा	–	होकर
31.	√अस्	+	क्त्वा	=	भूत्वा	–	होकर
32.	√ज्ञा	+	क्त्वा	=	ज्ञात्वा	–	जानकर
33.	√जि	+	क्त्वा	=	जित्वा	–	जीतकर
34.	√छिद्	+	क्त्वा	=	छित्वा	–	काटकर
35.	√त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा	–	छोड़कर
36.	√प्रच्छ्	+	क्त्वा	=	पृष्ट्वा	–	पूछकर
37.	√नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा	–	ले जाकर
38.	√नम्	+	क्त्वा	=	नत्वा	–	झुककर/नमस्कार करके
39.	√पच्	+	क्त्वा	=	पक्त्वा	–	पकाकर
40.	√ब्रू	+	क्त्वा	=	उक्त्वा	–	कहकर

(ख) **ल्यप् प्रत्यया:**–यदि धातु से पहले कोई भी **उपसर्ग** लगा हो तो **करके** अर्थ के लिए वहाँ **क्त्वा प्रत्यय** न लगकर ल्यप् प्रत्यय लगता है। **ल्यप् प्रत्यय** का **य** शेष रहता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

	उपसर्ग	+	धातु	+	ल्यप्	=	पद	–	अर्थ
1.	सम्	+	√पठ्	+	ल्यप्	=	संपठ्य	–	पढ़कर (सम्यक् प्रकार से)
2.	उप	+	√गम्	+	ल्यप्	=	उपगम्य	–	पास जाकर
3.	आ	+	√गम्	+	ल्यप्	=	आगम्य/आगत्य	–	आकर
4.	निर्	+	√गम्	+	ल्यप्	=	निर्गम्य	–	निकलकर (जाकर)
5.	नि	+	√वृत्	+	ल्यप्	=	निवृत्य	–	निवृत्त होकर
6.	आ	+	√नी	+	ल्यप्	=	आनीय	–	लाकर
7.	परि	+	√भ्रम्	+	ल्यप्	=	परिभ्रम्य	–	पूरा घूमकर
8.	सम्	+	√दृश्	+	ल्यप्	=	संदृश्य	–	देखकर
9.	परि	+	√ईक्ष्	+	ल्यप्	=	परीक्ष्य	–	पूरा जाँचकर या अच्छी तरह जाँचकर
10.	उप	+	√हस्	+	ल्यप्	=	उपहस्य	–	उपहास करके
11.	सम्	+	√गम्	+	ल्यप्	=	संगम्य	–	समीप जाकर

4. **तुमुन् प्रत्यया:**–तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग **के लिए** अर्थ के लिए किया जाता है। **चाहना** अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। इस प्रत्यय का **तुम्** शेष रहता है। **तुमुन् प्रत्ययांत भी पद होता है, शब्द नहीं।**

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

	धातु	+	तुमुन्	=	पद	–	अर्थ
1.	√पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्	–	पढ़ने के लिए
2.	√खाद्	+	तुमुन्	=	खादितुम्	–	खाने के लिए
3.	√चल्	+	तुमुन्	=	चलितुम्	–	चलने के लिए
4.	√कथ्	+	तुमुन्	=	कथयितुम्	–	कहने के लिए
5.	√क्रीड्	+	तुमुन्	=	क्रीडितुम्	–	खेलने के लिए
6.	√धाव्	+	तुमुन्	=	धावितुम्	–	दौड़ने के लिए
7.	√खेल्	+	तुमुन्	=	खेलितुम्	–	खेलने के लिए
8.	√चुर्	+	तुमुन्	=	चोरयितुम्	–	चुराने के लिए
9.	√चिन्त्	+	तुमुन्	=	चिन्तयितुम्	–	सोचने के लिए
10.	√पत्	+	तुमुन्	=	पतितुम्	–	गिरने के लिए
11.	√पाल्	+	तुमुन्	=	पालयितुम्	–	पालने के लिए
12.	√भ्रम्	+	तुमुन्	=	भ्रमितुम्	–	घूमने के लिए
13.	√वद्	+	तुमुन्	=	उदितुम्	–	कहने के लिए
14.	√अस्	+	तुमुन्	=	भवितुम्	–	होने के लिए
15.	√हस्	+	तुमुन्	=	हसितुम्	–	हँसने के लिए
16.	√वर्ण्	+	तुमुन्	=	वर्णयितुम्	–	वर्णन करने के लिए

	धातु	+	तुमुन्	=	पद	–	अर्थ
17.	√वृध्	+	तुमुन्	=	वर्धितुम्	–	बढ़ने के लिए
18.	√भू	+	तुमुन्	=	भवितुम्	–	होने के लिए
19.	√ब्रू	+	तुमुन्	=	वक्तुम्	–	कहने के लिए
20.	√कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्	–	करने के लिए
21.	√क्री	+	तुमुन्	=	क्रेतुम्	–	खरीदने के लिए
22.	√दा	+	तुमुन्	=	दातुम्	–	देने के लिए
23.	√छिद्	+	तुमुन्	=	छेत्तुम्	–	काटने के लिए
24.	√भिद्	+	तुमुन्	=	भेत्तुम्	–	तोड़ने के लिए
25.	√भी	+	तुमुन्	=	भेतुम्	–	डरने के लिए
26.	√श्रु	+	तुमुन्	=	श्रोतुम्	–	सुनने के लिए
27.	√लभ्	+	तुमुन्	=	लब्धुम्	–	पाने के लिए
28.	√वह्	+	तुमुन्	=	वोढुम्	–	ले जाने के लिए
29.	√सह्	+	तुमुन्	=	सोढुम्	–	सहने के लिए
30.	√प्रच्छ	+	तुमुन्	=	प्रष्टुम्	–	पूछने के लिए
31.	√नी	+	तुमुन्	=	नेतुम्	–	ले जाने के लिए
32.	√हन्	+	तुमुन्	=	हन्तुम्	–	मारने के लिए
33.	√नम्	+	तुमुन्	=	नन्तुम्	–	नमस्कार करने के लिए/झुकने के लिए
34.	√गम्	+	तुमुन्	=	गन्तुम्	–	जाने के लिए
35.	√गै	+	तुमुन्	=	गातुम्	–	गाने के लिए
36.	√पा	+	तुमुन्	=	पातुम्	–	पीने के लिए
37.	√ज्ञा	+	तुमुन्	=	ज्ञातुम्	–	जानने के लिए
38.	√दृश्	+	तुमुन्	=	द्रष्टुम्	–	देखने के लिए
39.	√त्यज्	+	तुमुन्	=	त्यक्तुम्	–	छोड़ने के लिए

5. तव्यत् प्रत्यया:–तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग **चाहिए** अर्थ अथवा **योग्य** अर्थ के लिए होता है। इस प्रत्यय का **तव्य** शेष रहता है। तव्यत् प्रत्ययांत **शब्द** होता है, अतएव रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। **कर्ता में इसके साथ तृतीया विभक्ति लगती है। अकर्मक** (भाववाचक) **धातुओं में नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति एकवचन में रूप चलते हैं।**

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्र० सं०	धातु + तव्यत् = मूल शब्द	पुंल्लिंग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
1.	√पठ् + तव्यत् = पठितव्य	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्	पढ़ना चाहिए
2.	√चल् + तव्यत् = चलितव्य	चलितव्यः	चलितव्या	चलितव्यम्	चलना चाहिए

3.	√क्रीड् + तव्यत् = क्रीडितव्य	क्रीडितव्यः	क्रीडितव्या	क्रीडितव्यम्	खेलना चाहिए
4.	√खेल् + तव्यत् = खेलितव्य	खेलितव्यः	खेलितव्या	खेलितव्यम्	खेलना चाहिए
5.	√खाद् + तव्यत् = खादितव्य	खादितव्यः	खादितव्या	खादितव्यम्	खाना चाहिए
6.	√धाव् + तव्यत् = धावितव्य	धावितव्यः	धावितव्या	धावितव्यम्	भागना चाहिए
7.	√अस् + तव्यत् = भवितव्य	भवितव्यः	भवितव्या	भवितव्यम्	होना चाहिए
8.	√भू + तव्यत् = भवितव्य	भवितव्यः	भवितव्या	भवितव्यम्	होना चाहिए
9.	√चिन्त् + तव्यत् = चिन्तयितव्य	चिन्तयितव्यः	चिन्तयितव्या	चिन्तयितव्यम्	चिन्तित होना चाहिए
10.	√भ्रम् + तव्यत् = भ्रमितव्य	भ्रमितव्यः	भ्रमितव्या	भ्रमितव्यम्	घूमना चाहिए
11.	√हस् + तव्यत् = हसितव्य	हसितव्यः	हसितव्या	हसितव्यम्	हँसना चाहिए
12.	√लिख् + तव्यत् = लिखितव्य	लिखितव्यः	लिखितव्या	लिखितव्यम्	लिखना चाहिए
13.	√पत् + तव्यत् = पतितव्य	पतितव्यः	पतितव्या	पतितव्यम्	गिरना चाहिए
14.	√वृध् + तव्यत् = वर्धितव्य	वर्धितव्यः	वर्धितव्या	वर्धितव्यम्	बढ़ना चाहिए
15.	√गम् + तव्यत् = गन्तव्य	गन्तव्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्	जाना चाहिए
16.	√नम् + तव्यत् = नन्तव्य	नन्तव्यः	नन्तव्या	नन्तव्यम्	झुकना चाहिए/ नमस्कार करना चाहिए
17.	√गै + तव्यत् = गातव्य	गातव्यः	गातव्या	गातव्यम्	गाना चाहिए
18.	√कृ + तव्यत् = कर्त्तव्य	कर्त्तव्यः	कर्त्तव्या	कर्त्तव्यम्	करना चाहिए
19.	√दा + तव्यत् = दातव्य	दातव्यः	दातव्या	दातव्यम्	देना चाहिए
20.	√ज्ञा + तव्यत् = ज्ञातव्य	ज्ञातव्यः	ज्ञातव्या	ज्ञातव्यम्	जानना चाहिए
21.	√नी + तव्यत् = नेतव्य	नेतव्यः	नेतव्या	नेतव्यम्	ले जाना चाहिए
22.	√ब्रू + तव्यत् = वक्तव्य	वक्तव्यः	वक्तव्या	वक्तव्यम्	कहना चाहिए
23.	√वच् + तव्यत् = वक्तव्य	वक्तव्यः	वक्तव्या	वक्तव्यम्	बोलना चाहिए
24.	√हन् + तव्यत् = हन्तव्य	हन्तव्यः	हन्तव्या	हन्तव्यम्	मारना चाहिए
25.	√सह् + तव्यत् = सोढव्य	सोढव्यः	सोढव्या	सोढव्यम्	सहना चाहिए
26.	√वह् + तव्यत् = वोढव्य	वोढव्यः	वोढव्या	वोढव्यम्	ढोना चाहिए
27.	√स्मृ + तव्यत् = स्मर्तव्य	स्मर्तव्यः	स्मर्तव्या	स्मर्तव्यम्	याद करना चाहिए
28.	√श्रु + तव्यत् = श्रोतव्य	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्	सुनना चाहिए
29.	√दृश् + तव्यत् = द्रष्टव्य	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्	देखना चाहिए
30.	√प्रच्छ् + तव्यत् = प्रष्टव्य	प्रष्टव्यः	प्रष्टव्या	प्रष्टव्यम्	पूछना चाहिए

6. **अनीयर् प्रत्ययाः**–अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग भी **चाहिए** अर्थ के लिए ही किया जाता है। इसमें **अनीय** शेष रहता है तथा शब्द बनता है। पुनः शब्द के तीनों लिंगों में रूप चलते हैं। इसमें किसी **भी** धातु के साथ **इ** नहीं लगता। इसका प्रयोग भी **तव्यत्** प्रत्यय के समान **कर्मवाच्य** में होता है। **विशेषण** के समान भी इसका प्रयोग होता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्र० सं०	धातु + अनीयर् = मूल शब्द	पुंल्लिग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद	अर्थ
1.	√पठ् + अनीयर् = पठनीय	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्	पढ़ने योग्य
2.	√गम् + अनीयर् = गमनीय	गमनीयः	गमनीया	गमनीयम्	जाने योग्य
3.	√नम् + अनीयर् = नमनीय	नमनीयः	नमनीया	नमनीयम्	नमस्कार करने योग्य
4.	√हस् + अनीयर् = हसनीय	हसनीयः	हसनीया	हसनीयम्	हँसने योग्य
5.	√वन्द् + अनीयर् = वन्दनीय	वन्दनीयः	वन्दनीया	वन्दनीयम्	वंदना करने योग्य
6.	√रम् + अनीयर् = रमणीय	रमणीयः	रमणीया	रमणीयम्	घूमने योग्य
7.	√याच् + अनीयर् = याचनीय	याचनीयः	याचनीया	याचनीयम्	माँगने योग्य
8.	√स्मृ + अनीयर् = स्मरणीय	स्मरणीयः	स्मरणीया	स्मरणीयम्	याद करने योग्य
9.	√मृ + अनीयर् = मरणीय	मरणीयः	मरणीया	मरणीयम्	मरने योग्य
10.	√भू + अनीयर् = भवनीय	भवनीयः	भवनीया	भवनीयम्	होने योग्य
11.	√अस् + अनीयर् = भवनीय	भवनीयः	भवनीया	भवनीयम्	होने योग्य
12.	√क्रीड् + अनीयर् = क्रीडनीय	क्रीडनीयः	क्रीडनीया	क्रीडनीयम्	खेलने योग्य
13.	√दण्ड् + अनीयर् = दण्डनीय	दण्डनीयः	दण्डनीया	दण्डनीयम्	दंड देने योग्य
14.	√कृ + अनीयर् = करणीय	करणीयः	करणीया	करणीयम्	करने योग्य
15.	√क्री + अनीयर् = क्रयणीय	क्रयणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्	खरीदने योग्य
16.	√तुल् + अनीयर् = तोलनीय	तोलनीयः	तोलनीया	तोलनीयम्	तोलने योग्य
17.	√धाव् + अनीयर् = धावनीय	धावनीयः	धावनीया	धावनीयम्	दौड़ने योग्य
18.	√जि + अनीयर् = जयनीय	जयनीयः	जयनीया	जयनीयम्	जीतने योग्य
19.	√तड् + अनीयर् = ताडनीय	ताडनीयः	ताडनीया	ताडनीयम्	पीटने योग्य
20.	√स्था + अनीयर् = स्थानीय	स्थानीयः	स्थानीया	स्थानीयम्	ठहरने योग्य
21.	√शुभ् + अनीयर् = शोभनीय	शोभनीयः	शोभनीया	शोभनीयम्	शोभा पाने योग्य
22.	√श्रु + अनीयर् = श्रवणीय	श्रवणीयः	श्रवणीया	श्रवणीयम्	सुनने योग्य
23.	√लिख् + अनीयर् = लेखनीय	लेखनीयः	लेखनीया	लेखनीयम्	लिखने योग्य
24.	√सह् + अनीयर् = सहनीय	सहनीयः	सहनीया	सहनीयम्	सहने योग्य
25.	√वृध् + अनीयर् = वर्धनीय	वर्धनीयः	वर्धनीया	वर्धनीयम्	बढ़ने योग्य

7. शतृ तथा **शानच् प्रत्ययाः**–ये दोनों प्रत्यय वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं। **शतृ प्रत्यय परस्मैपद** तथा **शानच् प्रत्यय आत्मनेपद** की धातुओं में लगता है।

शतृ का **अत्** तथा शानच् का **आन** शेष रहता है। इसके बाद शब्द बनने पर तीनों लिंगों में रूप चलते हैं। बलवत् की तरह पुंल्लिग में, नदी की तरह स्त्रीलिंग में तथा जगत् की तरह नपुंसकलिंग में।

कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

शतृ प्रत्ययाः

क्र० सं०	धातु + शतृ =	मूल शब्द	पुंल्लिग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद
1.	√गम् + शतृ =	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
2.	√पठ् + शतृ =	पठत्	पठन्	पठन्ती	पठत्
3.	√धाव् + शतृ =	धावत्	धावन्	धावन्ती	धावत्
4.	√दा + शतृ =	यच्छत्	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
5.	√दृश् + शतृ =	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
6.	√लिख् + शतृ =	लिखत्	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
7.	√स्मृ + शतृ =	स्मरत्	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
8.	√वद् + शतृ =	वदत्	वदन्	वदन्ती	वदत्

शानच् प्रत्ययाः

क्र० सं०	धातु + शानच् =	पुंल्लिग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद
1.	√सेव् + शानच् =	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
2.	√लभ् + शानच् =	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
3.	√सह् + शानच् =	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
4.	√वृध् + शानच् =	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
5.	√रुच् + शानच् =	रोचमाणः	रोचमाना	रोचमानम्
6.	√कम्प् + शानच् =	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
7.	√याच् + शानच् =	याचमानः	याचमाना	याचमानम्

2. तद्धित प्रत्ययाः

तत् इत्यादि शब्दों के बाद लगने वाले प्रत्यय **तद्धित प्रत्यय** कहलाते हैं।

कुछ प्रमुख तद्धित प्रत्यय हैं–

1. **मतुप् प्रत्ययाः–मतुप् प्रत्यय का प्रयोग युक्तता बताने के लिए, वाला या वाली के अर्थ में होता है।** शब्दों के साथ जुड़ने के लिए इस प्रत्यय का मत् शेष रहता है। अ/आ को छोड़कर कोई भी **अन्य स्वर** यदि शब्द के अंत में हो तो उन शब्दों में सीधा मत् लग जाता है। मतुप् प्रत्यय लगने के बाद **शब्द** बनता है तथा पद बनाने के लिए **तीनों लिंगों में** रूप चलते हैं। यदि शब्दों के अंत में और अंतिमाक्षर से पहला वर्ण **य्** हो या **अ/आ** में से कोई हो तो मत् के स्थान पर **वत्** लगता है।

मतुप् प्रत्यय के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्र० सं०	शब्द	+	मतुप्	=	मूल रूप	(बलवत् की तरह) पुंल्लिंग	(नदी की तरह) स्त्रीलिंग	(जगत् की तरह) नपुंसकलिंग
1.	शक्ति	+	मतुप्	=	शक्तिमत्	शक्तिमान्	शक्तिमती	शक्तिमत्
2.	बुद्धि	+	मतुप्	=	बुद्धिमत्	बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
3.	गति	+	मतुप्	=	गतिमत्	गतिमान्	गतिमती	गतिमत्
4.	अग्नि	+	मतुप्	=	अग्निमत्	अग्निमान्	अग्निमती	अग्निमत्
5.	श्री	+	मतुप्	=	श्रीमत्	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्
6.	नदी	+	मतुप्	=	नदीमत्	नदीमान्	नदीमती	नदीमत्
7.	अंशु	+	मतुप्	=	अंशुमत्	अंशुमान्	अंशुमती	अंशुमत्
8.	हनु	+	मतुप्	=	हनुमत्	हनुमान्	हनुमती	हनुमत्
9.	मधु	+	मतुप्	=	मधुमत्	मधुमान्	मधुमती	मधुमत्
10.	वसु	+	मतुप्	=	वसुमत्	वसुमान्	वसुमती	वसुमत्
11.	गो	+	मतुप्	=	गोमत्	गोमान्	गोमती	गोमत्
12.	आयुष्	+	मतुप्	=	आयुष्मत्	आयुष्मान्	आयुष्मती	आयुष्मत्
13.	ज्ञान	+	मतुप्	=	ज्ञानवत्	ज्ञानवान्	ज्ञानवती	ज्ञानवत्
14.	गुण	+	मतुप्	=	गुणवत्	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
15.	धन	+	मतुप्	=	धनवत्	धनवान्	धनवती	धनवत्
16.	रूप	+	मतुप्	=	रूपवत्	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
17.	बल	+	मतुप्	=	बलवत्	बलवान्	बलवती	बलवत्
18.	भाग्य	+	मतुप्	=	भाग्यवत्	भाग्यवान्	भाग्यवती	भाग्यवत्
19.	शील	+	मतुप्	=	शीलवत्	शीलवान्	शीलवती	शीलवत्
20.	दया	+	मतुप्	=	दयावत्	दयावान्	दयावती	दयावत्
21.	शोभा	+	मतुप्	=	शोभावत्	शोभावान्	शोभावती	शोभावत्
22.	लज्जा	+	मतुप्	=	लज्जावत्	लज्जावान्	लज्जावती	लज्जावत्
23.	सरस्	+	मतुप्	=	सरस्वत्	सरस्वान्	सरस्वती	सरस्वत्
24.	यशस्	+	मतुप्	=	यशस्वत्	यशस्वान्	यशस्वती	यशस्वत्

२. **णिनि प्रत्ययाः (इन् प्रत्यय)–णिनि प्रत्यय का प्रयोग भी मतुप् प्रत्यय के समान युक्तता बताने के लिए वाला या वाली अर्थ में किया जाता है।** णिनि प्रत्यय में **इन्** शेष रहता है। इसलिए इसे **इन् प्रत्यय** भी कहा जाता है। **णिनि प्रत्यय** लगने के बाद बने शब्द के **तीनों लिंगों** में रूप चलते हैं।

इसके कुछ प्रमुख उदाहरण हैं–

क्र० सं०	शब्द + णिनि = मूल रूप	पुंल्लिग पद	स्त्रीलिंग पद	नपुंसकलिंग पद
1.	दु:ख + णिनि = दु:खिन्	दु:खी	दु:खिनी	दु:खि
2.	रोग + णिनि = रोगिन्	रोगी	रोगिणी	रोगि
3.	पाप + णिनि = पापिन्	पापी	पापिनी	पापि
4.	मन्त्र + णिनि = मन्त्रिण्	मन्त्री	मन्त्रिणी	मन्त्रि
5.	योग + णिनि = योगिन्	योगी	योगिनी	योगि
6.	दण्ड + णिनि = दण्डिन्	दण्डी	दण्डिनी	दण्डि
7.	केसर + णिनि = केसरिन्	केसरी	केसरिणी	केसरि
8.	कर + णिनि = करिन्	करी	करिणी	करि
9.	धन + णिनि = धनिन्	धनी	धनिनी	धनि
10.	हस्त + णिनि = हस्तिन्	हस्ती	हस्तिनी	हस्ति
11.	सुख + णिनि = सुखिन्	सुखी	सुखिनी	सुखि
12.	पक्ष + णिनि = पक्षिन्	पक्षी	पक्षिणी	पक्षि
13.	गृह + णिनि = गृहिन्	गृही	गृहिणी	गृहि
14.	ज्ञान + णिनि = ज्ञानिन्	ज्ञानी	ज्ञानिनी	ज्ञानि
15.	त्याग + णिनि = त्यागिन्	त्यागी	त्यागिनी	त्यागि
16.	प्राण + णिनि = प्राणिन्	प्राणी	प्राणिनी	प्राणि
17.	पिनाक + णिनि = पिनाकिन्	पिनाकी	पिनाकिनी	पिनाकि
18.	विवेक + णिनि = विवेकिन्	विवेकी	विवेकिनी	विवेकि

3. **ठक् प्रत्यया:**–**भाववाचक संज्ञा** बनाने के लिए **ठक् प्रत्यय** का प्रयोग किया जाता है। इसमें शब्द के साथ (ठक्→इक) **इक** जुड़ता है तथा साथ ही प्रथम स्वर में **वृद्धि** हो जाती है।

वृद्धि:–(1) अ को **आ** (2) इ, ई, ए को **ऐ** (3) उ, ऊ, ओ को **औ** (4) ऋ, ॠ को **आर्** हो जाता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण हैं–

शब्द + ठक् = मूल रूप	शब्द + ठक् = मूल रूप
दिन + ठक् = दैनिक	अस्ति + ठक् = आस्तिक
अध्यात्म + ठक् = आध्यात्मिक	धर्म + ठक् = धार्मिक
दर्शन + ठक् = दार्शनिक	इतिहास + ठक् = ऐतिहासिक
इह + ठक् = ऐहिक	मनस् + ठक् = मानसिक
पक्ष + ठक् = पाक्षिक	नास्ति + ठक् = नास्तिक

सप्ताह	+	ठक्	=	साप्ताहिक	मास	+	ठक्	=	मासिक
वर्ष	+	ठक्	=	वार्षिक	नगर	+	ठक्	=	नागरिक
नौ	+	ठक्	=	नाविक	पुराण	+	ठक्	=	पौराणिक
बुद्धि	+	ठक्	=	बौद्धिक	लोक	+	ठक्	=	लौकिक
वेद	+	ठक्	=	वैदिक	शब्द	+	ठक्	=	शाब्दिक
शरीर	+	ठक्	=	शारीरिक	संसार	+	ठक्	=	सांसारिक
संस्कृति	+	ठक्	=	सांस्कृतिक	समाज	+	ठक्	=	सामाजिक

4. **त्व प्रत्यया:–त्व प्रत्यय** का प्रयोग भी **भाववाचक संज्ञा** बनाने के लिए किया जाता है। **त्व प्रत्यय** का **त्व** ही शब्द के साथ जुड़ जाता है। इसके बाद शब्द का प्रयोग **नपुंसकलिंग एकवचन** में होता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण हैं–

शब्द	+	त्व	=	प्रत्ययान्त पद	=	अर्थ	शब्द	+	त्व	=	प्रत्ययान्त पद	=	अर्थ
ईश्वर	+	त्व	=	ईश्वरत्वम्	=	ईश्वरता	कठोर	+	त्व	=	कठोरत्वम्	=	कठोरता
अम्ल	+	त्व	=	अम्लत्वम्	=	खट्टापन	कटु	+	त्व	=	कटुत्वम्	=	कड़वाहट
कषाय	+	त्व	=	कषायत्वम्	=	कसैलापन	खिन्न	+	त्व	=	खिन्नत्वम्	=	खिन्नता
नारी	+	त्व	=	नारीत्वम्	=	नारीपन	दुष्ट	+	त्व	=	दुष्टत्वम्	=	दुष्टता
गुरु	+	त्व	=	गुरुत्वम्	=	महानता/बड़प्पन	देव	+	त्व	=	देवत्वम्	=	देवतापन
निज	+	त्व	=	निजत्वम्	=	अपनापन	दुर्लभ	+	त्व	=	दुर्लभत्वम्	=	दुर्लभता
दृढ़	+	त्व	=	दृढ़त्वम्	=	दृढ़ता	चारु	+	त्व	=	चारुत्वम्	=	सुंदरता
दीर्घ	+	त्व	=	दीर्घत्वम्	=	दीर्घता	ऋजु	+	त्व	=	ऋजुत्वम्	=	सीधापन
कातर	+	त्व	=	कातरत्वम्	=	कातरता	दीन	+	त्व	=	दीनत्वम्	=	दीनता
पटु	+	त्व	=	पटुत्वम्	=	चतुराई	मनुष्य	+	त्व	=	मनुष्यत्वम्	=	मानवता
पूर्ण	+	त्व	=	पूर्णत्वम्	=	पूर्णता	शिशु	+	त्व	=	शिशुत्वम्	=	शिशुता

5. **तल् प्रत्यया:–**तल् प्रत्यय का प्रयोग भी **भाववाचक संज्ञा** बनाने के लिए किया जाता है। **तल् प्रत्यय** का **ता** शब्दों के साथ जुड़ता है। इसके बाद वह शब्द **स्त्रीलिंग एकवचन** के रूप में प्रयुक्त होता है।

कुछ प्रमुख उदाहरण हैं–

शब्द	+	तल् प्रत्यय	=	प्रत्ययान्त पद	अर्थ	शब्द	+	तल् प्रत्यय	=	प्रत्ययान्त पद	अर्थ
भिन्न	+	तल् (ता)	=	भिन्नता	अलगाव	मित्र	+	तल्	=	मित्रता	दोस्ती
पीन	+	तल्	=	पीनता	मोटापा	अम्ल	+	तल्	=	अम्लता	खट्टेपन वाला
कठोर	+	तल्	=	कठोरता	कठोर भाव	कटु	+	तल्	=	कटुता	कड़वापन

दृढ़ + तल्	= दृढ़ता	मजबूती	चारु + तल्	= चारुता	सुंदरता
जन + तल्	= जनता	लोगों के समूह से युक्त	दीन + तल्	= दीनता	दीन भाव
दुष्ट + तल्	= दुष्टता	दुष्ट भाव	देव + तल्	= देवता	दिव्य शक्ति
मानव + तल्	= मानवता	मनुष्यत्व	लघु + तल्	= लघुता	छोटापन
साधु + तल्	= साधुता	साधु भाव	स्निग्ध + तल्	= स्निग्धता	चिकनाई
सौम्य + तल्	= सौम्यता	सौम्य भाव	शूर + तल्	= शूरता	पराक्रम
वीर + तल्	= वीरता	वीरत्व के भाव से युक्त	ऋजु + तल्	= ऋजुता	सीधापन

3. स्त्री प्रत्यया:

पुंल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए पुंल्लिग शब्दों के साथ जोड़े जाने वाले प्रत्यय स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं। ये निम्नलिखित **दो प्रकार** के होते हैं–

1. टाप् प्रत्यया:

(*i*) **अकारांत** तथा **अजादिगण** के पुंल्लिग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाता है। इसका **आ** शेष रहता है; जैसे–

कृश	+	टाप् (आ)	=	कृशा	उत्तम	+	टाप्	=	उत्तमा
वत्स	+	टाप्	=	वत्सा	मन्द	+	टाप्	=	मन्दा
कृपण	+	टाप्	=	कृपणा	चतुर	+	टाप्	=	चतुरा
प्रथम	+	टाप्	=	प्रथमा	कान्त	+	टाप्	=	कान्ता
अज	+	टाप्	=	अजा	द्वितीय	+	टाप्	=	द्वितीया
प्रिय	+	टाप्	=	प्रिया	सरल	+	टाप्	=	सरला
क्रूर	+	टाप्	=	क्रूरा	दीन	+	टाप्	=	दीना
तरल	+	टाप्	=	तरला	कनिष्ठ	+	टाप्	=	कनिष्ठा
वक्र	+	टाप्	=	वक्रा	दक्ष	+	टाप्	=	दक्षा
मध्यम	+	टाप्	=	मध्यमा	प्रवीण	+	टाप्	=	प्रवीणा

(*ii*) जिन शब्दों के अंत में **अक** होता है उनके अंतिम **क** से पूर्व **इ** लग जाती है; **जैसे–**

नायक	+	टाप्	=	नायिका	गायक	+	टाप्	=	गायिका
चालक	+	टाप्	=	चालिका	बालक	+	टाप्	=	बालिका
मूषक	+	टाप्	=	मूषिका	याचक	+	टाप्	=	याचिका
वादक	+	टाप्	=	वादिका	पालक	+	टाप्	=	पालिका
पाठक	+	टाप्	=	पाठिका	पाचक	+	टाप्	=	पाचिका
वाचक	+	टाप्	=	वाचिका	साधक	+	टाप्	=	साधिका
श्रावक	+	टाप्	=	श्राविका	अभिभावक	+	टाप्	=	अभिभाविका

2. **ङीप् प्रत्यया:**–शब्दों में **ङीप् प्रत्यय** जोड़ने पर **ई** शेष रहता है; जैसे–

दातृ	+	ङीप् (ई)	=	दात्री	हन्तृ	+	ङीप्	=	हन्त्री
कर्तृ	+	ङीप्	=	कर्त्री	जेतृ	+	ङीप्	=	जेत्री
धातृ	+	ङीप्	=	धात्री	अभिनेतृ	+	ङीप्	=	अभिनेत्री
सुखकर:	+	ङीप्	=	सुखकरी	ब्राह्मण	+	ङीप्	=	ब्राह्मणी
तरुण	+	ङीप्	=	तरुणी	नट	+	ङीप्	=	नटी
मृग	+	ङीप्	=	मृगी	देव	+	ङीप्	=	देवी
कुमार	+	ङीप्	=	कुमारी	मातामह	+	ङीप्	=	मातामही
बलवत्	+	ङीप्	=	बलवती	नापित	+	ङीप्	=	नापिती
गुरु	+	ङीप्	=	गुर्वी	साधु	+	ङीप्	=	साध्वी
लघु	+	ङीप्	=	लघ्वी	पटु	+	ङीप्	=	पट्वी
मृदु	+	ङीप्	=	मृद्वी	किशोर	+	ङीप्	=	किशोरी
भोगकर:	+	ङीप्	=	भोगकरी	वरुण	+	ङीप्	=	वरुणानी
नद	+	ङीप्	=	नदी	गरीयस्	+	ङीप्	=	गरीयसी
गोमत्	+	ङीप्	=	गोमती	श्रीमत्	+	ङीप्	=	श्रीमती

ध्यातव्यम्

- प्रत्यय लगने के बाद सभी शब्दों के रूप नहीं चलते। जिनकी पद संज्ञा होती है उन पदों के रूप तीनों लिंगों व वचनों में समान ही रहते हैं।
- यदि धातु एक ही हो तो क्त्वा प्रत्यय के सभी पद ल्यप् प्रत्यय के पदों के पर्याय हो जाते हैं।
- अनीयर् तथा तव्यत् प्रत्यय भी समानार्थी होते हैं।
- क्तवतु प्रत्यय में धातु परस्मैपद की होती है।
- शानच् प्रत्यय में धातु आत्मनेपद की होती है।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. मतुप् प्रत्यय में वत् शेष रहता है, पर यह शब्द के साथ लगता है, धातु के साथ नहीं।
2. टाप् प्रत्यय का आ तथा ङीप् प्रत्यय का ई शेष रहता है।
3. क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की अव्यय पद संज्ञा होने के कारण रूप नहीं चलते।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. रञ्जितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययोः पृथक् कुरुत।

(रंगीन पदों में प्रकृति एवं प्रत्यय अलग कीजिए।)

1. संचिकायाम् किम् **लिखितव्यम्**? ....+............
2. **कम्पमानः** वानरः अगच्छत्। ....+............
3. मया पत्रम् **पठनीयम्**। ....+............
4. रामस्य स्वभावे **सरलता** आसीत्। ....+............
5. पर्वतस्य **रमणीयता** अवर्णनीया अस्ति। ....+............
6. वानरस्य **चपलत्वम्** पश्य। ....+............
7. **बुद्धिमान्** सर्वत्र आदरम् लभते। ....+............
8. ऐश्वर्यस्य विभूषणम् **सुजनता**। ....+............
9. अहम् **शक्तिमान्** इति कार्यक्रमम् पश्यामि। ....+............
10. **उद्योगिनं** पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। ....+............

II. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययोः विग्रहं कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रंगीन पदों का प्रकृति-प्रत्यय-विग्रह कीजिए।)

1. **बलवती** हि आशा। .... (बल + मतुप् + ङीप्/बल + ङीप्)
2. **धनी** पुरुषः दानम् करोति। .... (धन + ई/धन + णिनि/इन)
3. एकः **गुणी** सुखम् लभते। .... (गुण + णिनि/गुण + ङीप्)
4. **अविवेकता** अनर्थाय भवति। .... (अविवेक + तल्/अविवेक + टाप्)
5. कक्षायाम् कोलाहलः न **कर्त्तव्यः**। .... (कर्तृ + तव्यत्/√कृ + तव्यत्)
6. सः पुस्तकम् **पठितवान्**। .... (√पठ् + क्तवतु/पठ् + मतुप्)
7. **गच्छन्** पुत्रः मातरम् पश्यति। .... (गम् + णिनि/√गम् + शतृ)
8. अत्र प्रवेशः न **करणीयः**। .... (कर् + अनीयर्/√कृ + अनीयर्)
9. दरिद्रस्य **निर्धनता** एव तस्य दुःखम्। .... (निर् + धनता/निर्धन + तल्)
10. **स्वतंत्रता** अस्माकम् जन्मसिद्धः अधिकारः। .... (स्वतंत्र + तल्/सु + तंत्रता)

III. रञ्जितपदानां संशोधनं कृत्वा पुनः लिखत।

(रंगीन पदों को शुद्ध करके पुनः लिखिए।)

1. अविद्या मनुष्यस्य **पशुत** (पशु + त्व) एव। ....
2. सैनिकैः देशस्य रक्षा **कृतव्या** (√कृ + तव्यत्)। ....

3. **पठन्ति** (√पठ् + शतृ)छात्रा हसति। ....

4. को न जानाति परिश्रमस्य **महत्तवम्** (महत् + त्व)। ....

5. चन्द्रस्य **शीतलता** (शीतल + तल्) तस्य प्रकृतिः एव। ....

6. **गच्छत्** (√गम् + शतृ) शशकः उपायं चिन्तयति। ....

7. तेन ग्रन्थः **पठिक्तः** (पठ् + क्त)। ....

8. सः भोजनम् **खादत्वा** (खाद् + क्त्वा) एव अगच्छत्। ....

9. मूषकम् **दृष्टक्त्वा** (√दृश + क्त्वा) बिडालः आगच्छत्। ....

10. सिंहः बिडालम् **खादतुम्** (खाद् + तुमुन्) इच्छति स्म। ....

IV. मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. सः श्रेष्ठी .... अस्ति।
2. पतितस्य .... कर्त्तव्यम्।
3. अस्माभिः विद्यादानम् .... ।
4. असहाया नारी .... ।
5. .... कार्यम् मा कुरु।
6. अस्माभिः दर्पः .... ।
7. अहम् शीघ्रम् .... असमर्था।
8. अहम् कालिदासेन .... नाटकम् पश्यामि।
9. रावणः अपि .... आसीत्।
10. सिंहम् .... मृगी इतस्ततः धावति।

> आस्तिकः, धावितुम्, रचितम्, त्यक्तव्यः, निन्दनीयम्, रक्षणीया, कर्त्तव्यम्, दयावान्, दृष्ट्वा, सहायताम्

V. अधोलिखितेषु वाक्येषु रञ्जितपदेषु प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत।

(निम्नलिखित वाक्यों के रंगीन पदों का प्रकृति-प्रत्यय-विभाग कीजिए।)

	प्रकृतिः	प्रत्यय
1. जीवने **नैतिकी** शिक्षा आवश्यकी।	....	....
2. **विनोदी** जनः सर्वप्रियः भवति।	....	....
3. पुरा महाराणाप्रतापः **शक्तिमान्** नृपः आसीत्।	....	....
4. तेन लेखः **लेखितव्यः**।	....	....
5. रमा **चतुरा** बाला अस्ति।	....	....
6. एतत् तु **ऐतिहासिकम्** भवनम् प्रतीयते।	....	....

9 वाच्य-परिवर्तनम्

वाच्य—वाक्य-निर्माण की शैली अथवा विधि को **वाच्य** कहते हैं।

वाच्य निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं—

वाच्याः

1. कर्तृवाच्यः | 2. कर्मवाच्यः | 3. भाववाच्यः

1. **कर्तृवाच्यः—कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान वाच्य** होता है। इसमें **कर्ता में प्रथमा विभक्ति** का प्रयोग तथा **कर्म में द्वितीया विभक्ति** का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया कर्ता के अनुसार** (परस्मैपद में) होती है।

उदाहरण :

(क) **सः** पुस्तकम् **पठति**।
(ख) **सः** कार्यम् **करोति**।
(ग) **ते** ग्रन्थम् **पठन्ति**।
(घ) **तौ** लेखम् **लिखतः**।
(ङ) **रामः** वानरान् **पश्यति**।
(च) **कृषकः** बीजान् **वपति**।
(छ) **वामनः** वसुधां **याचते**।
(ज) **सूदः** ओदनम् **पचति**।
(झ) **अहम्** त्वाम् **पश्यामि**।
(ञ) **कुम्भकारः** भूमिम् **खनति**।

2. **कर्मवाच्यः—कर्मवाच्य में कर्म प्रधान वाच्य** होता है। **इसमें कर्ता में तृतीया विभक्ति** लगती है। **कर्म में प्रथमा विभक्ति** तथा **क्रिया कर्मानुसार** आत्मनेपद में हो जाती है। **भूतकाल** के प्रयोग के लिए **क्तवतु** के स्थान पर **क्त प्रत्यय** हो जाता है तथा **विधिलिङ्** के स्थान पर **तव्यत्/अनीयर् प्रत्यय** हो जाता है। यह **वाच्य** केवल **सकर्मक धातुओं** का होता है।

उदाहरण :
(क) तेन **पुस्तकम् पठ्यते**।
(ख) तेन **कार्यम् क्रियते**।
(ग) तैः **ग्रन्थः पठ्यते**।
(घ) ताभ्याम् **लेखः लिख्यते**।
(ङ) रामेण **वानराः दृश्यन्ते**।
(च) कृषकेण **बीजाः वप्यन्ते**।
(छ) वामनेन **वसुधा याच्यते**।
(ज) सूदेन **ओदनम् पच्यते**।
(झ) मया **त्वम् दृश्यसे**।
(ञ) कुम्भकारेण **भूमिः खन्यते**।

3. **भाववाच्यः—भाववाच्य** में **भाव प्रधान** वाच्य होता है। इसमें **कर्ता में तृतीया विभक्ति** तथा **क्रिया** हमेशा **प्रथम पुरुष एकवचन** आत्मनेपदी या प्रत्यय युक्त धातुओं में प्रथमा विभक्ति एकवचन में होती है। यह **वाच्य अकर्मक क्रियाओं** वाला होता है।

उदाहरण :
(क) तेन **पठ्यते**।
(ख) तेन **क्रियते**।
(ग) तैः **पठ्यते**।
(घ) ताभ्याम् **लिख्यते**।
(ङ) रामेण **दृश्यते**।
(च) कृषकेण **वप्यते**।
(छ) वामनेन **याच्यते**।
(ज) तेन **पच्यते**।
(झ) मया **दृश्यते**।
(ञ) कुम्भकारेण **खन्यते**।

कर्मवाच्य तथा **भाववाच्य** में प्रयोग होने वाली **धातुओं के रूप लट् लकार** में इस प्रकार से चलेंगे।

लट् लकार

√पठ् (पढ़ना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
मध्यम पुरुष	पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
उत्तम पुरुष	पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

√लिख् (लिखना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिख्यते	लिख्येते	लिख्यन्ते
मध्यम पुरुष	लिख्यसे	लिख्येथे	लिख्यध्वे
उत्तम पुरुष	लिख्ये	लिख्यावहे	लिख्यामहे

√गम् (जाना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
मध्यम पुरुष	गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
उत्तम पुरुष	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

√भू (होना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भूयते	भूयेते	भूयन्ते
मध्यम पुरुष	भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
उत्तम पुरुष	भूये	भूयावहे	भूयामहे

√नी (ले जाना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नीयते	नीयेते	नीयन्ते
मध्यम पुरुष	नीयसे	नीयेथे	नीयध्वे
उत्तम पुरुष	नीये	नीयावहे	नीयामहे

√खाद् (खाना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खाद्यते	खाद्येते	खाद्यन्ते
मध्यम पुरुष	खाद्यसे	खाद्येथे	खाद्यध्वे
उत्तम पुरुष	खाद्ये	खाद्यावहे	खाद्यामहे

√गै (गाना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गीयते	गीयेते	गीयन्ते
मध्यम पुरुष	गीयसे	गीयेथे	गीयध्वे
उत्तम पुरुष	गीये	गीयावहे	गीयामहे

√कृ (करना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
मध्यम पुरुष	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
उत्तम पुरुष	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

√अस् (होना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भूयते	भूयेते	भूयन्ते
मध्यम पुरुष	भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
उत्तम पुरुष	भूये	भूयावहे	भूयामहे

√श्रु (सुनना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
मध्यम पुरुष	श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
उत्तम पुरुष	श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

√दृश् (देखना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दृश्यते	दृश्येते	दृश्यन्ते
मध्यम पुरुष	दृश्यसे	दृश्येथे	दृश्यध्वे
उत्तम पुरुष	दृश्ये	दृश्यावहे	दृश्यामहे

√जि (जीतना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जीयते	जीयेते	जीयन्ते
मध्यम पुरुष	जीयसे	जीयेथे	जीयध्वे
उत्तम पुरुष	जीये	जीयावहे	जीयामहे

√चि (चुनना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चीयते	चीयेते	चीयन्ते
मध्यम पुरुष	चीयसे	चीयेथे	चीयध्वे
उत्तम पुरुष	चीये	चीयावहे	चीयामहे

√वच् (बोलना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	उच्यते	उच्येते	उच्यन्ते
मध्यम पुरुष	उच्यसे	उच्येथे	उच्यध्वे
उत्तम पुरुष	उच्ये	उच्यावहे	उच्यामहे

√खन् (खोदना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खन्यते	खन्येते	खन्यन्ते
मध्यम पुरुष	खन्यसे	खन्येथे	खन्यध्वे
उत्तम पुरुष	खन्ये	खन्यावहे	खन्यामहे

√नम् (झुकना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नम्यते	नम्येते	नम्यन्ते
मध्यम पुरुष	नम्यसे	नम्येथे	नम्यध्वे
उत्तम पुरुष	नम्ये	नम्यावहे	नम्यामहे

√दा (देना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
मध्यम पुरुष	दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे
उत्तम पुरुष	दीये	दीयावहे	दीयामहे

√स्मृ (याद करना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मर्यते	स्मर्येते	स्मर्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्मर्यसे	स्मर्येथे	स्मर्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्मर्ये	स्मर्यावहे	स्मर्यामहे

√हस् (हँसना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
मध्यम पुरुष	हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
उत्तम पुरुष	हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

√क्रीड् (खेलना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
मध्यम पुरुष	क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
उत्तम पुरुष	क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

√स्था (रुकना, बैठना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
मध्यम पुरुष	स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
उत्तम पुरुष	स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

ध्यातव्यम्

- कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के लिए अलग प्रकार से धातुओं का प्रयोग किया जाता है।
- **धातुएँ दो प्रकार** की होती हैं– **सकर्मक** तथा **अकर्मक**।
- **कर्मवाच्य** केवल **सकर्मक धातुओं** में होता है।
- **भाववाच्य** केवल **अकर्मक धातुओं** में होता है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. **वाच्य तीन प्रकार** के होते हैं–1. **कर्तृवाच्य** 2. **कर्मवाच्य** 3. **भाववाच्य**।
2. **कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान** होता है तथा **क्रिया कर्ता के अनुसार** (परस्मैपद में) होती है। इस वाच्य में **कर्तृपद** में **प्रथमा विभक्ति** का प्रयोग होता है।
3. **कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा** तथा **क्रिया कर्म के अनुसार** (आत्मनेपद में) होती है।
4. **भाववाच्य में** कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, **कर्म** नहीं होता तथा **क्रिया भाव के अनुसार** (आत्मनेपद में) होती है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

कर्तृवाच्यः	कर्मवाच्यः	
1. सः पुस्तकानि पठति।	तेन पुस्तकानि .... ।	(पठति/पठ्यन्ते)
2. तौ पुस्तके पठतः।	.... पुस्तके पठ्येते।	(ते/ताभ्याम्)
3. ते पुस्तकम् पठन्ति।	तैः पुस्तकम् .... ।	(पठन्ति/पठ्यते)
4. बालः ग्रन्थम् पठति।	बालेन .... पठ्यते।	(ग्रन्थम्/ग्रन्थः)
5. मुनिः ईशम् स्मरति।	मुनिना ईशः .... ।	(स्मरति/स्मर्यते)
6. छात्रः विद्यालयम् गच्छति।	छात्रेण विद्यालयः .... ।	(गच्छति/गम्यते)
7. माता शिशुम् पश्यति।	.... शिशुः दृश्यते।	(माता/मात्रा)
8. लते भोजनम् खादतः।	.... भोजनम् खाद्यते।	(लतायाः/लताभ्याम्)
9. तौ पर्वतम् पश्यतः।	.... पर्वतः दृश्यते।	(तौ/ताभ्याम्)
10. छात्रा पाठम् स्मरति।	छात्रया पाठः .... ।	(स्मर्यते/स्मर्येते)
11. राजा तम् पश्यति।	राज्ञा सः .... ।	(दृश्यते/पश्यते)
12. सैनिकः दुष्टम् जयति।	.... दुष्टः जीयते।	(सैनिकेन/सैनिकैः)

II. अधोलिखितवाक्यानि भाववाच्ये परिवर्तयत।

(निम्नलिखित वाक्यों को भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए।)

कर्तृवाच्यः	भाववाच्यः
1. सः हसति।	..............................।
2. तौ हसतः।	..............................।
3. ते हसन्ति।	..............................।
4. सा पठति।	..............................।
5. ते पठतः।	..............................।
6. ताः पठन्ति।	..............................।

III. उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत।

(रिक्त स्थानों को उचित पद से पूरा कीजिए।)

कर्तृवाच्यः	कर्मवाच्यः
1. कृषकः क्षेत्रम् खनति।	कृषकेण क्षेत्रम् ....।
2. धनिकः धनम् यच्छति।	.... धनम् दीयते।
3. बालः चन्द्रमसम् ....।	बालेन चन्द्रमा दृश्यते।
4. भवान् कान् पश्यति?	भवता के ....?
5. भवान् कम् यच्छति?	भवता कः ....?
6. भवान् कौ पश्यति?	भवता कौ ....?
7. चौरः धनम् हरति।	.... धनम् ह्रियते।
8. रमा लेखान् लिखति।	रमया .... लिख्यन्ते।
9. बालाः कथाम् शृण्वन्ति।	.... कथा श्रूयते।
10. गायिका गीतं गायति।	गायिकया .... गीयते।
11. छात्राः कोलाहलं कुर्वन्ति।	छात्रैः .... क्रियते।
12. पुत्रः मातरम् सेवते।	पुत्रेण माता ....।
13. छात्राः पाठान् पठन्ति।	.... पाठाः पठ्यन्ते।
14. छात्राः पाठौ पठन्ति।	.... पाठौ पठ्येते।
15. छात्राः पाठम् पठन्ति।	छात्रैः पाठम् ....।

10 समयः

समय देखने के लिए निम्न बातों को समझ लीजिए :

(1)
पूर्णः (सामान्य समय)

(2) 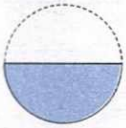
अर्धः (= आधा)

(3) 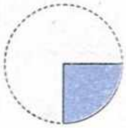
पादः (चौथाई भाग)

(4) 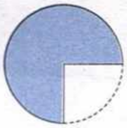
पादोन (पौना)

(5) 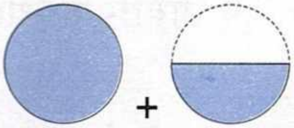
सार्धः (साढ़े)

(6) 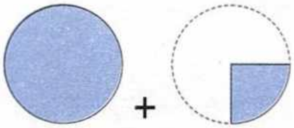
सपादः (सवा)

1. सामान्यसमयः = **पूर्ण**

त्रिवादनम्	द्विवादनम्	षड्वादनम्	नववादनम्	द्वादशवादनम्
(3 : 00)	(2 : 00)	(6 : 00)	(9 : 00)	(12 : 00)

2. सपादसमयः = ... **बजकर 15 मिनट अधिक**

(6 : 15)	(4 : 15)	(5 : 15)	(9 : 15)
सपादषड्वादनम्	सपादचतुर्वादनम्	सपादपञ्चवादनम्	सपादनववादनम्

3. पादोन समयः **(........ बजकर 45 मिनट अथवा .... बजने में 15 मिनट कम)**

(9 : 45)	(1 : 45)	(4 : 45)	(5 : 45)	(6 : 45)
पादोनदशवादनम्	पादोनद्विवादनम्	पादोनपञ्चवादनम्	पादोनषड्वादनम्	पादोनसप्तवादनम्

4. सार्धसमयः = ... **बजकर 30 मिनट अधिक**

(10 : 30)	(1 : 30)	(8 : 30)	(9 : 30)	(11 : 30)
सार्धदशवादनम्	सार्धएकवादनम्/ सार्धैकवादनम्	सार्धअष्टवादनम्	सार्धनववादनम्	सार्धएकादशवादनम्/ सार्धैकादशवादनम्

ध्यातव्यम्

- वाक्य को भली-भाँति समझकर वादनम् या वादने पदों का प्रयोग करें।
- समय पूछने पर प्रथमा, कार्य कब किया इस अर्थ के लिए सप्तमी विभक्ति का प्रयोग कीजिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. पादः चतुर्थांश होता है।
2. अर्धः एक घंटे का आधा समय होता है।
3. सपादः पूर्ण व चतुर्थांश अर्थात् सवा घंटे के लिए प्रयुक्त होता है।
4. पादोन घंटे के चतुर्थांश कम होने पर अर्थात् पौने घंटे के लिए प्रयुक्त होता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. यथानिर्दिष्ट रिक्तस्थानानि पूरयत।

(निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. अधोप्रदत्ताः घटिकाः दृष्ट्वा कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा लिखत यत् शान्तनुः कदा किम् च कार्यम् करोति।

(नीचे दी हुई घड़ियों को देखकर कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर लिखिए कि शांतनु कब कौन-सा काम करता है।)

(क) 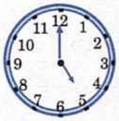 शान्तनुः प्रातः .... उत्तिष्ठति। (पञ्चवादने/द्वादशवादने)

(ख) सः .... विद्यालयं गच्छति। (सार्धसप्तवादने/सार्धषड्वादने)

(ग) 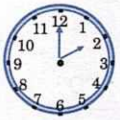 सः .... गृहं प्रत्यागच्छति। (द्विवादने/द्वादशवादने)

(घ) 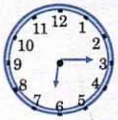 सः .... क्रीडति। (षड्वादने/सपादषड्वादने)

2. अधोप्रदत्ताः घटिकाः दृष्ट्वा कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा लिखत यत् मेट्रोरेलयानम् कदा कुत्र च गच्छति।

(नीचे दी हुई घड़ियों को देखकर कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर लिखिए कि मेट्रो रेल कब और कहाँ जाती है।)

(क) मेट्रोरेलयानम् .... शाहदरा मेट्रोरेलस्थानके तिष्ठति।(नववादने/द्वादशवादने)

(ख) एतत् .... वादने तीसहजारी इति मेट्रोरेलस्थानके गच्छति। (सपादैक/त्रि)

(ग) .... वादने एतत् कश्मीरीगेट इति मेट्रोरेलस्थानके तिष्ठति। (सार्धएक/सार्धषड्)

(घ) .... वादने एतत् त्रिनगरे आगत्य तिष्ठति। (सपादद्वि/सपात्रि)

3. जैसियाया: विद्यालये कदा किं च कार्यक्रमा: भविष्यन्ति? अधोप्रदत्ता: घटिका: दृष्ट्वा कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरम् चित्वा लिखत।

(जैसिया के विद्यालय में कब और क्या कार्यक्रम होंगे? नीचे दी हुई घड़ियों को देखकर कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर लिखिए।)

(क) 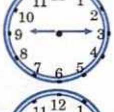 .... मुख्यातिथि: आगमिष्यति। (पादोनत्रिवादने/सपादनववादने)

(ख) 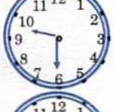 .... वादने छात्रा: गीतमेकम् गास्यन्ति। (पादोनषड्/सार्धनव)

(ग) 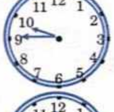 .... वादने बाला: नर्तिष्यन्ति। (पादोनदश/पादोननव)

(घ) मुख्यातिथि: शिक्षानिदेशक: .... पारितोषिकानि वितरिष्यति। (द्वादशवादने/एकादशवादने)

4. अधोप्रदत्ता: घटिका: दृष्ट्वा कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चिनुत यत् नम्रता कदा किं च करोति?

(जैसिया के विद्यालय में कब और क्या कार्यक्रम होंगे? नीचे दी हुई घड़ियों को देखकर कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर लिखिए।)

(क) 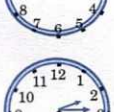 नम्रता .... हस्तपादौ प्रक्षाल्य भोजनं करोति। (द्वादशवादने/द्विवादने)

(ख) सा .... वादने स्वपिति। (पादोनत्रि/सपादद्वि)

(ग) सा .... दुग्धं पिबति। (सार्धचतुर्वादने/षड्वादने)

(घ) सा .... क्रीडनाय गच्छति। (पादोनपञ्चवादने/सपादपञ्चवादने)

II. अङ्केन लिखितं समयं संस्कृतपदेन लिखित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(अंकों में लिखे समय को संस्कृत पदों में लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. गोप: 4.30 .... वादने उत्तिष्ठति।
2. स: गोभ्य: 4.45 .... वादने घासम् यच्छति।
3. स: 5.00 .... वादने गाम् दोग्धि।
4. स: 5.15 .... वादने दुग्धम् वितरति।
5. विजय: प्रात: 6.00 .... वादने जागर्ति।
6. सुवीर: 6.15 .... वादने व्यायामं करोति।
7. जैसिया सायंकाले 6.30 .... वादने चायपानम् करोति।
8. सा 9.00 .... वादने स्वपिति।
9. एका चटका प्रात: 4.00 .... वादने जागर्ति।
10. सा 4.15 .... वादने शावकेभ्य: अन्नम् यच्छति।
11. सा मध्याह्ने 12.00 .... वादने जलम् पिबति।
12. सा सायंकाले 7.45 .... वादने स्वनीडम् प्रति गच्छति।
13. एक: श्रमिक: अपराह्ने 2.00 .... वादने पलाण्डुना सह रोटिकाम् खादति।
14. स: पुन: 2.30 .... वादने परिश्रमाय तत्पर: भवति।
15. स: सायंकाले 5.15 .... वादने पर्यन्तम् कठोरम् उद्यमम् करोति।

III. अङ्केन लिखितं समयं पदेन लिखत।

(अंकों में लिखित समय को पदों में लिखिए।)

1. 8.00 .... वादनम्
2. 8.30 .... वादनम्
3. 8.45 .... वादनम्
4. 9.15 .... वादनम्

11 संख्या-ज्ञानम्

गणना–1 से 100 तक   एकतः (1) – शत (100) पर्यन्तम्

		संख्यावाचिनः शब्दाः	पुंल्लिङ्गः	स्त्रीलिङ्गः	नपुंसकलिङ्गः
1	(१)	एक	एकः बालः	एका बाला	एकम् पत्रम्
				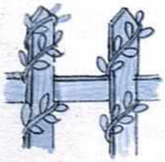	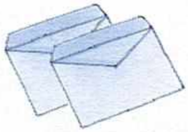
2	(२)	द्वि	द्वौ वृषभौ	द्वे लते	द्वे पत्रे
			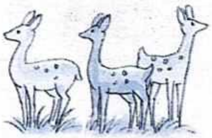		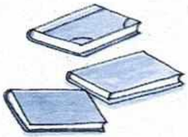
3	(३)	त्रि	त्रयः मृगाः	तिस्रः अम्बाः	त्रीणि पुस्तकानि
				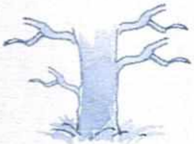	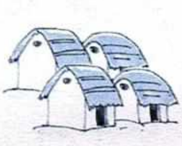
4	(४)	चतुः/चतुर्	चत्वारः कुक्कुटाः	चतस्रः शाखाः	चत्वारि गृहाणि
					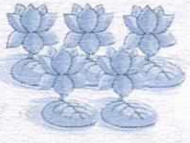
5	(५)	पञ्च	पञ्च मूषकाः	पञ्च पाचिकाः	पञ्च कमलानि
					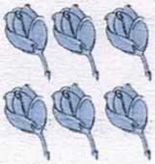
6	(६)	षड् (षट्)	षड् ग्रन्थाः	षड् मालाः	षड् पुष्पाणि

7 (७) सप्त — सप्त दिवसाः — सप्त मालाः — सप्त चक्राणि

8 (८) अष्ट — अष्ट कन्दुकाः — अष्ट महिलाः — अष्ट मित्राणि

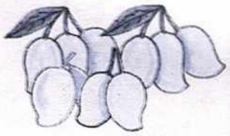

9 (९) नव — नव कपोताः — नव कलिकाः — नव फलानि

10 (१०) दश — दश अध्यापकाः — दश अध्यापिकाः — दश पुस्तकानि

11	(११)	एकादश	12	(१२)	द्वादश
13	(१३)	त्रयोदश	14	(१४)	चतुर्दश
15	(१५)	पञ्चदश	16	(१६)	षोडश
17	(१७)	सप्तदश	18	(१८)	अष्टादश
19	(१९)	नवदश / एकोनविंशति	20	(२०)	विंशति

संख्यावाची शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। गणनावाचक संख्या शब्दों में एक से चतुर् तक के शब्दों के रूप तीनों लिंगों में विशेष्य के अनुसार चलते हैं; यथा–एकः नरः। एका बाला। एकम् छत्रम्। पञ्चन् से नवदशन् तक के शब्द रूप तीनों लिंगों में एक जैसे ही चलते हैं। विंशति से नवनवति तक के सभी संख्याओं के रूप केवल स्त्रीलिंग में इकारान्त मति की तरह चलते हैं; यथा–विंशतिः, षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः और नवतिःइत्यादि। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् इत्यादि के रूप स्त्रीलिंग सरित् के समान चलते हैं। शत, सहस्त्र, अयुत तथा लक्ष आदि शब्दों के रूप नपुंसकलिंग में फल के समान चलेंगे। पूरणार्थक संख्या को प्रकट करने वाले शब्दों के रूप स्त्रीलिंग में प्रथमा, द्वितीया, पुंल्लिग में प्रथमः, द्वितीयः तथा नपुंसकलिंग में प्रथमम्, द्वितीयम् की तरह चलते हैं।

एक शब्द (हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होगा)

	एकवचन पुंल्लिङ्ग	एकवचन स्त्रीलिङ्ग	एकवचन नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एक: बाल:	एका माता	एकम् पुस्तकम्
द्वितीया	एकम् बालम्	एकाम् अम्बाम्	एकम् पुस्तकम्
तृतीया	एकेन बालकेन	एकया अम्बया	(शेष पुंल्लिंग के
चतुर्थी	एकस्मै बालकाय	एकस्यै अम्बायै	समान)
पंचमी	एकस्मात् बालकात्	एकस्या: अम्बाया:	
षष्ठी	एकस्य बालकस्य	एकस्या: अम्बाया:	
सप्तमी	एकस्मिन् बालके	एकस्याम् अम्बायाम्	

द्वि शब्द (हमेशा द्विवचन में प्रयुक्त होगा)

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ गजौ	द्वे कन्ये	द्वे पादत्राणे
द्वितीया	द्वौ गजौ	द्वे कन्ये	द्वे पादत्राणे
तृतीया	द्वाभ्याम् गजाभ्याम्	द्वाभ्याम् कन्याभ्याम्	द्वाभ्याम् पादत्राणाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम् गजाभ्याम्	द्वाभ्याम् कन्याभ्याम्	द्वाभ्याम् पादत्राणाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम् गजाभ्याम्	द्वाभ्याम् कन्याभ्याम्	द्वाभ्याम् पादत्राणाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो: गजयो:	द्वयो: कन्ययो:	द्वयो: पादत्राणयो:
सप्तमी	द्वयो: गजयो:	द्वयो: कन्ययो:	द्वयो: पादत्राणयो:

त्रि शब्द (हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होगा)

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रय: मूषका:	तिस्र: शिक्षिका:	त्रीणि नेत्राणि
द्वितीया	त्रीन् मूषकान्	तिस्र: शिक्षिका:	त्रीणि नेत्राणि
तृतीया	त्रिभि: मूषकै:	तिसृभि: शिक्षिकाभि:	त्रिभि: नेत्रै:
चतुर्थी	त्रिभ्य: मूषकेभ्य:	तिसृभ्य: शिक्षिकाभ्य:	त्रिभ्य: नेत्रेभ्य:
पंचमी	त्रिभ्य: मूषकेभ्य:	तिसृभ्य: शिक्षिकाभ्य:	त्रिभ्य: नेत्रेभ्य:
षष्ठी	त्रयाणाम् मूषकाणाम्	तिसृणाम् शिक्षिकायाम्	त्रयाणाम् नेत्राणाम्
सप्तमी	त्रिषु मूषकेषु	तिसृषु शिक्षिकासु	त्रिषु नेत्रेषु

चतुर्

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वार: वेदा:	चतस्त्र: महिला:	चत्वारि पुस्तकानि
द्वितीया	चतुर: वेदै:	चतस्त्र: महिला:	चत्वारि पुस्तकानि
तृतीया	चतुर्भि: वेदेभ्य:	चतसृभि: महिलाभि:	चतुर्भि: पुस्तकै:
चतुर्थी	चतुर्भ्य: वेदेभ्य:	चतसृभ्य: महिलाभ्य:	चतुर्भ्य: पुस्तकेभ्य:
पंचमी	चतुर्भ्य: वेदान्	चतसृभ्य: महिलाभ्य:	चतुर्भ्य: पुस्तकेभ्य:
षष्ठी	चतुर्णाम् वेदानाम्	चतसृणाम् महिलानाम्	चतुर्णाम् पुस्तकानाम्
सप्तमी	चतुर्षु वेदेषु	चतसृषु महिलासु	चतुर्षु पुस्तकेषु

पञ्चन् से आगे तक के रूप तीनों लिंगों में एक समान चलेंगे।

	पञ्चन् शब्द (पाँच)		षष् (षट्) शब्द (छह)
प्रथमा	पञ्च नरा:, लता:, पत्राणि	प्रथमा	षड् (षट्) मूषका:, मूषिका:, कमलानि
द्वितीया	पञ्च	द्वितीया	षड् (षट्)
तृतीया	पञ्चभि:	तृतीया	षड्भि:
चतुर्थी:	पञ्चभ्य:	चतुर्थी	षड्भ्य:
पंचमी	पञ्चभ्य:	पंचमी	षड्भ्य:
षष्ठी	पञ्चानाम्	षष्ठी	षण्णाम्
सप्तमी	पञ्चसु	सप्तमी	षट्सु

गणना

अंक	मूल शब्द	प्रथमा विभक्ति का पद	अंक	मूल शब्द	प्रथमा विभक्ति का पद
1	एक	एक:, एका, एकम्	13	त्रयोदशन्	त्रयोदश
2	द्वि	द्वौ, द्वे, द्वे	14	चतुर्दशन्	चतुर्दश
3	त्रि	त्रय:, तिस्र:, त्रीणि	15	पञ्चदशन्	पञ्चदश
4	चतुर्	चत्वार:, चतस्र:, चत्वारि	16	षोडशन्	षोडश
5	पञ्चन्	पञ्च	17	सप्तदशन्	सप्तदश
6	षष्	षट्	18	अष्टादशन्	अष्टादश
7	सप्तन्	सप्त	19	नवदशन्	नवदश
8	अष्टन्	अष्ट	20	विंशति	विंशति:
9	नवन्	नव	21	एकविंशति	एकविंशति:
10	दशन्	दश	22	द्वाविंशति	द्वाविंशति:
11	एकादशन्	एकादश:	23	त्रयोविंशति	त्रयोविंशति:
12	द्वादशन्	द्वादश	24	चतुर्विंशति	चतुर्विंशति:

अंक	मूल शब्द	प्रथमा विभक्ति का पद
25	पञ्चविंशति	पञ्चविंशतिः
26	षड्विंशति	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशति	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशति	अष्टाविंशतिः
29	नवविंशति	नवविंशतिः
30	त्रिंशत्	त्रिंशत्
31	एकत्रिंशत्	एकत्रिंशत्
32	(द्वि) द्वात्रिंशत्	(द्वि) द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंशत्
35	पञ्चत्रिंशत्	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंशत्
39	नवत्रिंशत्	नवत्रिंशत्
40	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्
41	एकचत्वारिंशत्	एकचत्वारिंशत्
42	(द्वा) द्विचत्वारिंशत्	(द्वा) द्विचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत्	त्रिचत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्	षट्चत्वारिंशत्
47	सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत्	नवचत्वारिंशत्
50	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्
51	एकपञ्चाशत्	एकपञ्चाशत्
52	(द्वा) द्विपञ्चाशत्	(द्वा) द्विपञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत्	त्रिपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्	अष्टपञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत्	नवपञ्चाशत्
60	षष्टि	षष्टिः
61	एकषष्टि	एकषष्टिः
62	(द्वा) द्विषष्टि	(द्वा) द्विषष्टिः
63	त्रिषष्टि	त्रिषष्टिः
64	चतु:षष्टि/चतुष्षष्टि	चतु:/चतुष्षष्टिः
65	पञ्चषष्टि	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टि	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टि	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टि	अष्टषष्टिः
69	नवषष्टि	नवषष्टिः
70	सप्तति	सप्ततिः
71	एकसप्तति	एकसप्ततिः
72	(द्वा) द्विसप्तति	(द्वा) द्विसप्ततिः
73	त्रिसप्तति	त्रिसप्ततिः
74	चतु:/चतुस्सप्तति	चतु:/चतुस्सप्ततिः
75	पञ्चसप्तति	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्तति	षट्सप्ततिः
77	सप्तसप्तति	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्तति	अष्टसप्ततिः
79	नवसप्तति	नवसप्ततिः
80	अशीति	अशीतिः
81	एकाशीति	एकाशीतिः
82	द्वयशीति	द्वयशीतिः
83	त्र्यशीति	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीति	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीति	पञ्चाशीतिः
86	षडशीति	षडशीतिः
87	सप्ताशीति	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीति	अष्टाशीतिः
89	नवाशीति	नवाशीतिः
90	नवति	नवतिः

अंक	मूल शब्द	प्रथमा विभक्ति का पद	अंक	मूल शब्द	प्रथमा विभक्ति का पद
91	एकनवति	एकनवतिः	98	अष्टनवति	अष्टनवतिः
92	द्वि/द्वानवति	द्वि/द्वानवतिः	99	नवनवति	नवनवतिः
93	त्रि/त्रयोणवति	त्रि/त्रयोणवतिः	100	शत	शतम्
94	चतुर्णवति	चतुर्णवतिः	1,000	सहस्र	सहस्रम्
95	पञ्चनवति	पञ्चनवतिः	10,000	अयुत	अयुतम्
96	षण्णवति	षण्णवतिः	1,00,000	लक्ष	लक्षम्
97	सप्तनवति	सप्तनवतिः	1,00,00,000	कोटि	कोटिः

ध्यातव्यम्

- **संख्या शब्द विशेषण होते हैं।** अतः जिस **विशेष्य** के लिए प्रयुक्त हों उसी विशेष्य के समान **विभक्ति, वचन** तथा **लिंग** से युक्त होते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. **एक से चतुर्** तक की संख्याओं के रूप **तीनों लिंगों** में चलते हैं।
2. **पञ्च के बाद** सभी रूप तीनों लिंगों में **एक समान** चलते हैं। विंशतिः, षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः व नवतिः के रूप सभी विभक्तियों में मति के समान चलेंगे। **शतम्** व इसके बाद **नपुंसकलिंग** में रूप चलेंगे।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोप्रदत्तं चित्रं गणयित्वा कोष्ठकात् उचितपदं चित्वा च लिखत।

(निम्नलिखित चित्रों को गिनकर कोष्ठक में से सही पद चुनकर लिखिए।)

1. .... चन्द्राः। (षड्/षडाः)

2. 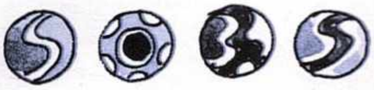 .... कन्दुकाः। (चत्वारः/चत्वाराः)

3. .... पुस्तके। (द्वौ/द्वे)

4. .... विमानानि। (चत्वारः/चत्वारि)

5. 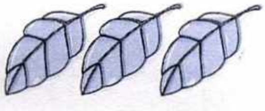 .... पत्राणि। (त्रयः/त्रीणि)

6. .... मित्रे। (द्वौ/द्वे)

7. 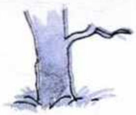 .... शाखा। (एकः/एका)

8. .... आम्राणि। (त्रयः/त्रीणि)

9. 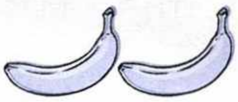 .... कदलीफले। (द्वौ/द्वे)

10. .... मूषकौ। (द्वे/द्वौ)

II. कोष्ठके प्रदत्तं अङ्कानुसारं संख्यावाचिपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक में दिए गए अंक के अनुसार संख्यावाची शब्द से से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।)

1. 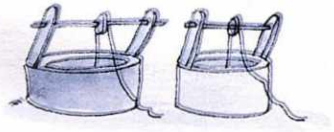 .... कूपौ। (2)

2. ………………… पुष्करः। (1)

3. 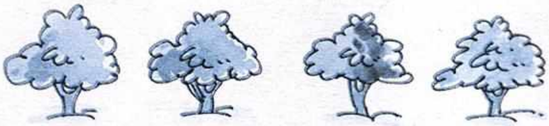 ………………… वृक्षाः। (4)

4. ………………… उटजौ। (2)

5. 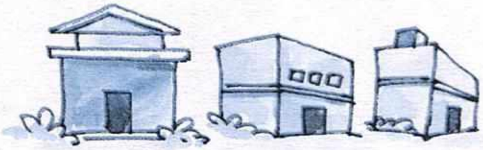 ………………… गृहाणि। (3)

6. 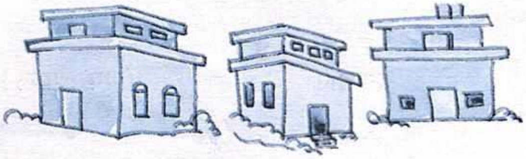 ………………… भवनानि। (3)

7. 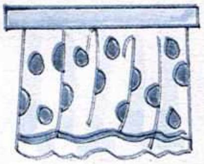 ………………… यवनिका। (1)

8. ………………… पुष्पम्। (1)

9. ………………… शोधनी। (1)

10. 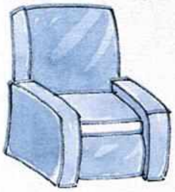 ………………… विश्रामासनम्। (1)

III. अधोलिखितचित्राणां वाक्यैः सह उचितं मेलनं कुरुत।

(निम्नलिखित चित्रों का वाक्यों के साथ सही मिलान कीजिए।)

1.	(*i*) द्वौ स्यूतौ
2.	(*ii*) द्वौ घटौ
3.	(*iii*) एका मंजूषा
4.	(*iv*) एकः कटः
5.	(*v*) तिस्रः छात्राः
6.	(*vi*) त्रयः कच्छपाः
7.	(*vii*) एका घटिका
8. 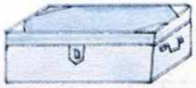	(*viii*) द्वे उच्चपीठे
9. 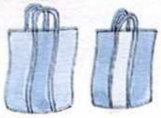	(*ix*) तिस्रः मीनाः
10.	(*x*) चत्वारः अश्वाः

12 अशुद्धिशोधनम्

संस्कृत नियमों की भाषा है। अतः इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक ही करना चाहिए अन्यथा वाक्य अशुद्ध हो जाते हैं। अशुद्धियाँ प्रायः कारक व उपपद विभक्तियों, वचन प्रयोग, लिंग विचार तथा कर्तृपद के साथ अनुचित क्रियापद के प्रयोग में ही होती हैं; जैसे–

1. **अद्य मम मित्राः मम गृहे आगमिष्यन्ति।**
   प्रस्तुत उदाहरण में मित्र शब्द के रूप पुंल्लिग में चलाए गए हैं, जबकि मित्र शब्द नित्य नपुंसकलिंग है। अतः शुद्ध वाक्य होगा–अद्य मम मित्राणि मम गृहे आगमिष्यन्ति।
2. **भवान् किम् करोषि?**
   यहाँ भवान् कर्तृपद के साथ मध्यम पुरुष का प्रयोग नहीं होना चाहिए, क्योंकि भवत् (आप) शब्द के साथ हमेशा प्रथम पुरुष का ही प्रयोग होता है। (मध्यम पुरुष के साथ सिर्फ युष्मद् तथा उत्तम पुरुष के साथ केवल अस्मद् शब्द रूप का प्रयोग ही होता है) अतएव शुद्ध वाक्य होगा–भवान् किम् करोति?
3. **श्री लक्ष्मीम् नमः।**
   इस उदाहरण में उपपद विभक्ति के नियम का उल्लंघन हुआ है। लक्ष्मी शब्द में नमः पद के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग अनुचित है। नमः पद के साथ हमेशा चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसलिए शुद्ध रूप होगा–श्री लक्ष्म्यै नमः।
4. **अद्य सोमवासरः अस्ति, श्वः भौमवासरः अभवत्।**
   प्रस्तुत उदाहरण में श्वः (आने वाला कल) के साथ लङ् लकार का प्रयोग उचित नहीं है। श्वः के साथ भविष्यत् काल का प्रयोग ही शुद्ध होगा। अद्य सोमवासरः अस्तिः श्वः भौमवासरः भविष्यति।

ध्यातव्यम्

- उपपद विभक्तियों के नियमों का विशेष रूप से ध्यान रखकर विभक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
- एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन, द्विवचन के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के साथ बहुवचन के क्रियापद का ही प्रयोग होगा।
- विशेष्य–विशेषण तथा उपमान–उपमेय में समान विभक्ति, वचन तथा लिंग का प्रयोग होता है।
- युष्मद् शब्द के रूपों के साथ वचनानुसार केवल मध्यम पुरुष की क्रिया का तथा अस्मद् शब्द के रूपों के साथ केवल उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है।
- अस्मद् तथा युष्मद् शब्दों के अतिरिक्त शेष सभी शब्द रूपों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है।
- परस्मैपद की क्रिया वाले वाक्यों में कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।
- यदि धातु उपसर्ग से युक्त हो तो 'क्त्वा' प्रत्यय की जगह ल्यप् प्रत्यय के प्रयोग का ही विधान है।
- अकारान्त पत्र, मित्र, वन, पुष्प, चक्र इत्यादि के रूप नपुंसकलिंग में चलते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. नमः पद के साथ हमेशा चतुर्थी विभक्ति तथा √नम् के साथ हमेशा द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।
2. अद्य के साथ वर्तमान काल/लट् लकार का, श्वः के साथ भविष्यत् काल/लृट् लकार का तथा ह्यः के साथ भूतकाल/लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिम् कुरुत।

(कोष्ठक से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. .... परितः बालाः क्रीडन्ति। (वृक्षस्य/वृक्षम्)
2. .... सह सीता अपि अगच्छत्। (रामस्य/रामेण)
3. .... मोदकम् रोचते। (माम्/मह्यम्)
4. .... बालः हसति। (गच्छन्तः/गच्छन्)
5. मम .... अत्र अस्ति। (भवनः/भवनम्)
6. भवान् किम् ....? (खादसि/खादति)
7. सः बालः कुत्र ....? (गच्छतः/गच्छति)
8. उन्नतान् .... पश्य। (पर्वतम्/पर्वतान्)
9. बालिका पितरम् ....। (नमिष्यति/नंस्यति)
10. .... अवकाशः आसीत्। (श्वः/ह्यः)
11. सः दण्डी आश्रमे ....। (वसति/वससि)
12. त्वम् अत्र किम् ....? (कुरुथ/करोषि)
13. एकः .... मूषकम् आनयति। (मुनिः/मुनी)
14. .... चन्द्रमसम् पश्यति। (बालकः/बालकम्)
15. .... सर्पाः घटे आसन्। (कृष्णः/कृष्णाः)
16. कृषकः कृषिक्षेत्रम् .... कर्षति। (हलात्/हलेन)

17. अश्ववारः .... अपतत्।		(अश्वेन/अश्वात्)

18. .... दर्पणे स्वमुखम् पश्य।		(स्वच्छम्/स्वच्छे)

19. धिक् त्वाम् ....।		(असत्यवादिनम्/असत्यवादिनाम्)

20. .... बालकाः फलानि खादन्ति।		(सर्वाः/सर्वे)

II. अधोलिखितेषु वाक्येषु रञ्जितपदं संशोध्य वाक्यं पुनः लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों को शुद्ध करके वाक्य पुनः लिखिए।)

1. लक्ष्मीं नमः। ....
2. एषा मम निधिः अस्ति। ....
3. आत्मा अजरा भवति। ....
4. ह्यः भौमवारः अस्ति। ....
5. श्रीकृष्णम् नमः। ....
6. आवाम् पठितुम् इच्छामि। ....
7. अहम् आगत्वा क्रीडिष्यामि। ....
8. एतत् गृहम् सुन्दरः अस्ति। ....
9. एषः मम विद्यालयः अस्मि। ....
10. ते ग्रामात् ह्यः आगमिष्यन्ति। ....
11. भवान् कुत्र गमिष्यसि? ....
12. पर्वतेन भल्लुकः अवतरति। ....
13. सः ग्रन्थः पठितः। ....
14. तिस्रः बालकाः गच्छन्ति। ....
15. चत्वारः बालिकाः नृत्यन्ति। ....
16. द्वे बालकौ नमतः। ....
17. एकः सिंहः वने अवसन्। ....
18. एकः नारी जलम् आनयति। ....
19. एषा मीना तरतः। ....
20. मुनयः यजतः। ....

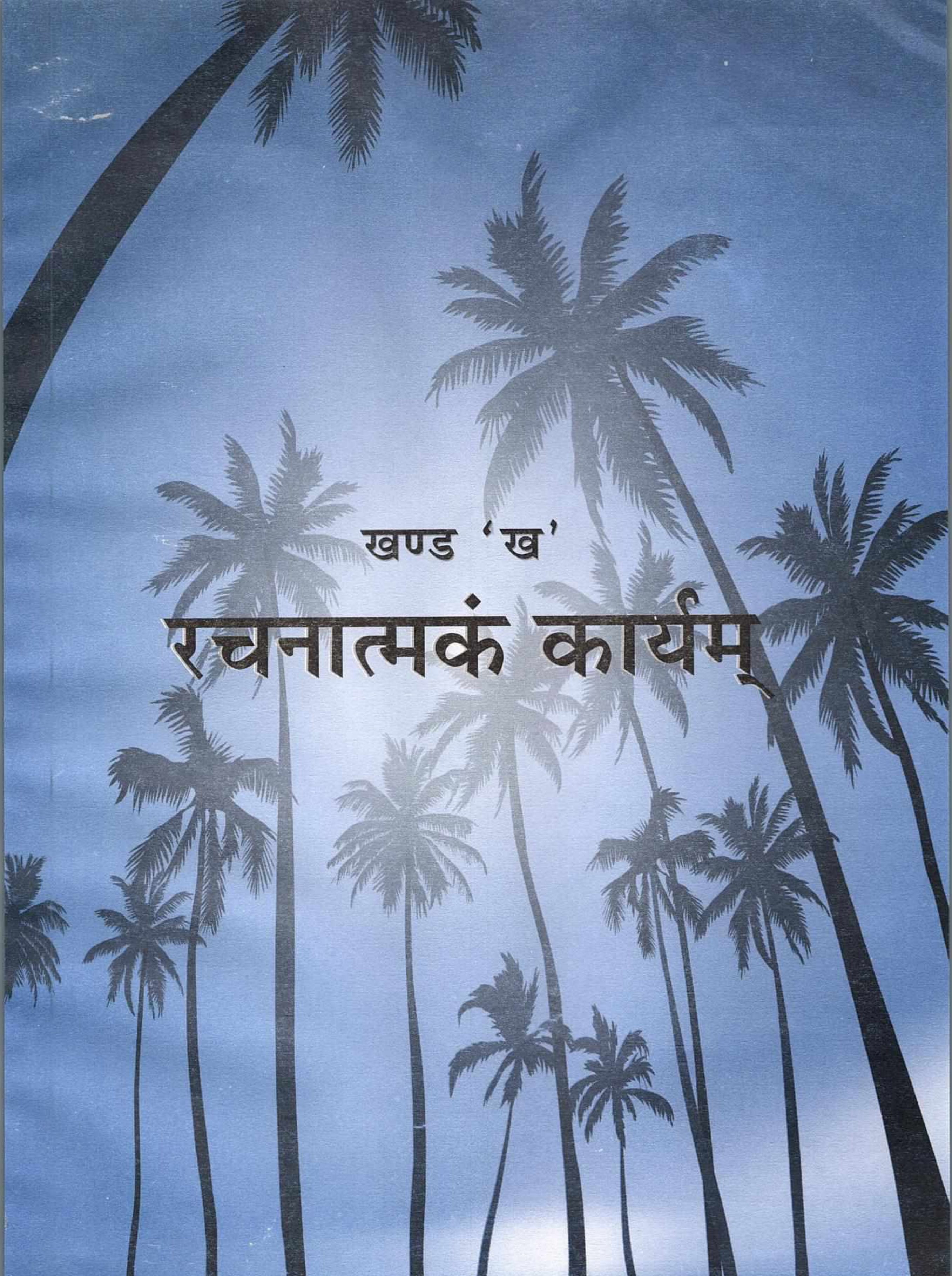

खण्ड ‘ख’

रचनात्मकं कार्यम्

13 पत्रलेखनम्

संस्कृत में पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. पत्र संक्षिप्त एवं सारगर्भित होना चाहिए।
2. यदि प्रश्न में लेखक का नाम बताया गया हो तो पत्र उसी की तरफ से लिखा जाना चाहिए।
3. मंजूषा के शब्दों को बार-बार पढ़कर पहले पेंसिल से पत्र में भरकर फिर पेन से तुरंत पक्का कर लेना चाहिए।
4. पत्र के आरंभ में पारिवारिक-पत्रों में बड़ों के लिए सादरं नमोनमः, सादरं प्रणामः तथा अंत में भवदीयः या भवतः प्रियः या भवदाज्ञाकारी बालः इत्यादि पदों का प्रयोग करना चाहिए। छोटों के लिए आरंभ में स्नेहाशीषम् या शुभाशीषम् लिखकर अंत में त्वदीयः शुभचिन्तकः लिखा जा सकता है।
5. मित्र के लिए आरंभ में सप्रेम नमोनमः तथा अंत में भवदीयः सखा या भवतः बन्धुः इत्यादि लिख सकते हैं।
6. व्यावहारिक-पत्रों में भी आरंभ में नमोनमः तथा अंत में भवदीयः लिखा जा सकता है।

उदाहरण–

मञ्जूषातः पदानि विचित्य अधोलिखितानि पत्राणि पूरयत।

(मंजूषा से उचित शब्द चुनकर निम्नलिखित पत्रों को पूरा कीजिए।)

1. तव मित्रम् विजयः सप्तम कक्षायाम् प्रथमं स्थानं प्राप्तवान्। तम् प्रति वर्धापन-पत्रम् पूरयत।

(आपके मित्र विजय ने सातवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उसको लिखे बधाई-पत्र को पूरा कीजिए।)

रामानुज संस्कृत विद्यालयः
देहलीतः
20.03.20XX

प्रियमित्रं विजय!
सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। भवतः पत्रं पठित्वा ज्ञातम् यत् भवान् परीक्षायाम् प्रथमं स्थानम् प्राप्तवान्। इदम् श्रुत्वा मम चित्तं प्रसन्नम् अभवत्। तव परिश्रमस्य एव फलम् एतत्। भविष्ये अपि भवान् उत्तरोत्तरं सफलताम् प्राप्नोतु एषा मम शुभकामना। मातृपितृचरणेषु मम प्रणामाः।

भवतः सुहृद्
सुधीरः

सप्रेम नमोनमः, विजय!, स्थानम्, कुशलम्, अभवत्, श्रुत्वा, सफलताम्, फलम्, मम, प्रणामाः

2. तव नाम रोहितः अस्ति। स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवम् वर्णयन् पत्रम् पूरयत।

आपका नाम रोहित है। अपने विद्यालय के वार्षिककोत्सव का वर्णन करते हुए पत्र को पूरा कीजिए।

चाणक्य छात्रावासः
देहली
तिथिः 25.05.20XX

प्रियमित्रं रमेश!
सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं **तत्रास्तु**। अहं स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवस्य विवरणम् तव **प्रसादाय** लिखामि। तस्मिन् अवसरे अस्माकं विद्यालयः **वधूरिव** भूषितः आसीत्। इतस्ततः मार्गेषु विविधवर्णाः ध्वजाः **शोभन्ते** स्म। उत्सवस्य अध्यक्षः **शिक्षानिदेशकः** आसीत्। केचन छात्राः एकम् **नाटकम्** अकुर्वन्। एका छात्रा आकर्षकम् नृत्यम् **अकरोत्**। अध्यक्षमहोदयः **पारितोषिकानि** अपि **वितरितवान्**। गृहे सर्वेभ्यो मम **प्रणामाः**।

भवतः मित्रम्
रोहितः

> वितरितवान्, वधूरिव, प्रणामाः, अकरोत्, प्रसादाय, नाटकम्,
> तत्रास्तु, शोभन्ते, शिक्षानिदेशकः, पारितोषिकानि

ध्यातव्यम्

- मंजूषा में दिए सभी शब्दों को ध्यान से पढ़कर समझ लें, फिर भरना शुरू करें।
- पूरे पत्र को पुनः लिखें।
- उत्तरों पर सही संख्या डालकर पत्र में उन्हें रेखांकित करें।
- पत्र पुनः उत्तर पुस्तिका में लिखते समय वर्तनी का ध्यान रखें, विशेषकर मंजूषा के शब्दों की।
- प्रश्न को ध्यान से पढ़कर संबोधित किसे करना है तथा भवदीया या भवदीयः के बाद क्या नाम लिखना है, इसका निर्णय करें।

प्रायोगिकाभ्यासः

मञ्जूषातः पदानि विचित्य अधोलिखितानि पत्राणि पूरयन्तु।
(मंजूषा में दिए गए शब्दों से निम्नलिखित पत्रों को पूरा कीजिए।)

1. **त्वम् छात्रावासे वससि। हैदराबादनगरस्य चारमीनारं दर्शनाय आयोजितं शैक्षिकभ्रमणहेतु धनप्रेषणाय स्वपितरं प्रति पत्रं पूरयत।**

   (आप छात्रावास में रहते हैं। हैदराबाद के चारमीनार को देखने के लिए शैक्षिक भ्रमण पर जाने हेतु पैसे भेजने के लिए पिता जी को लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

   चिन्मयछात्रावासः
   नवदेहली
   23.01.20XX

   आदरणीयाः (1)...................,
   सादरम् नमोनमः।

(2)................ यत् मम अर्धवार्षिकी परीक्षा समाप्ता अभवत्। मम उत्तरपत्राणि (3)................ अभवन्। मम (4)................ एकस्याः शैक्षिकयात्रायाः (5)................ कृतः। वयम् हैदराबाद चारमीनारं (6)................ गमिष्यामः। भवन्तः यात्राव्ययार्थम् (7)................ रुप्यकाणि (8)................। शेषम् सर्वम् (9)................।

भवदीयः प्रियपुत्रः

(10)................

राकेशः, पितृमहाभागाः, शोभनानि, निवेदयामि, सहस्रद्वयम्,
विद्यालयेन, द्रष्टुम्, प्रबन्धः, प्रेषयन्तु, कुशलम्

2. तव मित्रम् उत्तराखण्डे पर्वतस्खलनेन पीडितजनानाम् सहायतार्थम् गच्छसि। स्वमित्रम् प्रति पत्रम् पूरयत।

(आपका मित्र उत्तराखंड में पर्वत-स्खलन से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए गया है। अपने मित्र को लिखे पत्र को पूरा कीजिए।)

विजयनगरम्
चेन्नई
तिथिः 02.10.20XX

प्रिय विष्णुदत्त!
(1)................।

मम माता अवदत् यत् (2)................ उत्तरांचले पर्वतस्खलनात् पीडितानाम् सहायतार्थम् (3)................ (4)................ इच्छसि। (5)................ च शिविर सामग्रीं भोज्यसामग्रीमपि नेष्यसि। कृपया (6)................ योगदानम् अपि स्वीकरोतु। अहम् (7)................ पञ्चसहस्ररुप्यकाणि अपि च (8)................ प्रेषयिष्यामि। शुभाः सन्तु ते (9)................।

भवतः (10)................
सचिनः

तत्र, नमस्ते, पन्थानः, त्वम्, ट्रकयानेन, गन्तुम्,
एकत्रीकृतानि, मम, अभिन्नमित्रम्, भोज्यपदार्थान्

3. तव नाम ध्रुवः अस्ति। स्वभगिन्याः जैसिकायाः विवाहे निमन्त्रणं दातुं स्वमित्रं प्रति पत्रं पूरयत।

(आपका नाम ध्रुव है अपनी बहन जैसिका के विवाह में निमंत्रण देने के लिए अपने मित्र को लिखे पत्र को पूरा कीजिए।)

पटेलनगरम्
देहली
तिथिः 25.10.20XX

प्रियमित्रं रोहित!
सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं (1) ....।

मित्र! अहम् प्रसन्नतापूर्वकम् (2).................... यत् मम (3).................. जैसिकाया: विवाह: (4).................. पञ्चम्याम् तिथौ निश्चित:जात:। त्वम् अत्र (5).................... पूर्वत: एव प्राप्त: स्या:। त्वया (6).................. अत्र आगन्तव्यं वर्तते। तव उपस्थिति: विवाहे (7).................. अस्ति। आदरणीयाभ्यां पितृभ्याम् सस्नेहं (8).................. अस्तु (9).................. प्रतीक्षमाण:।

(10)........................

ध्रुव:

अग्रिममासस्य, तत्रास्तु, ज्ञापयामि, भगिन्या:, अनिवार्या,
त्रिदिनानि, भवन्मित्रम्, अवश्यम्, तवागमनम्, नमोनम:

4. तव नाम शिवम् अस्ति। स्वविद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् स्वमित्रं प्रति पत्रं पूरयत।

(आपका नाम शिवम् है। अपने विद्यालय का वर्णन करते हुए अपने मित्र को लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

खजूरीग्रामात्
नवदेहली

तिथि: 26.11.20XX

प्रिय मित्र (1)....................!

(2)....................।

अहम् अत्र कुशलोऽस्मि। छात्रावासे (3).................... मम अनेकानि मित्राणि सन्ति। (4).................... स्वविद्यालयस्य वर्णनं कर्तुम् इच्छामि। मम (5).................... अतीव विशाल: सुन्दर: वातानुकूलित: च अस्ति। वसन्तकुञ्जे स्थितेऽस्मिन् विद्यालये सर्वे छात्रा: (6).................... सन्ति। अस्माकं सर्वे (7).................... मनोयोगेन पाठयन्ति। तेषां योग्यता तु वस्तुत: प्रशंसनीया एव। वयम् (8).................... अश्वारोहणस्य, क्रिकेटस्य, पादकन्दुकस्य, टेबलटेनिस-बास्केटबाल च इति क्रीडासु प्रशिक्षणमपि (9).............. विस्तरेण पुन: लेखिष्यामि।

भवत: सुहृत्

(10)........................

सुमित, अधुना, परिश्रमिण:, शिवम्, प्राप्नुम:,
अध्यापका:, विद्यालय:, नमस्कार:, अहम्, विद्यालये

5. स्वविद्यालयस्य क्रीडादिवसं वर्णयन् स्वमित्रं प्रति पत्रमेकं पूरयत।

(अपने विद्यालय के खेल दिवस का वर्णन करते हुए अपने मित्र को लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

राजेन्द्रनगरम्
नवदेहली
तिथि: 22.01.20XX

(1)………………… दिनेश!

(2)…………………।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

गतदिनम् अस्माकं (3)………………… क्रीडादिवससमारोहः आयोजितः आसीत्। तत्र छात्रेषु (4)………………… उत्साहः दृष्टः। 'टेबलटेनिस' इति क्रीडायाम् छात्राः (5)………………… कलाकौशलं प्रदर्शितवन्तः। भुशुण्डीचालन प्रतियोगितायाम् विक्रमस्य कौशलं दृष्ट्वा तु सर्वे दर्शकाः (6)………………… एव अभवन्। संगीतमयी आसनप्रतियोगिता अवर्णनीयं (7)………………… अजनयत्। क्रिकेटक्रीडाप्रदर्शनम् दर्शकानाम् मनांसि (8)…………………। भवदीयविद्यालये (9)………………… कदा भविष्यति इति लिखतु भवान्।

भवदीयः

(10)…………………

संजयः

अहरत्, क्रीडादिवसः, प्रियमित्रम्, अपूर्वः, अद्वितीयम्, विद्यालये, कौतूहलं, सप्रेम नमोनमः, अभिन्नहृदयः, मन्त्रमुग्धाः

6. स्वअध्ययनस्य प्रगतेः विषये अग्रजं प्रति पत्रं पूरयत।

(अपनी पढ़ाई की प्रगति के विषय में अपने बड़े भाई को लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

वसन्तकुञ्जनगरम्

(1)…………………

29.10.20XX

पूज्य भ्रातः,

(2)…………………।

अत्र कुशलम् तत्र अस्तु। अहम् (3)………………… प्रगतिविषये किञ्चित् लिखितुम् इच्छामि। अधुना मम शिक्षणम् तु (4)………………… आरब्धम्। अहम् (5)………………… प्रातः सार्धचतुर्वादने उत्तिष्ठामि। षड्वादनपर्यन्तम् पठितानाम् (6)………………… आवृत्तिं करोमि। सार्धषड्वादने विद्यालयम् गमनाय तत्परः (7)…………………। विद्यालयात् आगत्य अहम् सायंकाले गणितस्य (8)………………… करोमि। अतएव अधुना गणिते मम दुर्बलता दूरीभूता। संस्कृतविषयेऽपि अहम् प्रथमम् (9)………………… प्राप्तवान्। पितृभ्याम् मम प्रणामाः।

(10)………………… अनुजः।

राजेशः

सादरं नमस्कारः, नियमेन, भवामि, भवदीयः, पाठानाम्, अभ्यासम्, स्थानम्, नवदेहली, स्वाध्ययनस्य, प्रतिदिनम्

7. नवमी कक्षायाम् प्रवेशं प्राप्तुं प्रधानाचार्याम् प्रति पत्रं पूरयत।

(नवमी कक्षा में प्रवेश पाने के लिए प्रधानाचार्य के प्रति लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

तिथि: 09.11.20XX

माननीये (1)..................

राजकीय माध्यमिक विद्यालय:

वसन्तकुञ्जनगरम्,

नवदेहली

मान्ये

सविनयम् निवेदनम् अस्ति यत् अहम् (2).................. इति कक्षायाम् 90% अङ्कान् (3).................. उत्तीर्ण: जात:। ह्य: एव वयम् वसन्तकुञ्ज इत्यस्मिन् नगरे स्वनिर्मिते (4).................. प्रवेशम् कृतवन्त:। मम पूर्वविद्यालय: इत: एकविंशतिक्रोश (5).................. दूरे अस्ति। अहम् (6).................. विद्यालये प्रवेष्टुम् इच्छामि। (7).................. विद्यालयस्य एकम् बसयानम् अपि मम गृहस्य समीपे एव आगच्छति। (8).................. मह्यम् अपि स्वीकृतिम् (9).................. भवत्य: अनुगृह्णन्तु।

सधन्यवादम्,

भवत्या: (10) .... शिष्य:

विनोद:

भवत्या:, गृहीत्वा, भवत्या:, प्रधानाचार्यामहोदया:, पर्यन्तम्, कृपया, गृहे, आज्ञाकारी, दत्वा, अष्टम

8. स्वविद्यालये आयोजितम् रक्तदानशिविरे रक्तदानस्य विषये स्वपितरंम् प्रति पत्रं पूरयत।

(अपने विद्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर में किए गए रक्तदान के विषय में अपने पिता को लिखे गए पत्र को पूरा कीजिए।)

मानवस्थली छात्रावास:,

वीरेन्द्रग्राम:

तिथि: 27.05.20XX

पूज्य पितृमहोदय,

चरणवन्दना।

अहम् अत्र कुशल: अस्मि।

अहम् भवन्तम् सविनयम् निवेदयामि यत् (1).................. विद्यालये ह्य: रक्तदानशिविरम् आयोजितम्। अस्माकम् (2).................. महोदय: अत्र मुख्यातिथि: आसीत्। सर्वप्रथमम् स: एव (3).................. अकरोत्। तदा (4).................. कृत्वा सर्वे अध्यापका: रक्तदानम् अकुर्वन्। सर्वे (5).................. अपि एतस्मिन् (6).................. अग्रे आसन्। मम (7).................. अपि रक्तदानस्य भावना (8).................. अभवत्। अहम् स्वमित्रेण सह (9).................. अयच्छम्। आशासे यत् भवान् मम भावनां (10).................. प्रसन्न: भविष्यति।

भवदीय: पुत्र:

अनूप:

उत्पन्ना, ज्ञात्वा, मनसि, शुभकार्ये, निदेशक:, रक्तदानम्, एकैकम्, छात्रा:, अस्माकम्, स्वरक्तम्

14 वार्त्तालापः

छात्रो! अब आप संस्कृत भाषा में भी वार्त्तालाप अवश्य कर रहे होंगे। केवल **लेखन से भावाभिव्यक्ति हो सकती है पर किसी भी भाषा का पूरा ज्ञान उसे बोले बिना नहीं हो सकता है।** इसलिए संस्कृत की कक्षा में या संस्कृत-भाषी लोगों के साथ संस्कृत में वार्त्तालाप अवश्य करें। परीक्षा में वार्त्तालाप के लिए जो मंजूषा दी जाए उसी के पदों अथवा वाक्यों को आवश्यकता के अनुसार रिक्त स्थानों में भर लेना चाहिए। बोलचाल की ही तरह लिखते समय भी पूर्व तथा अग्रिम वाक्यों को ध्यान में रखते हुए वार्तालाप को पूरा करने के लिए मंजूषा से सही पदों का चयन करना चाहिए।

उदाहरण–

अधोलिखितान् संवादान् मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दैः पूरयत।

(निम्नलिखित संवादों को मंजूषा में दिए गए उचित शब्दों से पूरा कीजिए।)

1. **मोनिका** – तव अभिधानम् किम् **अस्ति**?
   जया – मम नाम **जया** अस्ति। त्वम् कुत्र गन्तुम् इच्छसि?
   मोनिका – अहम् तु चाणक्यपुरीम् गन्तुम् **इच्छामि**।
   जया – अहम् अपि चाणक्यपुर्याम् एव **स्थिताम्** 'सन्तुष्टि' इति नाम् विपणिम् प्रति गच्छामि।
   मोनिका – तर्हि आगच्छ। आवयोः **स्थानम्** आगच्छति।

   स्थानम्, इच्छामि, अस्ति, स्थिताम्, जया

2. **सुमितः** – हे पुत्र! आगच्छ। आवाम् **कन्दुकेन** क्रीडावः।
   अशोकः – तिष्ठ! अहम् कन्दुकम् **आनयामि**।
   सुमितः – कन्दुकम् नीत्वा बहिः **उद्यानम्** आगच्छ।
   अशोकः – हे जनक! पितामहः अपि उद्याने एव **भ्रमति**।
   सुमितः – वयं सर्वे **मिलित्वा** क्रीडामः।

   भ्रमति, आनयामि, कन्दुकेन, मिलित्वा, उद्यानम्

3. **मानसी** – हे ध्रुव! त्वम् **किम्** करोषि?
   सुवीरः – अहम् तु संस्कृतस्य व्याकरणम् **पठामि**।
   मानसी – त्वम् **संस्कृतव्याकरणम्** किमर्थम् पठसि?
   सुवीरः – संस्कृतव्याकरणम् पठित्वा न केवलम् अहम् **संस्कृत** भाषायाः ज्ञाने समर्थः भविष्यामि अपितु विश्वस्य अन्य-भाषाज्ञाने अपि समर्थः भविष्यामि।
   मानसी – सत्यम् **कथयसि**। संस्कृतभाषा तु संगणकस्य प्रयोगाय सर्वोत्तमा भाषा मन्यते।

   संस्कृत, पठामि, किम्, कथयसि, संस्कृतव्याकरणम्

ध्यातव्यम्

- उत्तर वाले शब्दों को रेखांकित कर देना चाहिए।
- वर्तनी हमेशा शुद्ध रखनी चाहिए।
- काल का प्रयोग वार्त्तालाप के अनुसार ही होना चाहिए।
- वाक्यों में परस्पर संबंध होना चाहिए।
- वाक्यपूर्ति के लिए उत्तर हमेशा वार्त्तालाप से ही प्राप्त हो जाते हैं। यह स्मरण रखना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संवाद को पहले दो तीन बार पूरा पढ़ें।
2. पहले तथा बाद के वाक्यों को पढ़कर रिक्त स्थान भरें, क्योंकि उत्तर उन्हीं दो वाक्यों को देखकर मिल जाएगा।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितान् संवादान् मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दैः पूरयत।

(निम्नलिखित संवादों को मंजूषा से उचित शब्द चुनकर पूरा कीजिए।)

1. **मयूरः** – हे पिक! तव स्वरम् तु अतीव (1)........... अस्ति।

पिकः – जानामि, जानामि परं मम समीपे तु (2)........... पक्षाः न सन्ति। पश्य उलूकम्। अस्य दर्शनम् एव (3)........... भवति।

उलूकः – शृणुत (4)........... मंगलम् स्वरम्। अहम् मन्ये (5)........... मम गृहे कः अपि आगमिष्यति।

शुभम्, अद्य, मधुरम्, विविधवर्णाः, काकस्य

2. **शीला** – हे संगीते! त्वम् किम् करोषि?

संगीता – आगच्छ, अहम् तु (1)........... पश्यामि।

शीला – जानासि अहम् तुभ्यम् (2)........... आनयम्।

संगीता – शोभनम् (3)........... पठित्वा अहम् एतां भ्रातृजायायै सुमित्रायै यच्छामि।

शीला – तव भ्रात: (4)................... कुत्र वसति?

संगीता – स: तु लाजपतनगरे (5)................... ।

गीताम्, दूरदर्शनम्, सञ्जय:, श्रीमद्भगवद्गीताम्, वसति

3. **सन्ध्या** – भो बालक! (1)................... किम् करोषि?

रमण: – अहम् मञ्जूषायाम् (2)................... रक्षामि।

सन्ध्या – (3)................... इदम् क्रीडनकम्?

रमण: – इदम् क्रीडनकम् (4)................... अस्ति। इदम् तु जनकस्य लघु दूरभाषयन्त्रम् अस्ति। दूरात् अपि एतेन वयम् स्वजनै: सह (5)................... कर्तुम् समर्था:।

कीदृशम्, त्वम्, नैव, क्रीडनकानि, वार्त्तालापम्

4. **आभा** – हे भ्रात:! त्वम् (1)................... पठसि?

गुलशन: – अहम् (2)................... अभिज्ञानशाकुन्तलम् पठामि।

आभा – भ्रात:, (3)................... पदस्य अर्थ: किम् अस्ति?

गुलशन: – 'अभिज्ञानपदस्य' (4)................... 'पहचान' इति अस्ति।

आभा – अस्तु। कालिदासस्य कस्या: अन्या अपि रचनाया: नाम (5)................... ?

गुलशन: – मेघदूतम्।

राजेश: – शोभनम्।

अर्थ:, किम् , अभिज्ञान, कालिदासस्य, जानासि

5. **राकेश:** – हे अम्बे! अद्य त्वम् (1)................... प्रज्वालयसि। अहम् जाने अद्य तु दीपावली इति अस्ति?

सावित्री – पुत्र! सत्यम् कथयसि? अधुना आगच्छ प्रदर्शय स्व नवीनानि (2)................... । एतानि तु शोभन्ते।

राकेश: – तव नवीना (3)................... मह्यम् अपि रोचते। परम् (4)................... तु मिष्टान्नानि वाञ्छामि।

सावित्री – रात्रौ यदा वयम् लक्ष्मीगणेशौ पूजयिष्याम: तदा वयम् (5)................... अपि खादाम:। इदानीम् मिष्टान्नानि वितरणाय गच्छाव:।

शाटिका, मिष्टान्नानि, दीपान्, अहम्, वस्त्राणि

6. **विद्या** – भो सुमित्रे, अहम् तु सरोजिनीनगरं (1)............ इच्छामि।

एषः (2)............ कुत्र गच्छति?

सुमित्रा – विद्ये, किम् न (3)............ यदयम् मार्गः तु कुत्रापि न गच्छति।

विद्या – अलम् (4)............ ।

सुमित्रा – हसित्वा अहम् सत्यमेव वदामि जनाः तु अस्मिन् चलन्ति एषः नैव (5)............ ।

जानासि , मार्गः , चलति, गन्तुम्, उपहासेन

II. प्रातः काले दूरभाषे दिनेशः संजयेन सह संवदति। दिनेशः कर्तृवाच्ये संजयः च कर्मवाच्ये वदति। वाच्यानुसारम् संवादम् पूरयत।

(दिनेश ने सवेरे संजय से दूरभाष पर बात की। दिनेश कर्तृ वाच्य में और संजय कर्म वाच्य में बोलता है। वाच्य के अनुसार संवाद पूरा कीजिए।)

दिनेशः – सुप्रभातम्, अधुना (1)............ किम् करोषि?

संजयः – (2)............ स्व पाठः स्मर्यते।

दिनेशः – अद्य तु अवकाशः अस्ति किम् भ्रमणाय न (3)............?

संजयः – श्वः मम संस्कृतस्य कक्षापरीक्षा (4)............ अतएव मया रूपाणि स्मर्यते।

दिनेशः – किम् त्वम् ईश्वरस्य (5)............ अपि करोषि?

संजयः – आम् मया ईश्वरस्य भजनम् नित्यम् क्रियते।

मया, त्वम्, अस्ति, भजनम्, गच्छसि

III. द्रोणाचार्यः वृक्षे कृत्रिमखगम् स्थापयित्वा परीक्षितुम् युधिष्ठिरम् कर्तृवाच्ये प्रश्नं पृच्छति। युधिष्ठिरः च कर्मवाच्ये उत्तराणि यच्छति। वाच्यानुसारम् संवादे रिक्तस्थानानि पूरयत।

(द्रोणाचार्य ने वृक्ष पर कृत्रिम पक्षी स्थापित करके युधिष्ठर की परीक्षा हेतु प्रश्न कर्तृ वाच्य में पूछे। युधिष्ठिर ने कर्म वाच्य में उत्तर दिया। वाच्य के अनुसार संवाद में रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

द्रोणाचार्यः – भो युधिष्ठिर! (1)............ कः तिष्ठति?

युधिष्ठिरः – आचार्य, वृक्षे एकेन (2)............ स्थीयते।

द्रोणाचार्यः – त्वम् अन्यत् किं पश्यसि?

युधिष्ठिरः – मया वृक्षः अपि (3)............?

द्रोणाचार्यः – किम् (4)............ माम् अपि पश्यसि?

युधिष्ठिरः – आम् (5)............ भवान् अपि अवलोक्यते।

द्रोणाचार्यः – त्वम् कस्य लक्ष्यस्य वेधं कर्तुम् (6)............?

दृश्यते, मया, वृक्षे, इच्छसि, खगेन, त्वम्

15 चित्रवर्णनम्

चित्र वर्णन के लिए मंजूषा में शब्द सहायतार्थ दिए जाते हैं।

वाक्य लिखते समय निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. वाक्य जितने कहे जाएँ उतने ही लिखिए।
2. वाक्य छोटे तथा सरल बनाइए।
3. वाक्य रोचक तथा एक ही भाव लिए हुए होने चाहिए।
4. मंजूषा के शब्दों की पूरी सहायता लीजिए।

उदाहरण–

अधोप्रदत्तानां चित्राणां वर्णनं मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा पञ्चवाक्येषु कुरुत।

(नीचे दिए गए चित्रों का वर्णन मंजूषा से उचित शब्द चुनकर पाँच वाक्यों में कीजिए।)

1.

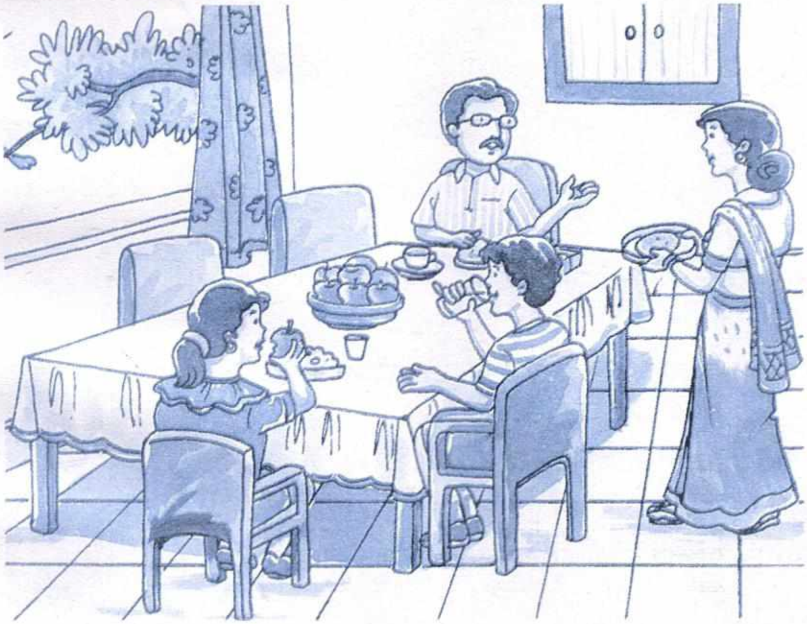

आहारमञ्चः, लज़ानिया, आसन्दिकाः, सेवफलम्, प्रातराशं, दुग्धं, फलानि, रक्षति, डबलरोटिकाम्, द्राक्षाफलम्, बर्गरम्, कदलीफलम्, सर्वे, जनकः, अम्बा

1. अत्र एकः आहारमञ्चः पञ्च आसन्दिकाः च सन्ति।
2. सर्वे प्रातराशम् कुर्वन्ति।
3. अम्बा बर्गरम् लज़ानिया इति खाद्यपदार्थम् च आनयति।
4. बालिका सेवफलम् खादति।
5. बालः च दुग्धम् पिबति।

2.

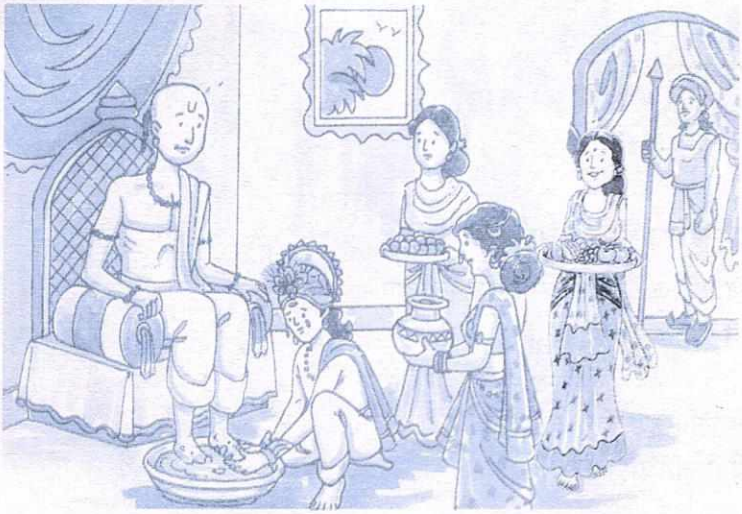

साश्रुः, श्रीकृष्णः, क्षालयति, सुदामा, रुक्मणी, जलम्, सेवकाः, आश्चर्यचकिताः, सेविका, फलानि, मिष्टान्नानि

1. अस्मिन् चित्रे साश्रुः श्रीकृष्णः सुदामा-मित्रस्य चरणौ क्षालयति।
2. रुक्मणी च जलम् ददाति।
3. आश्चर्यचकिताः सेविकाः पश्यन्ति।
4. एका सेविका फलानि आनयति।
5. अपरा सेविका मिष्टान्नानि आनयति।

ध्यातव्यम्

- वाक्यों का निर्माण सावधानी से करना चाहिए।
- वर्तनी का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- चित्र वर्णन करने के लिए, मंजूषा के शब्दों की विभक्तियाँ बदलकर भी वाक्य-निर्माण किया जा सकता है।
- बीच-बीच में अव्यय पदों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- कर्तृपदों का चुनाव करके क्रियापदों का प्रयोग उन्हीं के अनुसार करना चाहिए।
- कारक तथा उपपद विभक्तियों का प्रयोग उचित रूप से किया जाना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. वाक्य संक्षिप्त तथा सारयुक्त होने चाहिए।
2. केवल सरल व स्पष्ट वाक्य ही बनाने चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

अधोप्रदत्तानां चित्राणां वर्णनं मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा पञ्चवाक्येषु कुरुत।

(नीचे दिए हुए चित्रों का वर्णन पाँच वाक्यों में मंजूषा से उचित शब्द चुनकर कीजिए।)

1.

नृत्यति, कुटीरम्, मयूरः
मण्डूकः, मेघाः, पुष्पाणि,
पादपाः, मेघान्, वर्षायाम्
टर्टरायते, जलम्, वर्षति,
दृष्ट्वा, पूरितम्

2.

पठति, वाहने, पुस्तकानि,
चलपुस्तकालयः, बालः,
वृक्षः, जनाः, गृहाणाम्,
पंक्तिबद्धाः, पुस्तकम्

3.

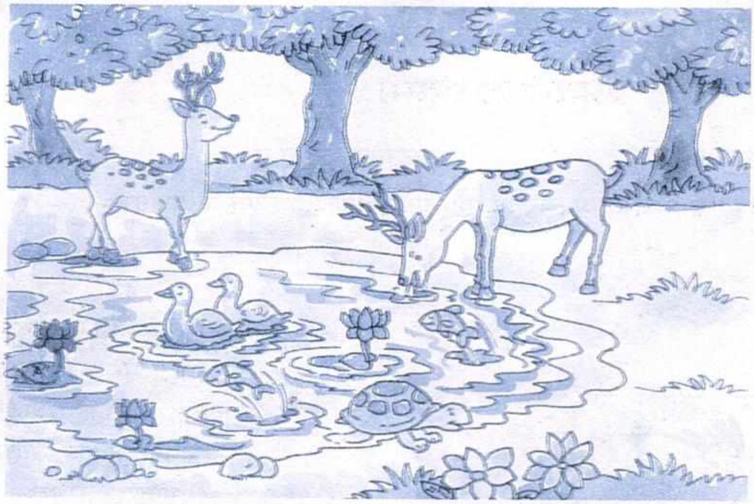

आगच्छति, वनस्य, सरोवरः, तडागे, मीनाः, कमलानि, तटे, मृगः, कच्छपः, बहिः, तरतः

....

....

....

....

....

4.

प्रदूषिता नदी, क्षिपति, क्षालयन्ति, विषाक्तानि, अम्लानि, विलीयन्ते, मलिनं जलं, पीत्वा म्रियन्ते, महिलाः, तिस्रः, जलप्रदूषणस्य

....

....

....

....

....

5.

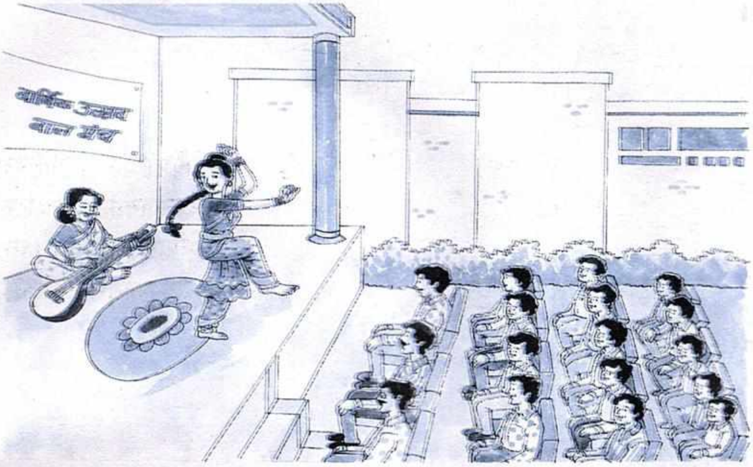

वार्षिकोत्सवस्य, मञ्चे, छात्रा, नृत्यति, सितारम्, वादयति, अतिथयः, शिक्षानिदेशकः, एका, दर्शकाः, प्रधानाध्यापकः

6.

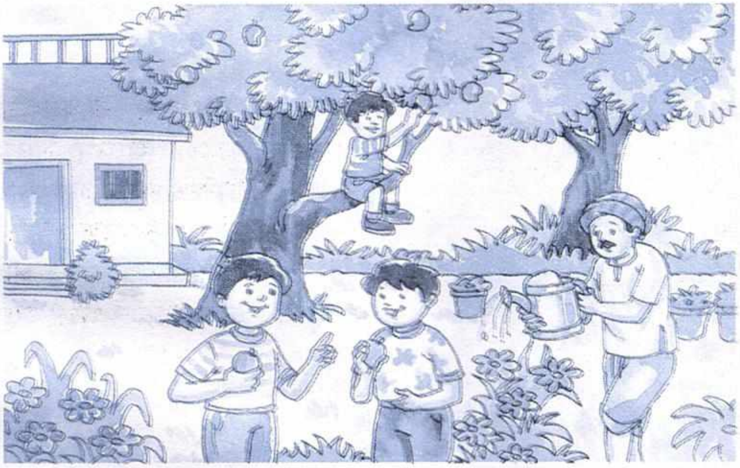

एकम्, गृहम्, आम्रम्, पादपाः, वृक्षाः, वदतः, त्रोटयति, बालकाः, लघुवाटिका, द्वे,

7.

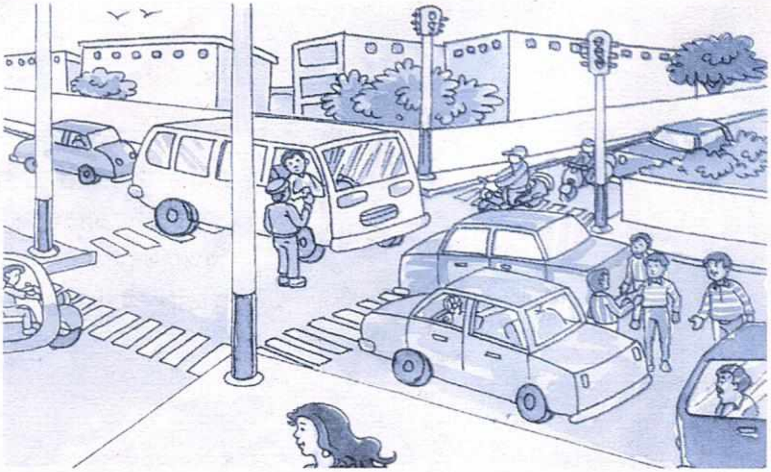

द्विचक्रिका, त्रिचक्रिका, कारचालकाः, विवादम्, बसचालकः, उत्कोचम्, बसयानानि, जनाः

....

....

....

....

....

8.

स्वास्थ्याम्, आवश्यकम्, कीटः, स्वच्छम्, जलम्, कीटनाशकम्, ओषधम्, गर्त्ते, हानिकारकः, ग्रामे, मलेरिया, कीटेन, प्रसन्नाः, स्वस्थाः, स्वच्छे, डेंगू

....

....

....

....

....

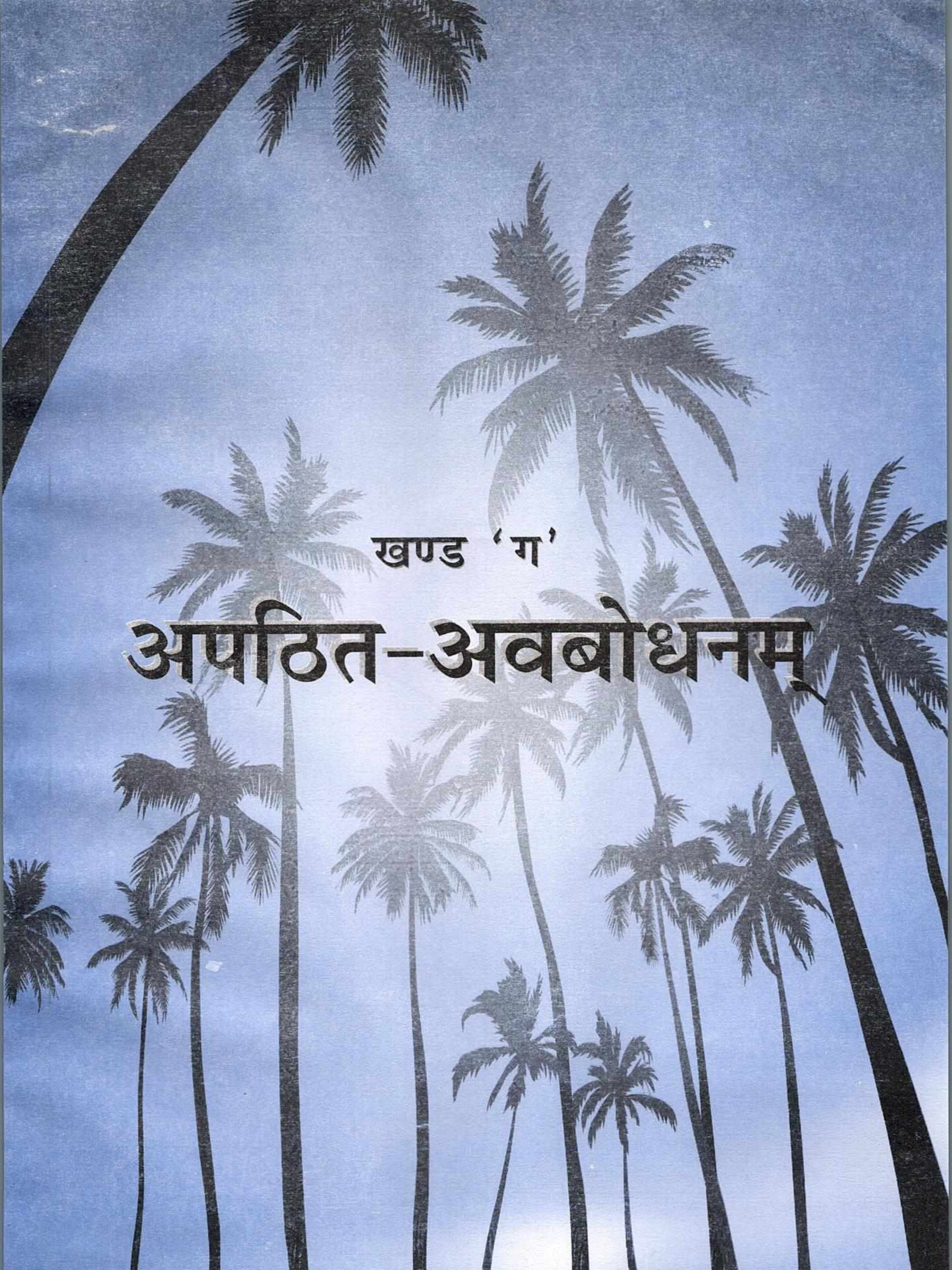

खण्ड 'ग'

अपठित-अवबोधनम्

16 गद्यांशाः

1. पहले पूरे गद्यांश को दो-तीन बार अवश्य पढ़ना चाहिए।
2. वाक्य को बार-बार पढ़कर नवीन शब्दों का भाव एवं अर्थ ग्रहण करना चाहिए।
3. व्याकरण के प्रश्नों के उत्तर देते समय नियम का ध्यान करके गद्यांश से संबद्ध वाक्य को पुनः पढ़ लेना चाहिए।
4. शीर्षक मुख्य भाव को बताने वाला होना चाहिए।
5. शीर्षक प्रसिद्ध उक्तियों के रूप में भी हो सकता है; जैसे-शठता से संबंधित किसी गद्यांश का ''शठे शाठ्यम् समाचरेत्'' इत्यादि।

40-50 पदपरिमिताः गद्यांशाः

उदाहरण–

अधोलिखितान् गद्यांशान् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत।

(निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

1. ग्रामे एका महिला भोजनं पचति स्म। सा वृक्षस्योपरि स्थितं काकं दृष्ट्वा तस्मै एकं रोटिका-खण्डम् अयच्छत। मुखे रोटिकाखण्डं गृहीत्वा सः काकः पुनः वृक्षे उपाविशत्। एकः शृगालः तम् दृष्ट्वा अवदत्-भो मित्र! खगेषु भवान् एव सुन्दरः, चतुरः, मधुरः गायकः च। कृपया गायतु इति। रोटिकाखण्डं पादयोः अधः स्थापयित्वा काकः अवदत्-रे नाहं पूर्ववत् मूर्खः। गताः ते दिवसाः। तर्हि गच्छतु न अहं रोटिकां पातयित्वा तुभ्यं दास्यामि इति। लज्जितः शृगालः शिरः नत्वा ततः पलायितः। एतत् सर्वम् दृष्ट्वा सा महिला उच्चैः अहसत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) शृगालः कम् प्रशंसति?

उत्तर– काकम्।

(ख) काकस्य उत्तरं श्रुत्वा कः लज्जितः अभवत्?

उत्तर– शृगालः।

(ग) काकस्य मुखे किम् आसीत्?

उत्तर– रोटिकाखण्डम्।

(घ) काकः कुत्र उपविष्टः आसीत्?

उत्तर– वृक्षे।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) काकः रोटिकाखण्डं कुत्र अस्थापयत्?

उत्तर– काकः रोटिकाखण्डं पादयोः अधः अस्थापयत्।

(ख) काकः पुनः कुत्र उपाविशत्?

उत्तर– काकः पुनः वृक्षे उपाविशत्।

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'मूर्खः' इत्यस्य विशेष्यपदम् अनुच्छेदे किम अस्ति? विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत।

(*i*) अहम् काकः (*ii*) श्रृगालः (*iii*) महिला (*iv*) वृक्षः

उत्तर– अहम् (काकः)

(ख) गताः ते दिवसाः काकः इदम् वाक्यं कं प्रति कथयति? उत्तरं चिनुत।

(*i*) गायकम् (*ii*) श्रृगालम् (*iii*) खगम्

उत्तर– (*ii*) श्रृगालम्

(ग) उपविष्ट इति पदे कः प्रत्ययः?

(*i*) ल्यप् (*ii*) क्त्वा (*iii*) तुमुन् (*iv*) क्त

उत्तर– (*iv*) क्त

(घ) "रोटिकाखण्डम् पादयोः अधः स्थापयित्वा काकः अवदत्" अस्मिन् वाक्ये कति अव्ययाः सन्ति लिखत।

(*i*) एकः (*ii*) द्वौ (*iii*) त्रयः (*iv*) चत्वारः

उत्तर– (*i*) एकः

2. भारतवर्षे अनेके महापुरुषः अभवन्। भारतभूमिः अनेकेषाम् वीराणाम्, देशभक्तानाम्, ऋषीणाम्, महापुरुषाणाम् च जन्मभूमिः अस्ति। एषु महापुरुषेषु स्वामिविवेकानन्दस्य नाम परमादरेण स्मर्यते। स्वामी विवेकानन्दः अमेरिकादेशे भारतीयसंस्कृत्याः प्रचारं करोति स्म। कश्चन श्रोता उपहासपूर्वकम् उक्तवान्–'अहो भारतीयसंस्कृत्याः विसंगतिः'। लक्ष्म्याः वाहनम् उलूकः सरस्वत्याः वाहनं हंस इति। विवेकानन्दः अवदत्–एष एव अस्माकम् भवतां मध्ये दृष्टिभेदः। धनाधीनः जनः उलूकवत् आचरति। विवेकम् आश्रितः नरः विद्वान् भवति। अतएव सरस्वत्याः वाहनं हंसः लक्ष्म्याः वाहनम् उलूकः इति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) स्वामी विवेकानन्दः कुत्र भारतीयसंस्कृतेः प्रचारं करोति स्म?

उत्तर– अमेरिकादेशे।

(ख) धनाश्रितः जनः कथम् आचरति?

उत्तर– उलूकवत्।

(ग) कम् आश्रितः नरः विद्वान् भवति?

उत्तर– विवेकम्।

(घ) उलूकः कस्याः वाहनम्?

उत्तर– लक्ष्म्याः।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) भारतीय संस्कृतेः प्रचारं कः करोति स्म?

उत्तर– स्वामी विवेकानन्दः अमेरिकादेशे भारतीयसंस्कृत्याः प्रचारं करोति स्म।

(ख) कः नरः विद्वान् भवति?

उत्तर– विवेकम् आश्रितः नरः विद्वान् भवति।

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) उक्तवान् इत्यस्य कर्तृपदम् किम्?

(*i*) कश्चन (*ii*) श्रोता (*iii*) उपहासपूर्वकम् (*iv*) विसंगति

उत्तर– (*ii*) श्रोता

(ख) लक्ष्म्याः इति पदे का विभक्ति अस्ति?

(*i*) चतुर्थी (*ii*) पञ्चमी (*iii*) षष्ठी (*iv*) सप्तमी

उत्तर– (*iii*) षष्ठी

(ग) "धनाधीनः जनः उलूकवत् आचरति", अस्मिन् वाक्ये 'धनाधीनस्य' इति विशेषणस्य विशेष्यपदम् किम्?

(*i*) उलूकः (*ii*) जनः (*iii*) श्रोता (*iv*) स्वामी विवेकानन्द

उत्तर– (*iv*) जनः

(घ) "एष एव अस्माकं भवतां मध्ये दृष्टिभेदः।" अत्र 'अस्माकम्' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(*i*) अमरीका जनेभ्यः (*ii*) भारतीयेभ्यः (*iii*) ऋषिभ्यः (*iv*) महापुरुषेभ्यः

उत्तर– (*i*) भारतीयेभ्यः

ध्यातव्यम्

- प्रश्नों में क्या पूछा गया है उत्तर उसी के अनुसार दें। जितना पूछा जाए उतना ही लिखें।
- यदि प्रश्न की भाषा समझ न आए तो भी प्रश्न को बार-बार पढ़कर समझने का प्रयत्न करें।
- एकपदेन प्रश्न का उत्तर एक ही पद में दें।
- पूर्णवाक्येन में एक पद में उत्तर न दें।
- बिना पद बनाए भाषा में किसी शब्द का प्रयोग न करें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. गद्यांश को बार-बार पढ़कर समझ लें।
2. कथा का शीर्षक एक पद या एक वाक्य में भी हो सकता है। शीर्षक प्रमुख तथ्य को ध्यान में रखकर ही दिया जाना चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

अधोलिखितान् गद्यांशान् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत।

(निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

1. वानराः सेतुनिर्माणम् अकुर्वन्। यदा सेतुबन्धः अभवत् तदा रामस्य तस्य भ्रातुः च नेतृत्वे सर्वेषाम् वानराणाम् समस्तसेना लंकाम् प्राविशत्। लंकायाः अधिपतिः राक्षसः रावणः निजपुत्रैः बन्धुभिः च सह युद्धाय तत्परः अभवत्। तदा बहुमासं यावत् भयंकरं युद्धम् अभवत्। अन्ते सः राक्षसराजः रावणः पराजितः। यदा सः मृतः तदा तस्य स्वर्णनिर्मिता अखिला राजधानी वशम् अधिगता।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) सेतुनिर्माणम् के अकुर्वन्? ....

(ख) वानराणाम् सेना कुत्र प्राविशत्? ....

(ग) लंकायाः अधिपतिः राक्षसः कः आसीत्? ....

(घ) कः मृतः अभवत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) यदा रावणः मृतः अभवत् तदा किम् अभवत्?

....

(ख) समस्तसेना केषाम् नेतृत्वे लंकाम् प्राविशत्?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) बन्धुभिः इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(*i*) तृतीया (*ii*) चतुर्थी (*iii*) पञ्चमी (*iv*) षष्ठी ....

(ख) अनुच्छेदे प्राविशत् क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम् अस्ति? ....

(i) भ्राता: (ii) वानरा: (iii) सेना (iv) राम:

(ग) अनुच्छेदस्य अन्तिमे वाक्ये कति अव्यया: सन्ति? ....

(i) एक: (ii) द्वौ (iii) त्रय: (iv) चत्वार:

(घ) राक्षस: इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम्? ....

(i) लंकाया: (ii) अधिपति: (iii) रावण: (iv) पुत्र:

2. धर्म: अर्थ: काम: मोक्ष: च एते चतुर्विध: पुरुषार्था: सन्ति। संसारे जन: धर्मे अर्थे कामे च लिप्त: भूत्वा आचरणं करोति। मोक्ष: चतुर्थ: पुरुषार्थ:। सामान्यतया मनुष्य: धर्म-अर्थ-कामान् त्रीन् पुरुषार्थान् सम्यक्रूपेण अनुभूय मोक्षस्य अधिकारी भवति। मोक्षो नाम त्रिविध-दु:खेभ्य: सर्वथा मुक्ति:। निर्वाणम् मोक्षस्य अपर: पर्याय: अस्ति। यदा मानवस्य सकला: कामना: शान्ता: भवन्ति स: मोक्षम् प्राप्नोति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) चतुर्थ: पुरुषार्थ: क: अस्ति? ....

(ख) मोक्षस्य अधिकारी क: भवति? ....

(ग) मोक्षस्य अपर: पर्याय: क: अस्ति? ....

(घ) का: शान्ता: भवन्ति? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) मनुष्य: कदा मोक्षम् प्राप्नोति?

....

(ख) किम् अनुभूय मनुष्य: मोक्षस्य अधिकारी भवति?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) प्राप्नोति इति पदे क: धातु: अस्ति? शुद्धम् उत्तरम् चित्वा लिखत। ....

(i) प्राप् (ii) आप् (iii) नी (iv) आप्न्

(ख) 'यदा मानवस्य सकला: कामना: शान्ता: भवन्ति स: मोक्षम् प्राप्नोति।' इति वाक्ये अव्यय: क:? ....

(i) सकला (ii) कामना: (iii) शन्ता: (iv) यदा

(ग) अनुभूय इति पदे क: उपसर्ग: अस्ति? ....

(i) अनु (ii) भू (iii) क्त्वा (iv) ल्यप्

(घ) दुखे:भ्य: इति पदे का विभक्ति: अस्ति?

(*i*) द्वितीया (*ii*) तृतीया (*iii*) चतुर्थी (*iv*) पञ्चमी ....

3. पर्यटनम् रोमांचकारि। प्रियजनै: सह कृतं पर्यटनम् आनन्दं ददाति। पर्यटनेन ज्ञानवृद्धि: मनोरञ्जनं च भवत:। यत् ज्ञानं स्वयम् अनुभूयते दृश्यते च तत् स्थिरतरम् भवति। कस्मिन् देशे-प्रदेशे वा किं किं दर्शनीयम्? तत्र किं भुज्यते किं पीयते? अथवा तत्र कथं व्यवहार: क्रियते। एतत् सर्वम् पर्यटनेन ज्ञायते। अत: इयम् उद्योगं वर्धयितुं शासनं यत्नशीलम् अस्ति। पर्यटन-उद्योगेन भारतशासनम् पर्याप्तं धनं प्राप्नोति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) कै: सह कृतम् पर्यटनम् आनन्दम् ददाति? ....

(ख) ज्ञानवृद्धि: मनोरञ्जनं च कथम् भवति? ....

(ग) भारतशासनम् केन पर्याप्तम् धनम् प्राप्नोति? ....

(घ) यत् ज्ञानम् स्वयम् अनुभूयते दृश्यते च तत् किं भवति? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) पर्यटनेन किं किं ज्ञायते?

....

(ख) भारतशासनम् पर्याप्तम् धनं केन प्राप्नोति?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'पर्यटनम् रोमांचकारि। प्रियजनै: सह कृतं पर्यटनम् आनन्दं ददाति।'–अत्र रोमांचकारि विशेषणस्य विशेष्यपदम् किम्?

(*i*) पर्यटनम् (*ii*) आनन्दम् (*iii*) कृतम् (*iv*) सह ....

(ख) 'अथवा तत्र कथं व्यवहार: क्रियते।' इति वाक्ये कति अव्यया: सन्ति?

(*i*) एका: (*ii*) द्वौ (*iii*) त्रय: (*iv*) चत्वार: ....

(ग) दर्शनीयम् इति पदे प्रकृतिप्रत्ययौ कौ?

(*i*) √दर्श् + अनीयर् (*ii*) √दर्शन् + इयम्

(*iii*) √द्रश् + अनीयर् (*iv*) √दृश् + अनीयर् ....

(घ) प्रियजनै: इत्यस्मिन् पदे का विभक्ति:?

(*i*) प्रथमा (*ii*) द्वितीया (*iii*) तृतीया (*iv*) चतुर्थी ....

4. अये लेखनि! तव महिमा अपूर्वा। सकले विश्वे त्वम् एव ज्ञानं विज्ञानं च प्रसारयसि। काव्यैः रूपकैः कथाभिः गीतैः च जनान् विनोदयसि। तूलिकायाः सहयोगेन कर्गदान् चित्रमयान् करोषि, सर्वान् च आकर्षसि। विविधेषु विज्ञापनेषु समाचारपत्रेषु पत्रिकासु च तव निपुणतां दृष्ट्वा चकिताः भवामः। अनवरतं कर्गदेषु धावन्ती अपि त्वम् कदापि श्रान्ता न भवसि। अस्माकं तु त्वमेव शरणम्। तव सहायतया एव वयं कक्षासु प्रश्नोत्तराणि लिखामः, पुनः पुनः अभ्यासं कुर्मः। परीक्षाकाले तु त्वमेव अस्माकम् शस्त्रम्। तव उपकारान् कः विस्मर्तुम् शक्नोति? सम्पूर्णः संसारः तव भक्तः। त्वम् वन्दनीया असि।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) लेखनी कथाभिः गीतैः कान् विनोदयति? ....

(ख) का वन्दनीया अस्ति? ....

(ग) परीक्षाकाले छात्राणाम् शस्त्रम् का? ....

(घ) लेखन्याः भक्तः कः? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) वयं लेखन्याः सहायतया कक्षासु किम् कुर्मः?

....

(ख) कस्मिन् काले लेखनी एव अस्माकं शस्त्रम्?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) सततम् इति अर्थाय गद्यांशे किम् पदम् प्रयुक्तम्?

(*i*) निरन्तरम् (*ii*) अनवरतम् (*iii*) शीघ्रम् (*iv*) अर्थम् ....

(ख) "सम्पूर्णः संसारः तव भक्तः" अत्र तव इति पदम् कस्मै प्रयुक्तम्?

(*i*) लेखिन्यै (*ii*) कथायै (*iii*) पत्रिकायै (*iv*) समाचारपत्राय ....

(ग) महिमा इत्यस्य विशेषणपदम् किम्?

(*i*) अपूर्वः (*ii*) अपूर्वा (*iii*) अपूर्वम् (*iv*) अपूर्व ....

(घ) अनुच्छेदात् सम्बोधनपदम् चित्वा लिखत।

(*i*) लेखनि! (*ii*) कगर्द (*iii*) शरणम् (*iv*) विश्व ....

5. श्रीकृष्णस्य पितुः नाम वसुदेवः मातुः च नाम देवकी आसीत्। श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः दुष्टः आसीत्। सः देवकीम् वसुदेवम् च कारागारे अक्षिपत्। यदा श्रीकृष्णस्य जन्म अभवत् तदा वसुदेवः शिशुम् श्रीकृष्णम् करण्डके निधाय च यमुनायाः नद्याः पारे गोकुलम् अनयत्। तत्र तस्य मित्रम् नन्दः अवसत्। यशोदा नन्दौ

श्रीकृष्णस्य पितरौ अभवत्। श्रीकृष्णम् मारयितुम् कंसः अनेकान् राक्षसान् प्रेषितवान्। श्रीकृष्ण तेषाम् संहारं कृत्वा सर्वान् रक्षितवान्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) कस्य पितुः नाम वसुदेवः आसीत्? ....

(ख) श्रीकृष्णस्य मातुः नाम किम् आसीत्? ....

(ग) श्रीकृष्णस्य मातुलः कः आसीत्? ....

(घ) वसुदेवस्य मित्रस्य नाम किम् आसीत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) वसुदेवः श्रीकृष्णम् कथम् गोकुलम् अनयत्?

....

(ख) श्रीकृष्णं मारयितुम् कंसः कान् प्रेषितवान्?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) मातुलः पदस्य अर्थम् चित्वा लिखत।

(i) मामा *(ii)* नाना *(iii)* चाचा *(iv)* दादा ....

(ख) मातुः इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(i) चतुर्थी *(ii)* पञ्चमी *(iii)* षष्ठी *(iv)* सप्तमी ....

(ग) अनुच्छेदे अनयत् क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम् अस्ति?

(i) शिशुम् *(ii)* गोकुलम् *(iii)* श्रीकृष्णम् *(iv)* वसुदेवः ....

(घ) "श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः दुष्टः आसीत्?" इति वाक्ये दुष्टः विशेषणस्य विशेष्यपदं किम् अस्ति?

(i) श्रीकृष्णस्य *(ii)* मातुलः *(iii)* कंसः *(iv)* आसीत् ....

6. विद्या सर्वश्रेष्ठं सर्वप्रधानं धनं भवति। संसारस्य अन्यानि सर्वाणि धनानि व्यये कृते नश्यन्ति परम् विचित्रम् एतत् विद्याधनं यत् व्यये कृते वर्धते। विद्यां विना नरः पशुतुल्यः भवति। विद्यया जीवनम् आलोकितं भवति अज्ञानान्धकारं च दूरी भवति। विद्यया एव नरः प्रतिष्ठितः भवति। विद्वान् एव सर्वत्र पूज्यते। विद्याधनं केनापि चोरयितुं न शक्यते। विद्याधनं भ्रातृभाज्यं न भवति। विद्याधनं भारकारि अपि न भवति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) सर्वश्रेष्ठं धनं किम् भवति? ....

(ख) विचित्रं धनं किम्? ....

(ग) व्यये कृते किम् वर्धते? ....

(घ) कः सर्वत्र पूज्यते? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) विद्याधनं विचित्रं किमर्थम् अस्ति?

....

(ख) विद्यया जीवनं कीदृशं भवति?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'विद्यां विना नरः पशुतुल्यः भवति।' पशुतुल्यः इति पदस्य विशेष्यपदम् किम्?

(*i*) पशु (*ii*) विद्या (*iii*) नरः (*iv*) किपपि न ....

(ख) संसारस्य इति पदे का विभक्तिः?

(*i*) षष्ठी (*ii*) सप्तमी (*iii*) पञ्चमी (*iv*) चतुर्थी ....

(ग) अज्ञानान्धकारम् इति पदस्य उचितं सन्धिच्छेदं चिनुत।

(*i*) अज्ञाना + न्धकारम् (*ii*) अज्ञा + नान्धकारं

(*iii*) अज्ञानान्ध + कारम् (*iv*) अज्ञान + अन्धकारम् ....

(घ) 'विद्यया एव नरः प्रतिष्ठित भवति?' अस्मिन् वाक्ये अव्ययपदं किम्?

(*i*) एव (*ii*) नरः (*iii*) विद्यया (*iv*) प्रतिष्ठितः ....

7. पुरा एकः हरिभक्तः आसीत्। तस्य अभिधानम् प्रह्लादः आसीत्। तस्य जनकः हिरण्यकश्यपः एकः राक्षसः आसीत्। सः हरिभक्तान् मारयितुम् इच्छति स्म अतः सः प्रह्लादम् अपि मारयितुम् ऐच्छत्। तस्य भगिनी होलिका प्रह्लादम् नीत्वा अग्नौ अतिष्ठत्। देववरदानम् आसीत् यत् अग्निः ताम् प्रज्वालयितुम् न शक्नोति स्म। होलिका अग्नौ ज्वलिता अभवत् परम् प्रह्लादः सुरक्षितः ईश्वरम् स्मरन् बहिः आगच्छत्। पुनः ईश्वरः स्वयम् नरसिंहस्य रूपे संसारे अवतरत् हिरण्यकश्यपं च अमारयत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) हरिभक्तः कः आसीत्? ....

(ख) राक्षसस्य नाम किम् आसीत्? ....

(ग) राक्षस: कम् मारयितुम् ऐच्छत्? ....

(घ) प्रह्लादम् नीत्वा अग्नौ का अतिष्ठत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) यदा होलिका प्रह्लादं नीत्वा अग्नौ अतिष्ठत् तदा किम् अभवत्?

....

(ख) हिरण्यकश्यप: किं कर्तुम् ऐच्छत्?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदात् 'क्त्वा' 'तुमुन्' च प्रत्ययो: एकैकम् उदाहरणम् विचित्य लिखत।

(i) अग्नौ, प्रज्वालयितुम् *(ii)* ऐच्छत्, सुरक्षित

(iii) नीत्वा, मारयितुम् *(iv)* मारयितुम्, प्रज्वालयितुम् ....

(ख) "स: हरिभक्तान् मारयितुम् इच्छति स्म"। अत्र इच्छति स्म क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

(i) हरिभक्तान् *(ii)* मारयितुम् *(iii)* न किमपि *(iv)* स: ....

(ग) अनुच्छेदे भगिनी इति पदस्य अर्थ: क:?

(i) भार्या *(ii)* भगवती *(iii)* माता *(iv)* बहन ....

(घ) अतिष्ठत् इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(i) तस्य *(ii)* होलिका *(iii)* प्रह्लादम् *(iv)* अग्नौ ....

80–100 पदपरिमिताः गद्यांशाः

उदाहरण–

निम्नलिखितगद्यांशान् कथाः वा पठित्वा उत्तराणि संस्कृतेन लिखत।

(निम्नलिखित गद्यांशों अथवा अनुच्छेदों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए।)

1. अहो! रमणीया प्रातःकालस्य वेला। आकाशे खगाः कलरवं कुर्वन्ति। सूर्यः आकाशे उदयोन्मुखः अस्ति। वृद्धाः प्रबुद्धाः सन्ति। युवकाः प्रबुद्धाः सन्ति। युवतयः प्रबुद्धाः सन्ति। कृषकाः क्षेत्रं गच्छन्ति। बालाः विद्यालयं प्रति गच्छन्ति। सर्वे जनाः स्वकार्येषु लग्नाः सन्ति। मन्दः सुगन्धः पवनः वहति। सर्वत्र आनन्दमयम् वातावरणम् अस्ति। पुष्पाणि विकसन्ति। जनाः उद्यानेषु भ्रमन्ति। केचन् जनाः व्यायामं कुर्वन्ति। केचन् सूर्यं नमन्ति। सर्वे जनाः प्रसन्नाः स्फूर्तिवन्तः सन्ति। प्रातःकालस्य वेला सर्वेषु जनेषु नव-जीवनं संचरति। तापसाः आश्रमेषु यजन्ति। भक्ताः देवालयं गच्छन्ति। शिशवः विश्रामस्य पश्चात् प्रसन्नाः भवन्ति। मन्दिरेषु शंखनादः भवति। सरणिषु जनाः इतस्ततः आगच्छन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) प्रातःकालस्य वेला कीदृशी भवति?

उत्तर– रमणीया।

(ख) क्षेत्रम् प्रति के गच्छन्ति?

उत्तर– कृषकाः।

(ग) भक्ताः कुत्र गच्छन्ति?

उत्तर– देवालयम्।

(घ) प्रातःकाले मन्दिरेषु किम् भवति?

उत्तर– शंखनादः।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) प्रातःकाले के के प्रबुद्धाः भवन्ति?

उत्तर– वृद्धाः प्रबुद्धाः भवन्ति, युवकाः प्रबुद्धाः भवन्ति, युवतयः च प्रबुद्धाः भवन्ति।

(ख) प्रातःकाले जनाः किम् किम् कुर्वन्ति?

उत्तर– प्रातःकाले जनाः उद्यानेषु भ्रमन्ति। केचन् जनाः व्यायामम् कुर्वन्ति। केचन् सूर्यम् नमन्ति।

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) सुप्ताः इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(*i*) वृद्धाः (*ii*) युवतयः (*iii*) उदयोन्मुखः (*iv*) प्रबुद्धाः

उत्तर– (*iv*) प्रबुद्धाः

(ख) पक्षिण: इत्यर्थे क: शब्द: प्रयुक्त:?

(*i*) वेला (*ii*) युवतय: (*iii*) उदयोन्मुख: (*iv*) खगा:

उत्तर– (*iv*) खगा:

(ग) अनुच्छेदे संचरति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

(*i*) नवजीवनम् (*ii*) वेला (*iii*) सर्वेषु (*iv*) जनेषु

उत्तर– (*iv*) वेला

(घ) "अहो! रमणीया प्रात:कालस्य वेला।" इत्यस्य वाक्ये वेला विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किम्?

(*i*) अहो! (*ii*) रमणीया (*iii*) प्रात:कालस्य (*iv*) न किमपि

उत्तर– (*iii*) रमणीया

IV. अनुच्छेदस्य शीर्षकं लिखत।

(अनुच्छेद का शीर्षक लिखिए।)

उत्तर– प्रात:काल:।

2. वने लंकाया: नृप: रावण: छलेन सीताम् अहरत्। श्रीराम: लक्ष्मण: च वने इतस्तत: अभ्रमताम्। श्रीराम: सुग्रीवस्य सहायक: अभवत्। सुग्रीवस्य पवनकुमारस्य च सहायतया स: लंकाम् प्राविशत्। तत्र श्रीरामस्य रावणेन सह युद्धम् अभवत्। युद्धे श्रीराम: सकलान् राक्षसान् लंकापतिं रावणं च अमारयत्। श्रीराम: रावणस्य अनुजाय विभीषणाय लंकाया: राज्यम् अयच्छत्। तत: चतुर्दशवर्षाणां पश्चात् स: सीतया लक्ष्मणेन च सह अयोध्यां प्रति आगच्छत्। तत्र श्रीरामस्य राजतिलक: अभवत् श्रीरामस्य राज्ये सकला: अपि प्रजा: सुरक्षिता: प्रसन्ना: च आसन्। अत: रामस्य राज्यं प्रसिद्धम् अस्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) सीताम् क: अहरत्?

उत्तर– रावण:।

(ख) श्रीरामस्य युद्धम् केन सह अभवत्?

उत्तर– रावणेन।

(ग) रावणम् क: अमारयत्?

उत्तर– श्रीराम:।

(घ) रावणस्य अनुज: क: आसीत्?

उत्तर– विभीषण:।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) वने रावण: काम् अहरत्?

उत्तर– वने रावण: छलेन सीताम् अहरत्।

(ख) श्रीरामस्य राज्यं किमर्थम् प्रसिद्धम्?

उत्तर– श्रीरामस्य राज्ये सकलाः अपि प्रजाः सुरक्षिताः प्रसन्नाः च अभवन् अतएव रामराज्यं प्रसिद्धम्।

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) ''सुग्रीवस्य पवनकुमारस्य सहायतया सः लंकाम् प्राविशत्।'' वाक्ये प्राविशत् इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

(*i*) सुग्रीवः (*ii*) पवनकुमार (*iii*) लंकाम् (*iv*) सः

उत्तर– (*iv*) सः

(ख) ''रामस्य राज्यं प्रसिद्धम् अस्ति।'' अत्र प्रसिद्धम् विशेषणस्य विशेष्यपदं किम्?

(*i*) अतः (*ii*) रामस्य (*iii*) राज्यम् (*iv*) न किमपि

उत्तर– (*iii*) राज्यम्

(ग) अनुच्छेदे 'सह' इत्यस्य पदस्य योगेन रावणेन इति पदे का विभक्तिः प्रयुक्ताः?

(*i*) द्वितीया (*ii*) तृतीया (*iii*) चतुर्थी (*iv*) पञ्चमी

उत्तर– (*ii*) तृतीया

(घ) निम्नांकितेषु पदेषु कः अव्ययः न अस्ति?

(*i*) च (*ii*) ततः (*iii*) अपि (*iv*) सः

उत्तर– (*iv*) सः

IV. गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

उत्तर– श्रीरामः।

प्रायोगिकाभ्यासः

निम्नलिखितगद्यांशान् कथाः वा पठित्वा उत्तराणि संस्कृतेन लिखत।

(निम्नलिखित गद्यांशों अथवा कथाओं को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए।)

1. सुपोषः एकः चतुरः बालः अस्ति। अम्बाजनकौ च यदा तम् पश्यतः तदैव तुष्यतः। सुपोषस्य द्वे भगिन्यौ अपि स्तः। ते सर्वे प्रातः जनकम् अम्बां च नमन्ति। ज्येष्ठा भगिनी श्रुतिः पठने अतीव कुशला अस्ति। अनुजा अर्चना अपि कुशाग्रबुद्धिः अस्ति। ते सुपोषम् अपि पाठयतः। माता तेभ्यः सूपम् ओदनं च पचति। जनकः विनोदः सर्वेभ्यः मिष्ठान्नानि आनयति। सः सर्वेभ्यः क्रीडनकानि अपि आनयति। ते सर्वे ग्रीष्मावकाशेषु भ्रमणाय गच्छन्ति। सुपोषः स्वजनकस्य सहायकः भवति। श्रुतिः अर्चना च समये-समये अम्बायाः जनकस्य च सहायतां कुरुतः। ते सर्वे मिलित्वा एव सर्वाणि कार्याणि कुर्वन्ति। बालकाः तु सुयोग्याः चतुराः च सन्ति। अतः तेषां परिवारे समृद्धिः सुखं च स्तः।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) सुपोषः कीदृशः बालः अस्ति? ....

(ख) पठने कुशला का अस्ति? ....

(ग) कुशाग्रबुद्धिः का अस्ति? ....

(घ) सर्वेभ्यः मिष्ठान्नानि कः आनयति? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) माता तेभ्यः किम् पचति?

....

(ख) जनकः सर्वेभ्यः किम् किम् आनयति?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) "ज्येष्ठा भगिनी श्रुतिः पठने अतीव कुशला अस्ति।" इति वाक्ये 'कुशला' विशेषणस्य विशेष्यपदं च किम् अस्ति?

(*i*) ज्येष्ठा (*ii*) भगिनी (*iii*) श्रुतिः (*iv*) अतीव ....

(ख) "ते सर्वे प्रातः जनकम् अम्बां च नमन्ति।" अत्र नमन्ति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम् अस्ति?

(*i*) ते (*ii*) प्रातः (*iii*) जनकम् (*iv*) अम्बाम् ....

(ग) अनुच्छेदे मिलित्वा इति पदे कः प्रत्ययः?

(*i*) तुमुन् (*ii*) क्त्वा (*iii*) ल्यप् (*iv*) क्त ....

(घ) तदैव पदस्य उचितम् सन्धिच्छेदम् कुरुत।

(*i*) तदा + ऐव (*ii*) ततः + एव (*iii*) तदा + एव (*iv*) तदै + व ....

IV. गद्यांशस्य शीर्षकं लिखत।

(गद्यांश का शीर्षक लिखिए।)

....

2. सूर्यः तु अस्तम् गच्छति। अधुना सायंकालः भवति। खगाः स्वनीडानि गच्छन्ति। कमलानि म्लानानि भवन्ति कुमुदानि च विकसन्ति। आश्रमेषु तापसाः अनले यजन्ति। कृषकाः विश्रामम् आचरन्ति। उलूकाः इतः ततः भ्रमन्ति। मन्दिरेषु शंखानाम् शब्दः भवति। पथिकाः विश्रामाय तिष्ठन्ति। पाचकाः भोजनं पचन्ति। बालकाः

क्रीडाक्षेत्रात् स्व-गृहम् आगच्छन्ति। ते गृहम् आगत्य विविधान् आहारान् खादन्ति। जनाः तु गृहेषु चायपानम् कुर्वन्ति। केचन जनाः सायंकाले दूरदर्शनम् पश्यन्ति। बालकाः दुग्धं पिबन्ति। ततः ते पाठान् पठन्ति लिखन्ति च। सायंकाले तु सर्वत्र अन्धकारस्य राज्यम् एव भवति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) खगाः कुत्र गच्छन्ति? ....

(ख) तापसाः कुत्र यजन्ति? ....

(ग) जनाः गृहेषु किम् पिबन्ति? ....

(घ) दुग्धं के पिबन्ति? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) सायंकाले कानि म्लानानि भवन्ति कानि च विकसन्ति?

....

(ख) जनाः सायंकाले किम् कुर्वन्ति?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) खाद्यान्नान् इत्यस्मै अनुच्छेदे किम् पदं प्रयुक्तम्? ....

(*i*) विविधान् (*ii*) आहारान् (*iii*) चायपानम् (*iv*) दुग्धम् ....

(ख) आगत्य इति पदे उपसर्ग-प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत।

(*i*) आ + गम् + ल्यप् (*ii*) आ + गच्छ् + अनीयर्

(*iii*) आग + ति + अनीयर् (*iv*) आ + गम् + अनीयर् ....

(ग) शंखानाम् इति पदे का विभक्तिः?

(*i*) द्वितीया (*ii*) पञ्चमी (*iii*) सप्तमी (*iv*) षष्ठी ....

(घ) 'सायंकाले तु सर्वत्र अन्धकारस्य राज्यम् एव भवति।' इत्यस्मिन् वाक्ये कति अव्ययाः सन्ति?

(*i*) द्वि (*ii*) त्रि (*iii*) चतुर् (*iv*) न कोऽपि ....

IV. गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकम् एकम् लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

....

3. एकदा राजकुमारः सिद्धार्थः विहारार्थम् उपवनं गतः। सहसा एकां क्रन्दन-ध्वनिं श्रुत्वा सः इतस्ततः अपश्यत्। बाणेन विद्धः एकः हंसः भूमौ पतितः आसीत्। एतत् दृष्ट्वा सिद्धार्थस्य चित्तं करुणया व्याकुलं जातम्। सः धावित्वा हंसस्य शरीरात् बाणं निष्कास्य तम् अङ्के अधारयत्। अत्रान्तरे देवदत्तः धावन् तत्र प्राप्तः सिद्धार्थस्य हस्ते हंसं दृष्ट्वा सः उच्चैः अवदत्–''सिद्धार्थ! एषः मम हंसः। मया बाणेन एतत् अनिपातयत्। अतः मह्यम् देहि।'' सिद्धार्थः दृढ़तया अवदत्–''अहं न दास्यामि। अहम् अस्य रक्षकः अस्मि।'' तदा तौ विवादं कुर्वन्तौ राजसभां गतौ। राजा सर्वं वृत्तान्तम् आकर्ण्य आदिशत्–''यस्य पार्श्वे हंसः गमिष्यति सः तस्यैव भविष्यति।'' हंसः सिद्धार्थस्य समीपं गतवान्। सत्यमिदम् यत् ''भक्षकात् रक्षकः श्रेयान्।''

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) कः भूमौ पतितः आसीत्? ....

(ख) हंसः कस्य समीपं गतवान्? ....

(ग) कः हंसम् बाणेन अहन्? ....

(घ) भक्षकात् कः श्रेयान्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) सिद्धार्थः किम् कृत्वा हंसम् अङ्के अधारयत्?

....

(ख) सिद्धार्थः दृढ़तया किम् अवदत्?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) उद्यानम् इति पदस्य पर्यायमेकम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(*i*) विहारार्थम् (*ii*) उपवनम् (*iii*) क्रन्दनध्वनिम् (*iv*) आकर्ण्य ....

(ख) भक्षक इति पदस्य कः विपर्ययः अनुच्छेदे आगतः?

(*i*) भक्षकात् (*ii*) विद्धः (*iii*) रक्षक (*iv*) श्रेयाम् ....

(ग) अनुच्छेदे चित्तम् इति पदस्य विशेषणपदं किम् अस्ति?

(*i*) करुणया (*ii*) व्याकुलम् (*iii*) जातम् (*iv*) एतत् ....

(घ) ''मया बाणेन अनिपातयत्'' इति वाक्ये 'मया' पदम् कस्मै आगच्छत्?

(*i*) हंसाय (*ii*) सिद्धार्थाय (*iii*) देवदत्ताय (*iv*) नृपाय ....

IV. कथायाः शीर्षकम् एकम् लिखत।

(कथा का एक शीर्षक लिखिए।)

....

4. एक: टोपिकाविक्रेता अनेकवर्णा: टोपिका: विक्रीणाति स्म। एकस्मिन् दिने श्रान्त: स: एकस्य वृक्षस्य शीतलायां छायायाम् उपाविशत्। शनै:-शनै: निद्रा तम् स्ववशे अकरोत्। स: पुटकं शिरस्तले निधाय अस्वपत्। वृक्षे स्थिता: वानरा: विविधवर्णयुक्ता: टोपिका: पुटके दृष्ट्वा अध: अवातरन्। शनै:-शनै: ते पुटकात् टोपिका: निष्कास्य शिरसि धारयित्वा वृक्षम् आरोहन्। प्रबुद्ध: टोपिकाविक्रेता यदा उपरि पश्यति तदा रक्तनीलवर्णा: टोपिका: धारयन्त: वानरान् पश्यति। "हा देव! नष्टा: मे सर्वा: टोपिका:!" इति विलपन् स: आत्मन: शिरसि धारितां टोपिकाम् अपि वेगेन भूमौ क्षिपति कथयति च–'रे दुष्टा:! एताम् अपि नयत।' प्रकृत्या अनुकरणशीला: वानरा: अपि स्वटोपिका: भूमौ प्रक्षिप्तवन्त:। आश्चर्यचकित: स: सर्वा: टोपिका: विचित्य, स्वपुटके स्थापयित्वा प्रसन्न: भूत्वा गृहं प्रति अचलत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) टोपिकाविक्रेता का: विक्रीणाति स्म? ....

(ख) प्रकृत्या वानरा: कीदृशा: भवन्ति? ....

(ग) श्रान्त: स: कुत्र उपाविशत्? ....

(घ) स: पुटकम् कुत्र निधाय अस्वपत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) प्रबुद्ध: टोपिकाविक्रेता वृक्षे किम् अपश्यत्?

....

(ख) टोपिकाविक्रेता वानरान् किम् कथयति?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) "एताम् अपि नयत" अत्र एताम् इति पदम् कस्मै आगच्छत्?

(*i*) वानरेभ्य: (*ii*) टोपिकायै (*iii*) ईश्वराय (*iv*) वृक्षाय ....

(ख) अनुच्छेदे अध: इति पदस्य क: विपर्यय: आगत:?

(*i*) शनै: (*ii*) निधाय (*iii*) उपरि (*iv*) सर्वा: ....

(ग) अनुच्छेदे प्रक्षिप्तवन्त: इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

(*i*) प्रकृत्या (*ii*) टोपिका: (*iii*) टोपिकाविक्रेता (*iv*) वानरा: ....

(घ) रे दुष्टा:! इति क: कम् संबोधयति?

(*i*) ईश्वर: वानरान् (*ii*) वानरा: जनान्

(*iii*) वानरा: देवान् (*iv*) टोपिकाविक्रेता वानरान् ....

IV. कथाया: समुचितम् शीर्षकम् लिखत।

(कथा का उचित शीर्षक लिखिए।)

....

5. दीपावली प्राचीनतमं पर्वम् अस्ति। अस्मिन् दिने सर्वाधिकम् आकर्षकं मनोरञ्जनम् भवति स्फोटकानाम् आस्फोटनम्। विचित्राणि वर्णयुक्तानि स्फोटकानि आकाशे भूमौ च विविधरूपाणि दर्शयन्ति। जना: तानि दृष्ट्वा तुष्यन्ति। परन्तु अति सर्वत्र वर्जयेत्। रात्रौ आस्फोटकानां शब्द: कर्णौ बधिरी करोति वायुमण्डलं च दूषयति। पूर्वं तु जनसंख्या सीमिता आसीत्। वृक्षा: वायुं शुद्धं कुर्वन्ति स्म। इदानीम् जनसंख्या प्रवृद्धा, वृक्षसंख्या क्षीणा। विस्फोटकेभ्य: निर्गत: धूम: रुग्णान् पीडयति, नवजात शिशुभ्य: हानिकर: सिध्यति। दीपावली-समये शरदि आकाश: निर्मल: भवति। सर्वत्र पवित्रता विराजते। अत: वयम् आनन्देन दीपावलीम् मानयेम, वसुन्धरां भूषितां कुर्याम न तु दूषिताम्। सर्वेषां जीवनं सुखमयं भवेत्। किं तेन उत्सवेन य: कस्मैचित् अपि कष्टकर: भवेत्। ''मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्'' इति अस्माकम् आदर्श:।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) केषाम् आस्फोटनम् सर्वेभ्य: आकर्षकं मनोरञ्जकम् च? ....

(ख) दीपावली कस्यां ऋतौ भवति? ....

(ग) वायुं के शुद्धं कुर्वन्ति? ....

(घ) सर्वेषां जीवनं कीदृशं भवेत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) अस्माकं क: आदर्श:?

....

(ख) स्फोटकानां धूम: कान् पीडयति?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) अनुच्छेदे प्रवृद्धा इत्यस्य विपर्ययपदम् किम् प्रयुक्तम्?

(*i*) इदानीम् (*ii*) जनसंख्या (*iii*) वृक्षसंख्या (*iv*) क्षीणा ....

(ख) सर्वत्र पवित्रता विराजते अत्र अव्ययपदं किम्?

(*i*) सर्वत्र (*ii*) पवित्रता (*iii*) विराजते (*iv*) न किमपि ....

(ग) अनुच्छेदे पर्वम् इत्यस्य किम् विशेषणपदम् प्रयुक्तम्?

(*i*) प्राचीनतमम् (*ii*) दीपावली (*iii*) आकर्षकम् (*iv*) आस्फोटनम् ....

(घ) अनुच्छेदे लाभकर: इत्यस्य किम् विपर्ययपदम् प्रयुक्तम्?

(*i*) रुग्णान् (*ii*) हानिकर: (*iii*) हानिकारक: (*iv*) अलाभकर: ....

IV. अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकम् लिखत।

(अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)

....

6. वर्तमानयुगं विज्ञानमयम्। अस्माकं सर्वासु क्रियासु विज्ञानतत्त्वानि एव विराजन्ते। पठनक्रियाम् एव पश्यन्तु। पठने अपि विज्ञानस्य सिद्धान्ताः अनुकरणीयाः। यदि नेत्रव्यायामः न करिष्यामः तर्हि नेत्रयोः विकारः भवितुं शक्नोति। पुस्तकं यदि नेत्रयोः अति समीपे भवति तर्हि पठितुं न शक्यते। यदा पुस्तकम् अतिदूरं भवति तदा अपि पठनं दुष्करं भवति। नेत्रविशेषज्ञाः कथयन्ति यत् प्रायः पञ्चविंशतिसेण्टिमीटरमितं (25 से०मी०) दूरम् अन्तरं समीचीनम् भवति। तावद्दूरं पुस्तकं गृहीत्वा पठने यदि बाधा न अस्ति तदा शोभनं परन्तु यदि न पठ्यते तदा नेत्रचिकित्सकस्य समीपे गत्वा नेत्रपरीक्षणं कारयेत् अन्यथा नेत्रदृष्टिः दुर्बला भवेत्। अपि च शयानः अपि न पठेत्। प्रतिदिनं च सूर्योदये नेत्रव्यायामः करणीयः येन वृद्धावस्थायाम् अपि उपनेत्रस्य आवश्यकता न भवेत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) वर्तमानयुगं कीदृशम् अस्ति? ....

(ख) नेत्रव्यायामः प्रतिदिनं कदा करणीयः? ....

(ग) पठने पुस्तकं नेत्राभ्याम् 25 से०मी० दूरं भवेत् इति के कथयन्ति? ....

(घ) पठने कस्य सिद्धान्ताः अनुकरणीयाः? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) यदा पुस्तकम् अतिदूरं भवति तदा किं भवति?

....

(ख) कतिदूरात् पुस्तकम् पठनीयम्?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) कठिनम् इति अर्थाय किम् पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(*i*) दुष्करम् (*ii*) काठिन्यम् (*iii*) सरलम् (*iv*) शक्यते ....

(ख) अतिसमीपम् इत्यस्य किम् विपर्ययपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(*i*) न समीपम् (*ii*) असमीपम् (*iii*) निकटम् (*iv*) अतिदूरम् ....

(ग) गत्वा इति पदे कः प्रत्ययः?

(*i*) तुमुन् (*ii*) क्त (*iii*) क्त्वा (*iv*) त्वा ....

(घ) अनुच्छेदे विराजन्ते इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(*i*) सर्वासु (*ii*) क्रियासु (*iii*) अस्माकम् (*iv*) विज्ञानतत्त्वानि ....

IV. अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकम् लिखत।

(अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।)

....

7. एकदा केचन् शिष्याः भिक्षाटनं कुर्वन्ति स्म। तदैव एकः गजः महता वेगेन तस्मिन् मार्गे आगच्छत्। गजस्य उपरि उपविष्टः हस्तिपकः उच्चस्वरेण पुनः पुनः घोषयति स्म–अपसरन्तु इति। सर्वे शिष्याः धावितवन्तः। यथा सर्वेषु वस्तुषु ईश्वरः अस्ति तथा गजे अपि इति विचिन्त्य एकः शिष्यः तत्रैव स्थितवान्। तावति काले गजः तं स्वशुण्डया गृहीत्वा दूरे क्षिप्तवान्। शिष्याः मूर्छितं तं गुरुकुलम् अनयन्। लब्धसंज्ञम् तं गुरुः अपृच्छत्–वत्स! त्वम् एवम् किमर्थम् आचरः इति। शिष्यः अवदत्–गुरुवर्य! भवद्भिः एव शिक्षितं यत् ईश्वरः सर्वेषु अस्ति अतः अहं गजे अपि ईश्वरं मत्वा तत्र अतिष्ठम् इति। गुरुः उक्तवान्– "वत्स! यथा गजे तथा हस्तिपके अपि ईश्वरः" इति कथं न चिन्तितम् इति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

(क) गजः कम् स्वशुण्डया गृहीत्वा प्रक्षिपत्? ....

(ख) अपसरन्तु अपसरन्तु इति कः घोषयति स्म? ....

(ग) ईश्वरः सर्वेषु अस्ति इति केन शिक्षितम् आसीत्? ....

(घ) मूर्छितः कः अभवत्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) शिष्यः कुत्र संज्ञाम् अलभत्?

....

(ख) कस्मिन् ईश्वरं विचिन्त्य शिष्यः तत्रैव स्थितवान्?

....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) वेगेन इति पदस्य विशेषणपदम् किम्?

(*i*) मार्गे (*ii*) एकः (*iii*) महत (*iv*) तस्मिन् ....

(ख) अपसरन्तु इत्यस्य कर्तृपदम् लिखत?

(*i*) गजाः (*ii*) हस्तिपकाः (*iii*) गुरु (*iv*) शिष्याः ....

(ग) तस्मिन् एव समये इत्यस्मै अनुच्छेदे किम् पदम् प्रयुक्तम्?

(*i*) पुनः (*ii*) तदैव (*iii*) तावति काले (*iv*) तत्रैव ....

(घ) हस्तिपके इत्यस्य पदे का विभक्तिः?

(*i*) प्रथमा (*ii*) द्वितीया (*iii*) पञ्चमी (*iv*) सप्तमी ....

IV. कथायाः समुचितं शीर्षकम् लिखत।

(कथा का उचित शीर्षक लिखिए।)

....

अभ्यास-प्रश्नपत्रम्–1

अवधिः–होराद्वयम् | पूर्णाङ्काः–75

1. निम्नाङ्कितेषु रञ्जितपदेषु सन्धिः सन्धिच्छेदः वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(क) तच्छरेण तरुशाखा छिन्ना अभवत्। ....

(ख) सा नयनम् निमीलयति। ....

(ग) द्वौ साधू + अस्मिन् वने अवसताम्। ....

(घ) पावकः तु पवित्रं करोति। ....

(ङ) मूर्खेण पुत्रेण कः + अर्थः? ....

2. अधोलिखितेषु रञ्जितपदेषु समासं विग्रहं वा कृत्वा समासनामानि अपि लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) राज्ञः पुरुषः गृहात् राजभवनम् गच्छति। ....

(ख) जन्तुशालायां एकः श्वेतः द्विपः अस्ति। ....

(ग) तव अश्वः उपवटम् एव चलति। ....

(घ) दशाननः लंकायाः अधिपतिः आसीत्। ....

(ङ) मासे मासे इति वयम् वृन्दावनं गच्छामः। ....

3. प्रकृतिप्रत्ययोः विभागं संयोजनं वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(क) बलवान् = ... + ...

(ख) √पठ् + क्त्वा प्रत्ययः = ...

(ग) दानिन् = ... + ...

(घ) √त्यज् + तुमुन् प्रत्ययः = ...

(ङ) करणीयः = ... + ...

4. निम्नाङ्कितैः अव्ययपदैः वाक्यनिर्माणं कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(क) इतस्ततः = ...

(ख) मुहुर्मुहुः = ...

(ग) अपि = ...

(घ) तत्र = ...

(ङ) इव = ...

5. निम्नलिखितरिक्तस्थानानि वाच्यानुसारं पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(क) चित्रकारः .... (चित्र) अरचयत्।

(ख) छात्रेण ग्रन्थः .... । (√पठ्)

(ग) गायकः गीतम् .... । (√गै)

(घ) मया त्वम् .... । (√दृश्)

(ङ) भवान् कुत्र ....? (√गम्)

6. अङ्केन लिखितान् समयान् पदेन लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) 4.15 = ... वादनम्।

(ख) 9.00 = ... वादनम्।

(ग) 3.45 = ... वादनम्।   (घ) 1.30 = ... वादनम्।

(ङ) 12.00 = ... वादनम्।

7. निम्नाङ्कितवस्तूनि गणयित्वा कोष्ठकात् उचितपदं चित्वा संस्कृतेन लिखत। **1 × 5 = 5**

(क) पत्राणि .... (चत्वार:/चत्वारि)

(ख) क्रीडनकाणि .... (त्रीणि/त्रय:)

(ग) पुस्तकानि .... (चतस्र:/चत्वारि)

(घ) तारका: .... (विंशति:/एकोनविंशति:)

(ङ) मोदकानि .... (पञ्चदश/षोडश)

8. रञ्जितपदे अशुद्धिशोधनम् कृत्वा वाक्यानि पुन: लिखत। **1 × 5 = 5**

(क) मम भ्रातु: विवाह: श्व: एव अस्ति। ....

(ख) एषा राजस्य आज्ञा अस्ति। ....

(ग) नरा: उद्यानं व्यायामं कुर्वन्ति। ....

(घ) एषा अग्नि: किमर्थम् ज्वलति? ....

(ङ) कक्षायाम् अलम् कोलाहलात्। ....

9. निम्नलिखितशब्दानाम् पर्यायमेकम् लिखत। **1 × 3 = 3**

(क) तीक्ष्ण: ....   (ख) अजीर्णम् ....   (ग) आभरणम् ....

10. अधोलिखितानाम् विपर्ययमेकम् लिखत। **1 × 2 = 2**

(क) गत्वा ....   (ख) चेतन: ....

11. रूपाणि लिखित्वा उचितपदै: रिक्तस्थानानि पूरयत। **1 × 5 = 5**

(क) पक्ष्यति	....	पक्ष्यन्ति	(ख) लभसे	लभेथे	....	
(ग)	वर्धावहे	वर्धामहे	(घ)	मुनिभ्याम्	मुनिभि:	
(ङ) मात्रे	मातृभ्याम्	....				

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत। **10**

पुरा दुष्यन्तस्य पुत्र: भरत: नाम महान् प्रतापी राजा आसीत्। तस्य नाम्ना एव अस्माकं देशस्य नाम भारतम् इति अभवत्। भारतम् अस्माकम् मातृभूमि: अस्ति। भारतम् अस्माकम् प्राणै: अपि प्रियतरम्। वयम् अत्र वसाम: खादाम: जीवनस्य च सर्वम् सुखम् च प्राप्नुम:। अस्य प्राचीनं नाम आर्यावर्त: आसीत्। हिन्दूनां स्थानेन हिन्दुस्थानम् पुन: हिन्दुस्तान तथा भारतवर्षम् अपि कथ्यते। अस्य संस्कृति: अति प्राचीना अस्ति।

I. एकपदेन उत्तरत। ½ × 4 = 2

(क) राजा दुष्यन्तस्य पुत्रः कः आसीत्? ....

(ख) भरतः कीदृशः राजा आसीत्? ....

(ग) कस्य नाम्ना अस्माकं देशस्य नाम भारतम् इति? ....

(घ) भारतम् अस्माकम् कैः अपि प्रियतरम्? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। 2 × 2 = 4

(क) वयम् भारते किम् प्राप्नुमः?

....

(ख) भारतस्य संस्कृतिः कीदृशी अस्ति?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत। ½ × 4 = 2

(क) अनुच्छेदे महान् विशेषणस्य विशेष्यं किम् अस्ति?

(*i*) पुत्रः (*ii*) भरतः (*iii*) प्रतापी (*iv*) राजा ....

(ख) खादामः क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

(*i*) अहम् (*ii*) त्वम् (*iii*) यूयम् (*iv*) वयम् ....

(ग) प्राणै इति पदे का विभक्तिः अस्ति?

(*i*) प्रथमा (*ii*) द्वितीया (*iii*) तृतीया (*iv*) चतुर्थी ....

(घ) नाम इति शब्दस्य लिङ्गम् किम्?

(*i*) पुंल्लिङ्गम् (*ii*) स्त्रीलिङ्गम् (*iii*) नपुंसकलिङ्गम् ....

IV. गद्यांशस्य कृते उचितं शीर्षकं लिखत। 2 × 1 = 2

....

13. मञ्जूषातः पदानि विचित्य अधोलिखितानि पत्राणि पूरयत। 1 × 5 = 5

स्वअध्ययनस्य प्रगतेः विषये अग्रजम् प्रति पत्रम् पूरयत।

वसन्तकुञ्जनगरम्

(*i*)..........

29.10.20XX

पूज्य भ्रातः,

(*ii*).......... ।

अत्र कुशलम् तत्र अस्तु। अहम् (*iii*).......... प्रगतिविषये किञ्चित् लिखितुम् इच्छामि। अधुना मम शिक्षणम् तु (*iv*).......... आरब्धम्। अहम् (*v*).......... प्रातः सार्धचतुर्वादने उत्तिष्ठामि। षड्वादनपर्यन्तम् पठितानाम् (*vi*).......... आवृत्तिं करोमि। सार्धषड्वादने विद्यालयं गमनाय तत्परः (*vii*).......... । विद्यालयात्

आगत्य अहम् सायंकाले गणितस्य (*viii*).................. करोमि। अतएव अधुना गणिते मम दुर्बलता दूरीभूता। संस्कृतविषयेऽपि अहम् प्रथमम् (*ix*).................. प्राप्तवान्। पितृभ्याम् मम प्रणामाः।

(*x*).................. अनुजः

राजेशः

सादरं नमस्कारः, नियमेन, भवामि, भवदीयः, पाठानाम्,
अभ्यासम्, स्थानम्, नवदेहली, स्वाध्ययनस्य, प्रतिदिनम्

14. निम्नचित्रस्य वर्णनं मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्येषु कुरुत। **1 × 5 = 5**

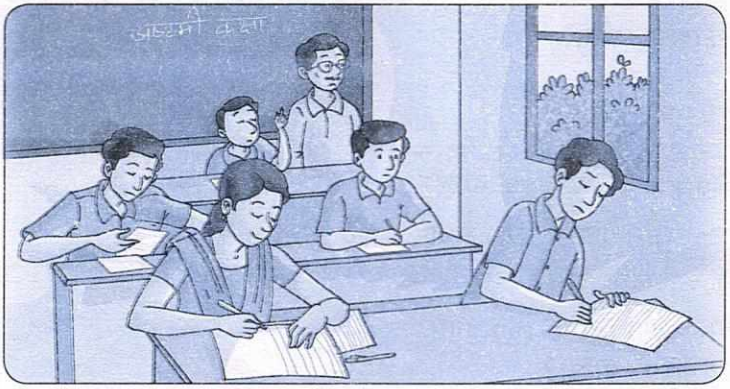

छात्राः, परीक्षानाम्,
परीक्षाभवनं, ससंशयाः,
लिखन्ति, निरीक्षकः, केचन्,
प्रश्नं, चिन्तितः, प्रसन्नः,
परस्परं, एका बाला

....

....

....

....

....

15. अधोलिखितान् संवादान् मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दैः पूरयन्तु। **1 × 5 = 5**

द्रोणाचार्यः वृक्षे कृत्रिमखगम् स्थापयित्वा परीक्षितुम् युधिष्ठिरम् कर्तृवाच्ये प्रश्नं पृच्छति। युधिष्ठिरः च कर्मवाच्ये उत्तराणि यच्छति। वाच्यानुसारम् संवादे रिक्तस्थानानि पूरयत।

द्रोणाचार्यः – भो युधिष्ठिर! (*i*).................. कः तिष्ठति?

युधिष्ठिरः – आचार्य, वृक्षे एकेन (*ii*).................. स्थीयते।

द्रोणाचार्यः – त्वम् अन्यत् किं पश्यसि?

युधिष्ठिरः – मया वृक्षः अपि (*iii*)..................?

द्रोणाचार्यः – किम् (*iv*).................. माम् अपि पश्यसि?

युधिष्ठिरः – आम् (*v*).................. भवान् अपि अवलोक्यते।

द्रोणाचार्यः – त्वम् कस्य लक्ष्यस्य वेधं कर्तुम् (*vi*)..................?

दृश्यते, मया, वृक्षे, इच्छसि, खगेन, त्वम्

अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2

अवधिः–होराद्वयम् | पूर्णाङ्काः–75

1. अधोलिखितेषु सन्धिम् सन्धिच्छेदम् वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(क) मम् विद्यालये वार्षिक + उत्सवः अभवत्। ....

(ख) इदम् उन्नतम् भो + अनम् पश्य। ....

(ग) वृक्षाः परोपकाराय एव फलन्ति। ....

(घ) स्वच्छन्दाः खगाः उड्डयन्ति। ....

(ङ) त्वम् ईश्वरस्य परम भक्तोऽसि। ....

2. यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) √नम्–लृट्लकारे मध्यमपुरुषः (एकवचने) ....

(ख) √लभ्–लोट्लकारे प्रथमपुरुषः (बहुवचने) ....

(ग) √पा–लङ्लकारे उत्तमपुरुषः (द्विवचने) ....

(घ) गुरु शब्द षष्ठीविभक्तेः (द्विवचने) ....

(ङ) नदी शब्द सप्तमीविभक्तिः (बहुवचने) ....

3. निम्नलिखितेषु समासं समासविग्रहं वा कृत्वा समासनामानि लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) अनुरथम् ....

(ख) वारिदः ....

(ग) महानचासौ आत्मा ....

(घ) रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः ....

(ङ) नीलकमलम् ....

4. निम्नलिखितेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं संयोजनं वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(क) हनुमान् .... + ...

(ख) गतः .... + ...

(ग) √नम् + क्त्वा ....

(घ) √कृ + तुमुन् ....

(ङ) पठनीयः .... + ...

5. मञ्जूषातः उचितं अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(क) .... सोमवारः अस्ति।

(ख) .... भौमवासरः भविष्यति।

(ग) परश्वः .... बुधवासरः भविष्यति।

(घ) हरिम् .... मम कः सहायकः भविष्यति।

(ङ) कक्षायाम् .... मा वद।

च, उच्चैः, अद्य, विना, श्वः

6. निम्नलिखितकर्तृवाच्ये कर्मवाच्ये च उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

कर्तृवाच्यः	कर्मवाच्यः
(क) ऋषिः .... रचयति।	.... ग्रन्थः रचयते।
(ख) ते तु .... गच्छन्ति।	.... तु विद्यालयं गम्यते।
(ग) .... बीजानि वपन्ति।	कृषकैः .... वप्यन्ते।
(घ) .... दुष्ट कसाबः अपि पश्चात्तापं करोति।	न्यायालये .... अपि पश्चातापः क्रियते।
(ङ) .... याचकाय धनम् यच्छति।	धनिकेन याचकाय धनम् .... ।

7. कोष्ठकेप्रदत्तं समयम् रिक्तस्थानेषु संस्कृतपदेन लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) प्रभाते (6.00) .... एकः अतिथिः मम गृहे आगच्छति।

(ख) जलम् पीत्वा (6.30) .... वादने सः स्नानं करोति।

(ग) (6.45) .... वादने सः मया सह प्रातराशम् करोति।

(घ) सः मम जनकेन सह (7.15) .... वादने वार्त्ताम् करोति।

(ङ) सः भोजनम् कृत्वा मध्याह्ने (2.00) .... वादने कालिदासस्य अभिज्ञान-शाकुन्तलम् नाटकम् पठति।

8. यथोचितसंख्यावाचिपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(क) भगवतः शिवस्य (3) .... नेत्राणि सन्ति।

(ख) महाकविभासस्य (13) .... ग्रन्थाः प्राप्ताः सन्ति।

(ग) तव समीपे (9) .... रुप्यकाणि सन्ति।

(घ) मम समीपे (1) .... स्वर्णमुद्रा अस्ति।

(ङ) (4) .... बालिकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

9. निम्नलिखितपदानाम् विपर्ययमेकम् लिखत। $1 \times 3 = 3$

(क) सरलः .... (ख) श्वेतः .... (ग) प्राचीना ....

10. निम्नलिखित पदानाम् पर्यायम् एकम् लिखत। $1 \times 2 = 2$

(क) कुञ्जरः .... (ख) गुहा ....

11. निम्नलिखितवाक्येषु रञ्जितपदानाम् अशुद्धिशोधनम् कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत। $1 \times 5 = 5$

(क) तव **पत्रः** मम समीपे अस्ति। ....

(ख) सः **मुनी** मूषकम् सिंहम् अकरोत्। ....

(ग) भवान् चायपानं **कुरु** । ....

(घ) एषः **कोकिला** गायति। ....

(ङ) **माम्** संस्कृतपठनम् रोचते। ....

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत। **10**

एक: भिक्षुक: भिक्षाटनाय ग्रामात् ग्रामं गच्छति स्म। स: सदा भिक्षां प्राप्त्वा सन्तुष्ट: च भूत्वा ईश्वरस्य धन्यवाद: करोति स्म। ईश्वरस्य भजनं कृत्वा सुखेन रात्रौ स्वपिति स्म। एकदा स: भिक्षार्थाय एकस्मिन् ग्रामे अगच्छत्। कस्यचित् धनिकस्य गृहात् बहि: स्थित: भिक्षुक: श्रुतवान्–''देव! मह्यम् पुत्रम् ददातु।''' अहो! अयम् तु स्वयम् एव याचक:' इति चिन्तयित्वा भिक्षुक: अग्रे प्रस्थित:। अन्यस्मिन् गृहे एक: व्यापारी प्रार्थयते स्म–'भगवति! मम व्यापारे लाभ: भवतु।' भिक्षुक: चिन्तितवान्–'अरे। एते तु महत्तरां भिक्षाम् याचन्ते। अहं तु केवलं भोजनं याचे। अहम् एव भाग्यवान् यत: अहं सन्तुष्ट: अस्मि।'

I. एकपदेन उत्तरत। **½ × 4 = 2**

(क) भिक्षुक: किं याचते स्म? ....

(ख) भगवतीं क: प्रार्थयते स्म? ....

(ग) अहम् एव भाग्यवान् इति क: चिन्तयति? ....

(घ) 'अयम् तु स्वयमेव याचक:' इति चिन्तयित्वा भिक्षुक: कुत्र प्रस्थित:? ....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। **2 × 2 = 4**

(क) भिक्षुक: आत्मानम् भाग्यवान् इति कथं मन्यते?

....

(ख) व्यापारी किम् प्रार्थयते स्म?

....

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत। **½ × 4 = 2**

(क) भिक्षाम् इत्यस्य विशेषणपदम् किम्?

(i) एते *(ii)* तु *(iii)* महत्तरां *(iv)* किमपि ....

(ख) 'देव! मह्यम् पुत्रं ददातु' अत्र मह्यम् इति सर्वनामपदम् कस्मै प्रयुक्तम् अस्ति?

(i) भिक्षुकाय *(ii)* धनिकाय *(iii)* ईश्वराय *(iv)* पुत्राय ....

(ग) अनुच्छेदे अस्मि क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?

(i) ते *(ii)* एते *(iii)* त्वम् *(iv)* अहम् ....

(घ) 'एते तु महत्तरां भिक्षाम् याचन्ते।' अस्मिन् वाक्ये अव्यय: क:?

(i) एते *(ii)* तु *(iii)* याचन्ते *(iv)* भिक्षाम् ....

IV. अनुच्छेदस्य कृते एकम् शीर्षकम् लिखत। **2 × 1 = 2**

....

13. मञ्जूषात: पदानि विचित्य अधोलिखितं पत्रं पूरयत। **1 × 5 = 5**

स्वविद्यालये आयोजितम् रक्तदानशिविरे रक्तदानस्य विषये स्वपितरं प्रति पत्रं पूरयत।

मानवस्थली छात्रावास:,
वीरेन्द्रग्राम:
तिथि: 27.05.20XX
पूज्य पितृमहोदय,
चरणवन्दना।

अहम् भवन्तम् सविनयम् निवेदयामि यत् (*i*) .... विद्यालये ह्य: रक्तदानशिविरम् आयोजितम्। अस्माकम् (*ii*) .... महोदय: अत्र मुख्यातिथि: आसीत्। सर्वप्रथमम् स: एव (*iii*) .... अकरोत्। तदा (*iv*) .... कृत्वा सर्वे अध्यापका: रक्तदानम् अकुर्वन्। सर्वे (*v*) .... अपि एतस्मिन् (*vi*) .... अग्रे आसन्। मम (*vii*) .... अपि रक्तदानस्य भावना (*viii*) .... अभवत्। अहम् स्वमित्रेण सह (*ix*) .... अयच्छम्। आशासे यत् भवान् मम भावनां (*x*) .... प्रसन्न: भविष्यति।

भवदीय: पुत्र:

अनूप:

उत्पन्ना, ज्ञात्वा, मनसि, शुभकार्ये, निदेशक:, रक्तदानम्, एकैकम्, छात्रा:, अस्माकम्, स्वरक्तम्

14. निम्नचित्रस्य वर्णनम् मञ्जूषा प्रदत्तशब्दानाम् सहायतया पञ्चवाक्येषु कुरुत। **1 × 5 = 5**

पर्वतीयम्, प्रदेशम्, रमणीयम्, खगा:, उन्नतानि, शिखराणि, सरोवर:, तरति, नौका, जना:, प्रसीदन्ति, उड्डयन्ति

....

....

....

....

....

15. अधोलिखितान् संवादान् मञ्जूषायां प्रदत्ततशब्दै: पूरयत। **1 × 5 = 5**

मयूर: – हे पिक! तव स्वरम् तु अतीव (*i*) .... अस्ति।

पिक: – जानामि, जानामि परं मम समीपे तु (*ii*) .... पक्षा: न सन्ति। पश्य उलूकम्। अस्य दर्शनम् एव (*iii*) .... भवति।

उलूक: – शृणुत (*iv*) .... मंगलम् स्वरम्। अहम् मन्ये (*v*) .... मम गृहे क: अपि आगमिष्यति।

शुभम्, अद्य, मधुरम्, विविधवर्णा:, काकस्य